The Rajiv Gandhi University Bill, 2006

THE MINISTER OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT (SHRI ARJUN SINGH): Sir, I beg to move for leave to introduce a Bill to establish and incorporate a teaching and affiliating University in the State of Arunachal Pradesh and to provide for matters connected therewith or incidental thereto.

The question was put and the motion was adopted.

SHRI ARJUN SINGH: Sir, I introduce the Bill.

The Constitution (Scheduled Tribes) Order Amendment Bill, 2006

THE MINISTER OF TRIBAL AFFAIRS (SHRI P.R. KYNDIAH): Sir, I beg to move for leave to introduce a Bill further to amend the Constitution (Scheduled Tribes) Order, 1950 to modify the list of Scheduled Tribes in the State of Bihar.

The question was put and the motion was adopted.

SHRI P.R. KYNDIAH: Sir, I introduce the Bill.

SHORT DURATION DISCUSSION

The increasing incidents of Terrorist Violence in the Country, particularly in the Context of Recent Bomb Blasts in Mumbai— (contd.)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, the Short Duration Discussion on the increasing incidents of terrorist violence in the country, particularly in the context of recent bomb blasts in Mumbai raised by Shri Manohar Joshi on 26th July 2006. When the House adjourned on 27th July 2006, Shri Rajeev Shukla had not concluded his speech. Mr. Rajeev Shukla.

श्री राजीव शुक्ल (महाराष्ट्र): मान्यवर, दो बार से मेरी कुछ टिप्पणियों पर सदन स्थगित हो रहा है। मैं स्पष्ट करना चाहता हूं कि मैंने किसी भी व्यक्ति पर कोई आरोप नहीं लगाए, न किसी का नाम लिया और न मेरा किसी पर आरोप लगाने का कोई उद्देश्य था। मैं तो सिर्फ कुछ प्रश्न पूछ रहा था। इसलिए उनको आरोपों के रूप में न देखा जाए, यही मेरा हमारे सामने बैठे मित्रों से निवेदन है।

श्री उपसभापति: आप विदड्रॉ कर लीजिए।

एक माननीय सदस्य: आप विदड्रॉ कर लीजिए। ..(व्यवधान)..

श्री राजीव शुक्ल: मान्यवर, वही बात हुई। ..(व्यवधान).. बात तो वही हो गयी। ..(व्यवधान).. जब किसी के ऊपर कोई आरोप ही नहीं है, किसी का नाम ही नहीं लिया है तो ..(व्यवधान)..

SHRI V. NARAYANASAMY (Pondicherry): Sir, ...(*Interruptions*)..

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Narayanasamy, please. (*Interruptions*).

श्री राजीव शुक्ल: जब कोई आरोप नहीं है, किसी का नाम नहीं लिया है, सिर्फ सवाल पूछे हैं ..(व्यवधान)..

SHRI S.S. AHLUWALIA (Jharkhand): Sir he is doing it deliberately. (*Interruptions)* Sir, again and again, he is doing it deliberately. (*Interruptions*).

श्री राजीव शुक्ल: इसमें क्या डेलीब्रेटली है?

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया: फिर आप विदड्रॉ क्यों नहीं कर रहे? ..(व्यवधान)..अगर आपकी मंशा नहीं है..(व्यवधान)..

श्री उपसभापति: करेंगे, करेंगे। ..(व्यवधान)..

श्री राजीव शुक्ल: भाषा तो आप तय मत करिए।..(व्यवधान).. भाषा तय करने का अधिकार तो हम पर छोड़िए।..(व्यवधान)..

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया: भाषा को तय करने की बात नहीं है, पर इर्रेलेवेंट क्यों बोलेंगे, सदन में? ..(व्यवधान)..

श्री राजीव शुक्ल: बाकी लोगों को कोई आपत्ति नहीं है तो आप क्यों आपत्ति कर रहे हैं? (व्यवधान)..

श्री उपसभापति: अहलुवालिया जी, रहने दीजिए..(व्यवधान)..

श्री राजीव शुक्ल: जब बाकी लोगों को कोई आपत्ति नहीं है..(व्यवधान)..

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please, discuss the Bombay bomb blasts.

श्री राजीव शुक्ल: उसी पर मैं अपना भाषण आगे बढ़ा रहा हूं। माननीय डा॰ जोशी जी ने पाकिस्तान कल्चर की बात की।..(व्यवधान)..

श्री उपसभापतिः आप विदड्रॉ कर लीजिए न उसे।..(व्यवधान)..

श्री राजीव शुक्लः सर बात तो हो गयी, वह स्पष्ट हो गया है। ..(व्यवधान)..

श्री रवि शंकर प्रसाद (बिहार): आप विदड्रा करिए।...(व्यवधान)... मैं माननीय सदस्य से आग्रह करूंगा कि भाषण दें लेकिन भाषण में ...(व्यवधान)... कोई तरीका नहीं है। ...(व्यवधान)...

श्री राजीव शुक्लाः मैंने कह दिया न कि सवाल पूछने का अधिकार है...(व्यवधान)...

SHRI SANTOSH BAGRODIA (Rajasthan): When there is nothing ..(*Interruptions*)

SHRI V. NARAYANASAMY: Sir, even Leader of the Opposition himself has said that he is prepared to discuss..(*Interruptions*)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Narayanasamy, please. (*Interruptions*)

श्री प्यारे लाल खंडेलवाल (मध्य प्रदेश): जब आसंदी से कहा जा रहा है कि विदड्रॉ कर लीजिए तो विदड्रॉ करिए आप। ..(व्यवधान)..

श्री उपसभापतिः आप बैठिए। आप सब लोग बैठिए।...(व्यवधान) Please, in the interest of running the House. (*Interruptions*)... We are discussing a very important issue. A discussion in the Chairman's Chamber also took place. We have to honour those things. Whoever it is? Whatever discussions we take up, in the interest of running the House properly...(*Interruptions*)... Please, please, यह सबके लिए है, किसी एक के लिए नहीं है। इसलिए जो भी वहां पर हम बातचीत करके आए हैं, I would request the hon. Members that let us run the House. It's being adjourned like this for the past two days. If you feel that, it should be done..(*Interruptions*)...

श्री राजीव शुक्लः सर, वही तो मैं कह रहा हूं। इससे ज्यादा स्पष्ट शब्दों में और क्या हो सकता है? ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापतिः नहीं, नहीं, शुक्ल जी, एक text तैयार हुआ था, I feel, on that basis, if you could do it, it will help me to run the House.

श्री राजीव शुक्लः सर, मैं वही बोल रहा हूं कि मेरा किसी के ऊपर कोई आरोप लगाने का मकसद नहीं था। ये कहते हैं, नेता विपक्ष का तो मैंने नाम भी नहीं लिया था। मैंने सिर्फ "उन लोगों" कहा था, किसी व्यक्ति का नाम नहीं था और उसी आधार पर मैं कह रहा हूं कि मेरा

आरोप लगाने का न कोई उद्देश्य था, न कोई इरादा और उसको आरोप नहीं समझा जाना चाहिए, यह निवेदन है।

श्री उपसभापति: अगर वह आरोप है, तो उसको आप विदड्रॉ कर लीजिए। ...(**व्यवधान**)...

मौलाना ओबैदुल्लाह खान आज़मी (मध्य प्रदेश): वे कह रहे हैं कि आरोप नहीं है, तो क्या विदड्रॉ करेंगे?

†[**مولانا عبیداللہ خان اعظمی** : وہ کہہ رہے ہیں کہ آروپ نہیں ہے، تو کیا وِدڈرا کریں گے۔]

श्री राजीव शुक्ल: जब आरोप ही नहीं है, तो विदड्रॉ क्या करे?

श्री उपसभापति: आप आरोप नहीं समझते हैं, लेकिन वे उसे आरोप समझते हैं और अगर वे समझते हैं, तो विदड्रॉ कर लीजिए। ...(**व्यवधान**)... प्लीज...(**व्यवधान**)...

श्री राजीव शुक्ल: अगर आपको लगता है कि इससे किसी की भावना को चोट पहुंची है, तो ठीक है, मैं वापस लेता हूं।

श्री उपसभापति: अब आप शुरू कीजिए। आप ज़रा....आप ज़रा...(**व्यवधान**)...

श्री राजीव शुक्ल: अब मेरा एक मिनट का भाषण तो रह गया है?

श्री उपसभापति: आप एक मिनट भाषण कर लीजिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री राजीव शुक्ल: सिर्फ आखिरी प्वाइंट रह गया था। आखिरी प्वाइंट था भाषण का ...(**व्यवधान**)... कनक्लूड तो कर लूं मैं?

श्री उपसभापति: मगर ज़रा ख्याल रखिए...ख्याल रखिए कि हाऊस कहीं ऐडजॉर्न न हो जाए।

श्री राजीव शुक्ल: सर मैं कनक्लूड कर लूं। मेरा फाइनल प्वाइंट है। एक आरोप डा॰ मुरली मनोहर जोशी ने सरकार पर लगाया और वह आरोप यह लगाया कि हम लोग पाकिस्तानी कल्चर पैदा कर रहे हैं। ...(**व्यवधान**)...

डा॰ मुरली मनोहर जाशी (उत्तर प्रदेश): आप मेरे ऊपर कोई आरोप लगा रहे हैं?

श्री राजीव शुक्ल: नहीं, नहीं, आपके आरोप का उत्तर दे रहा हूं। हम पाकिस्तानी कल्चर पैदा कर रहे हैं, ऐसा आरोप डा॰ जोशी ने हम लोगों पर लगाया। मान्यवर, मेरा कहना है कि पाकिस्तानी कल्चर पैदा करने का प्रश्न ही नहीं उठता है। हम पर तो यह आरोप है कि हमने

†[ ]Transliteration in Urdu Script

बंगलादेश बनवाया, पाकिस्तानी कल्चर पैदा करने का आरोप उन्होंने कैसे लगा दिया? हमारे ज़माने में आई॰एस॰आई॰ की गतिविधियां कभी इतनी तेज़ नहीं थीं, जितनी एन॰डी॰ए॰ के छः साल के दौरान हुई। ...(**व्यवधान**)... और उसके साथ, मैं तो यह कहता हूं कि जिन्ना को खुदा या भगवान हमने नहीं माना, सेक्युलरिज्म का सर्टिफिकेट तो उधर से दिया गया। ...(**व्यवधान**)...

श्री शरद यादव (बिहार): उपसभापति जी, यह पाकिस्तानी कल्चर क्या चीज़ है, थोड़ा इसको डिफाइन कीजिए कि यह क्या है? ...(**व्यवधान**)...

श्री राजीव शुक्ल: यह तो जोशी जी के ऊपर है। पाकिस्तानी कल्चर की बात तो उन्होंने कही।

श्री उपसभापति: प्लीज़ कनक्लूड। ...(**व्यवधान**)...

श्री राजीव शुक्ल: वह जोशी जी बताएंगे।

श्री उपसभापति: आपने पहले ही पूरा समय इस्तेमान कर लिया है, प्लीज़ कनक्लूड ... (**व्यवधान**)...

श्री राजीव शुक्ल: सर, हमने तो जिन्ना को सेक्युलरिज्म का सर्टिफिकेट नहीं दिया। आई॰एस॰आई॰ के ऊपर व्हाइट पेपर आने वाला था, वह नहीं आया। ...(**व्यवधान**)...

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया: सर मुम्बई ब्लास्ट्स पर चर्चा हो रही है क्या?

श्री उपसभापति: मैं उनको कनक्लूड करने के लिए कह रहा हूं, आप बैठिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया: नहीं, नहीं, अगर गृह मंत्री जी ने जोशी जी का जवाब नहीं देना है, तो जवाब इन्होंने देना है क्या? ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: वे कनक्लूड कर रहे हैं, आप बैठिए। ...(**व्यवधान**)... शुक्ल जी, आप कनक्लूड कीजिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री राजीव शुक्ल: मीनारे-पाकिस्तान के नीचे जाकर हमने तो तसदीक नहीं की मुल्क बनाने की! दस्तखत करके किसने तसदीक किया? ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: आप कनक्लूड कीजिए।

श्री राजीव शुक्ल: इसलिए पाकिस्तानी कल्चर का आरोप हम अपने ऊपर लगाने के बजाय

इनके ऊपर लगाते हैं। यहां हम इनके ऊपर आरोप लगाते हैं कि पाकिस्तानी कल्चर इन्होंने डेवलप किया, हमने डेवलप नहीं किया। इसी बात के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Dr. P.C. Alexander.

DR. P.C. ALEXANDER (Maharashtra): Sir, I feel happy that, at least, after four or five attempts to make a speech on the subject, I have been able to secure time to do so today. Several speakers have, while making their observations, referred to the general problem of increasing terrorism in our country. Today, I intend to use the time that you have allotted to me to focus the attention of this House to the specific problem which the city of Mumbai faces, and to make a few suggestions as what the Central Government can do to ensure that when calamities like these occur again, they quickly tackle them effectively. Every time, a calamity happens in the city, the whole nation feels about it, expresses sympathy for the people of Mumbai, who have suffered on account of the calamity, and also expresses their appreciation of the manner in which the people of Mumbai have been able to cope with the calamity. But, after this expression of sympathy and appreciation, nothing else follows by way of concrete assistance to the people of Mumbai; nothing new happens by way of giving grants or financial support to the Government of Maharashtra, and that is why, I wish to say that whatever happen in Mumbai, should be viewed as a problem by itself, and not a common problem of other cities as well. In fact, what I want to bring to the attention of this House, is that Mumbai has a special set of problems which, the nation as a whole should understand, with great sympathy. In the first place, we should remember that Mumbai is the most attacked city in our country. No city in this country has been attacked so many times by criminals, by extortionists, by underworld dons, by mafia groups and by terrorists, as Mumbai has been attacked. I also want to remind the hon. House that after the very first terrorist attack on Mumbai through the serial bomb blasts in February 1993, five such attacks have taken place before the 11th July attack, and therefore, Mumbai has been the victim of attacks over a period of time, and it looks as if it has no respite from terrorists attack today. I wish to highlight certain issues, which make me feel to make this appeal to this House, and to the Home Minister, to treat the case of Mumbai as different from, as distinct from, the case of other cities, "which would also have suffered

from these things. I am saying not merely because of the economic power that Mumbai has been wielding, or the fact that it is the economic powerhouse of the country. It is a fact that this one city contributes over 60,000 dollars to the national exchequer a year, but, I am not basing my arguments because of that economic might of this city. This city has other special negative features, which have to be accepted as very important in considering my suggestions for meeting them. Sir, this city has a population of 17 million people, according to the Census. But a few more millions account for what is known as the floating population of Mumbai. You will be astonished to know that the density of population of Mumbai City is 30,000 per square km., not 30,000 per square mile, without taking into account the floating popualtion. Every day almost 7.5 million people come to Mumbai by train alone. No other city in our country has faced this type of problem or is likely to face. In addition to the general population of the city, 7 to 7.5 million people visit the city every day. Fifty-two per cent of the people of Mumbai live in the most dehumanising conditions in what we call slums. But they are veritable hellholes. And that too, 52 per cent of the total population which has been counted in this Census, about seven to nine per cent of the people live on the footpaths of the city, in addition to the 52 per cent who live in, the slums.

Further, this is a city which has a vast coastline which is very poorly defended. A lot of troubles have arisen because of the fact that this coastline has been very poorly monitored. There are four main stages in the deterioration of Mumbai's strength and in reducing it to a city of the greatest weakness or the greatest position or the biggest position of being the recipient of attack on forage. This I have to mention particularly because no other city in the world has undergone this type of bitter experience. The first stage was when we had the uncontrolled state of smuggling activities organised by notorious gangs under the leadership of people like Haji Mastan, Vardharaja Mudaliar, Yusuf Patel and others. This is the first stage. That happened in the sixties and seventies. But this led to the next stage, and that was the formation of powerful underworld gangs. And there, you find, smuggling activities and narcotic activities of the earlier stage, and adding to that, new crimes like extortion, supari killing, settlement of tenancy disputes. This period witnessed the

rise of notorious gangsters like Dawood Ibrahim, Chhota Rajan, Arun Gawli and others.

The third stage of the deterioration of Mumbai's vulnerability was when communalism was injected to the activities of gangsters. During the first three stages, Communal caste factors were not involved. But in the third stage, you find the injection of communalism, and they started exploiting the communal weaknesses of one small section of a large number of Muslim community and made them tools to carry out their activities while they remained conveniently in the safe havens of Karachi or in the Middle East. And what happened on 11th July was the fourth stage, *i.e.* the introduction of terrorism. So, Mumbai has now to face not only terrorism but all the three other dangers of the preceding stages. And that is the special problem of Mumbai today or the special cause of its vulnerability.

Now, how do we tackle it? We expect the State Government to be the main agency for tackling it. We have just 40,000 people in the entire police force which is supposed to be protecting the city of Mumbai and dealing with all the crimes that I have mentioned. You would be seeing the pictures, the photographs of these people. These people with nothing more than a *lathi* in their hands are asked to do hundreds of tasks, protection of VIPs, taking care of petty thefts making sure that public meetings are not disturbed, serving warrants, what not, and, finally, when a calamity of this kind happens, and when it is caused by people who are having most sophisticated weapons of mass destruction in their hands, and are using dangerous materials like RDX and all that, we have the small police force to deal with it. I want to bring to the notice of the Home Minister specifically that the Police Department in Mumbai, under the instructions of the State Government, had prepared a scheme costing Rs. 300 crores to tackle the menace of terrorism that was expected to strike the city. At that time, 11th July had not taken place. This estimate of Rs.300 crores was made last year. Actually, the first estimate was for a much higher amount, But the State Government itself had reduced it to Rs. 300 crores. But the Home Department and the agencies responsible for recommending this met the people in the Police Department and the Home department in Mumbai and they almost forced them to reduce the estimate from Rs.300 crores to Rs.130 crores or Rs.140 crores. My first request to the hon. Home Minister is....

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI SHIVRAJ V. PATIL): May I ask whether it was a demand for the money or it was a plan prepared and sent to the Government?

DR. P.C. ALEXANDER: It was a plan prepared with details as to what would be done using this money such as acquisition of sophisticated weapons, creation of new police forces, improvement of the facilities available with the Police Department and the State Government for communication, intelligence gathering, counter-intelligence measures,...

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: I think we shall have to check it.

DR. P.C. ALEXANDER: ... all these measures were taken into account and it was considered that the barest minimum requirement would be Rs.300 crores. I am sorry to inform the House that out of Rs.130 crores which had been approved by the Centre, the actual amount released last year was only Rs.5 crores.

[THE VICE-CHAIRMAN (PROF.P.J. KURIEN) in the Chair].

What did the Police Department and the Government of Maharashtra do? It is not that the rest of it was not promised. The rest remained promised, but the release was only Rs.5 crores. I would first request the hon. Home Minister who is thoroughly familiar with the problems that I have mentioned—I have not exaggerated the problems...

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: I hope you will be in the House to hear my reply.

DR. P.C. ALEXANDER: I will come back after lunch to hear your reply. I have been waiting without lunch to speak. I would request that this amount of Rs.300 crores should be restored. Let us not say that we have other States or other cities also to take into account. I would say, apart from granting this Rs.300 crores as an immediate measure, strengthen the Anti-Terrorist Squad in Mumbai. Sir, you will be surprised to know that the Anti-Terrorist Squad which succeeded in arresting a few people already—all credit to them—consists of only 25 people today. You expect a small squad of 25 people to deliver goods or to achieve remarkable success in their work? This squad should be strengthened adequately at the officer level land at the junior levels. These are immediate measures. I would suggest as an immediate measure, right

now itself—it is urgent—we have to establish or create facilities for close circuit cameras in all vulnerable points starting with the Gate Way of India. This should be acquired at the quickest possible time. Again, as an urgent step, certain measures which have been followed in the United States after the New York incident and in London should be straightway introduced in Mumbai for checking the vehicles which come to the city. Today they are not able to check unless they stop the vehicles. For commercial purposes people do that type of checking for evasion of taxes and all that. In the western countries, particularly, in the United States and London, the police have acquired the latest facilities for checking. I have been told in a matter of one minute or two minutes, a lorry can be checked electronically and they can identify whether that lorry is carrying a weapon or even a criminal along with the goods. These are the most important things which have to be introudced straightway. I would also say that along with that, a Special Task Force under the leadership of the Home Ministry should be established to make recommendations for long-term measures which are required for the city of Mumbai. These long-term measures should deal with the problems like decongestion of the city by transferring certain offices which are located in the city to other cities or towns of Maharashtra; handling the problem of slums etc. If you cannot remove all the slums handle the problem of slum improvement in certain places and slum removal in certain other places and prevention of new slums should come into existence. All these are long-term measures; better coordination with the Railways; closer coordination with the Coast Guard. So, a multi-disciplinary task force has to be established. If these things are not handled at your level—what can be done immediately; what can be done in the long-term—the Mumbai city will deteriorate. A familiar saying is that 'crying baby gets the milk'. This baby—Mumbai—has been crying for nearly 25—30 years now. If it is not immediately given what I have suggested, this crying baby may become a dying baby. It will not be a misfortune only for the people of Mumbai; it will be a misfortune for the entire nation. I wish to conclude by saying what an illustrious Economist, Harry Johnson said when he started a speech on India. He said, "A country like India..." Then he suddenly stopped and asked "How can there be another country like India? It has its won intensity of problems; it has its own intensity of greatness." In the same way, I will say "a city like Mumbai" should not be a phrase in your vocabulary because there

is no city like Mumbai in our country. Treat it as separate. Give it something more than what you think should be given based on the fact that it is one of the cities. Treat it on two plains 'immediate action', 'long range action'. I know that the Home Minister is very sympathetic to the problems of Mumbai. I can only hope that the Finance Minister and the Prime Minister will consider it necessary to deal with Mumbai's problems, not when a calamity like 11/7 takes place, but with the utmost urgency and strengthen the hands of the Home Minister himself to deal with the problem with the urgency that I have explained to you. Thank you.

DR. K. MALAISAMY (Tamil Nadu): Mr. Vice-Chairman, Sir, I thank you for giving me this opportunity to speak on this subject which could not blast continuously in this House; but could blast intermittently. 'It is better late than never'. I have been listening to the discussion held on the subject by my colleagues on earlier days and I was listening to Dr. Alexander also. It is very much disturbing to note the size and magnitude of the tragedy swallowing more than 200 human lives and injuring more than 700 persons, besides extensive damages and losses. I am unable to understand why Mumbai has been fixed as target again and again. Is it due to the fact that Mumbai happens to be one of the dynamic cities of the world? Or, is it due to the fact that Mumbai is India's commercial and entertainment capital? Or, is it due to the fact that in terms of economic power and in terms of affluence, it is almost comparable to New York? Or, is it due to the accumulative effect of all these factors that terrorists happen to have an eye on Mumbai? Whatever may be the reason, a couple of days after the bomb blasts in Mumbai, as Members of the Parliamentary Committee, we had been to Mumbai. We had the first-hand information and knowledge of the whole tragedy and its aftermath. We were able to see that the city was still reeling in horror and shock; not only that, the panic waves were sweeping all over the city. We saw that people were still in deep anguish and agony, and they were still in a panic kind of a situation. Sir, this is the situation not just in Mumbai but also, in general, of the country as a whole. That is the most disturbing factor. The worrying factor is that such incidents are happening all over.

Sir, we learn lessons from events and experiences. But, unfortunately, we do not seem to have learnt lessons from the Mumbai blasts, because this was not the solitary instance. On the other hand,

it has experienced as many as eight bomb blasts, out of which five have been of major intensity. It is happening not only in Mumbai, but it is happening elsewhere also.

Our hon. Home Minister who is well-informed and well-equipped; might try to say, "Yes; you may say so many things. But the internal security and the law and order situation of the country as a whole is largely under control." He might also try to explain to us saying, "The situations in Jammu and Kashmir, North-Eastern States and in some of the Naxalite-prone States may cause concern to us. But, the incidents of violence and the number of killings as a whole are on the decline after the UPA Government has taken over." We may take all these statements in good spirit. It can give us a sigh of relief. But I have got my own doubts as to whether your measures, your initiatives and the steps taken by you are adequate, timely enough continuous and consistent. You have to ask this of yourself. Such incidents are repeatedly happening here and there. The whole country is restless; the whole country is perturbed. In such a situation, what do we do? If I may say so, there is something wrong somewhere. Mr. Narayanasamy will pounce on me if I use my management term that there is a system failure or a human failure or both. I want to know whether it is a system failure or a human failure or both. I need not be mistaken if I ask: Does this not warrant that you have an overview of the entire situation afresh and have an overall re-look in terms of your objectives, in terms of your organisation, in terms of your manpower, in terms of your operations, etc. According to me, you need a total overview of the entire situation.

Sir, I would quickly go into some of the aspects. We all know very well that the terrorists are based in Pakistan, Pakistan-Occupied-Kashmir and Bangladesh. Terrorism is sponsored from across the border, and these elements are assisted by the ISI. Every one of us know that the object of the ISI is to create uneasiness; they want to create dissatisfaction among the Indian nationals. Not only that, they want to destabilise the entire country. That is their objective, and they are ably assisted in this. The terrorists, who are on the job,are very smart, intelligent, well-trained and committed to their job. I am sorry to say that our security forces and other agencies cannot match them in terms of their intelligence, in terms of their action and in terms of their

commitment. What I am trying to say is that you make a swot analysis. When you say, "I am analysing my strengths; I am analysing my weaknesses; I am analysing my opportunities; I am analysing my threats", you analyse them only on one side, but you have to analyse the swot of the other side, of the opponents, the terrorists. Then only you will know how you can match them, where you are lacking, where you are strong and how can match them. This is my second point. Thirdly. Sir, the most worrying factor is the problem of terrorists are coming not only from across the border but the terrorists are also being bred within our own country. This is the most disturbing factor, Sir.

Sir, now I come to the remedial measures. As I said earlier, the Government needs a comprehensive outlook in dealing with this problem. Coming to the specific style of functioning...(*Interruptions*)... Sir, I am speaking on behalf on the AIADMK Party which is the fourth largest party in this House.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): I don't dispute that. ....(*Interruptions*)...

DR. K. MALAISAMY: The way the Chair was looking at me, I thought that I should speed up my presentation.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): I don't dispute that. But the only point is, there are 20 speakers.

DR. K. MALAISAMY: Okay; I will touch the main points.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Otherwise, your other friends will not get the time. That is all.

DR. K. MALAISAMY: Sir, coming to the specific style of functioning of the "great" UPA Government, I am told that the UPA Government in dealing with this problem is lacking political will and executing skill. Not only that, they lack....(*Interruptions)*... I am told...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Mr. Narayanasamy, this is his view. Why do you worry?

SHRI V. NARAYANASAMY: Sir, the next day, there was normal life in Mumbai. That is the political will of our Government. You should understand this. ...(*Interruptions*)... That is a different matter. But, he should not accuse like this.

DR. K. MALAISAMY: Mr. Narayanasamy, you should first listen and then react.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): That is only his view.

SHRI V. NARAYANASAMY: But, he should not accuse us unnecessarily. ...(*Interruptions*)... Without knowing the facts, he should not accuse anybody.

DR. K. MALAISAMY: Sir, I was so cautious in using my words. I said, 'I am told'.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Dr. Malaisamy, please address the Chair. ...(*Interruptions*)... Don't reply to him. If you do so, you will lose your time ...(*Interruptions*)...

DR. K. MALAISAMY: Okay. Sir, I am saying so because instead of confronting an issue, they are taking a cajoling attitude; instead of coercing an issue, they are taking a cajoling attitude; instead of coercing an issue, they are coaxing an issue. This is the difference that is being seen. Sir, instead of dealing at the source of the problem, they are dealing at the periphery. These are all my observations. Let them reply. To deal with a vital issue like this, they must employ all their resources at one stroke, instead of giving a piecemeal solution.

Sir, Dr. P.C. Alexander rightly said that there is the problem of non-coordination between various agencies, namely, the RAW, IB, the State Government and the Central Government. I am not going into all that. The very important aspect is, non-availability of data. What I am trying to say is, more than 12000 Pakistani nationals are over-staying in India, and 2500 of them have gone underground. What happened to them? What are their whereabouts? The Government has no information, in this regard. Is the Government aware of it?

Sir, the next point is, non-implementation of recommendations of the Task Force set up by the NDA Government. The Task Force had given a lot of... Sir, I will finish in four-five minutes.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): No. Your party had eight minutes, but you have taken ten minutes. You have already taken two minutes more. Conclude in two minutes.

DR. K. MALAISAMY: Sir, I am raising a very important point. Sir, world over special legislations are in existence to deal with a specific problem like this. Unfortunately, the POTA has been withdrawn. This has given a wrong signal to the country at large for the simple reason that it has given morale boost to the terrorists, whereas the security forces are demoralised.

Sir, coming to the IB, I would like to say that the job of the IB is to search out intelligence on matters like this. But, now they are tracking on the opposition party and opposition leaders, and most of their time is spent only on that. Sir, we have got excellent trained commandos. But they are not being used to fight against terrorists. On the other hand, they are being used to guard the VIPs.

Sir, please give me a few more minutes to speak about the most important aspect of this. Sir, in our system, terrorist elements, mafia elements and other anti-social elements are being encouraged by the ruling party or by their set up. What I am trying to say is, a few years back, Sir, you are aware of this, a big serial blast had happened in Coimbatore. What happened was, 58 people died in that blast.

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM (Tamil Nadu): That case is going on. We should not discuss about that in this House. ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): He is not talking about that case ...(*Interruptions*)... He is not talking about that case. You please take your seat ...(*Interruptions*)...

DR. K. MALAISAMY: I am not discussing it all all ...(*Interruptions*)... I will be the last person to do that ...(*Interruptions*)...

SHRIMATI S.G. INDIRA (Tamil Nadu): He is only quoting the incident. ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): He does not need your support. ...(*Interruptions*)... Your time is over.

DR. K. MALAISAMY: Only two-three minutes ...(*Interruptions*)... When I say it, I will abide by it. ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): You take two-three minutes more and then finish your point. . .(*Interruptions*)... Do not disturb him. ...(*Interruptions*)...

DR. K. MALAISAMY: You have been considerate to me. ...(*Interruptions*)... The prime accused is known as Mr. Madani and sixty other Al-Umma prisoners were lodged in Coimbatore jail. Now, what happened is that the great C.M. of Tamil Nadu with the recommendations of others ...(*Interruptions*)...

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM: He is speaking out of context. ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): He has a right to say what he wants to say. ...(*Interruptions*)... Please refute it when your turn comes.

DR. K. MALAISAMY: Sir, a team of Ayurvedic doctors, massage men ...(*Interruptions*)... It has been funded by ...(*Interruptions*)...

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM: This is out of context. ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): You can refute it when your turn comes. ...(*Interruptions*)...

DR. K. MALAISAMY: The present DMK government in Tamil Nadu has converted the jail into a massage club. ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Why do you make it an issue? ...(*Interruptions*)... Do not make it an issue.

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM: How can we discuss about it here? ...(*Interruptions*)... This is not according to your ruling ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): He is not criticising any court order. ...(*Interruptions*)... Please conclude. ...(*Interruptions*)... Dr. Malaisamy, please conclude. ...(*Interruptions*)... Your time is over. ...(*Interruptions*)... You have already taken four minutes more. ...(*Interruptions*)...

DR. K. MALAISAMY: I do not come to the Well of the House. ...(*Interruptions*)... I am a most disciplined person ...(*Interruptions*)... Why should he interfere like this? ...(*Interruptions*)... I am also capable of using my throat power ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Please conclude ...(*Interruptions*)... You have already taken four minutes more than your time. ...(*Interruptions*)... Your party was given 8 minutes and you have already taken 12 minutes.

DR. K. MALAISAMY: There are only a few points that I want to highlight ...(*Interruptions*)... Terrorists are being assisted by the DMK ruling party of a State ...(*Interruptions*)... They have converted a jail into a massage club ...(*Interruptions*)... Tomorrow they are going to convert the jail into ...(*Interruptions*)... What I am trying to say is that instead of being very tough with these people, they are extra kind and considerate ...(*Time-bell*).

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Please take your seat. ...(*Interruptions*)... Shrimati Durga. ...(*Interruptions*)... Your time is over. ...(*Interruptions*)... You have said everything ...(*Interruptions*)...You have taken 12 minutes instead of 8 minutes. ...(*Interruptions*)...

DR. K. MALAISAMY: Sir, I rarely seek your permission ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Take one minute more. ...(*Interruptions*)... Come to the next point. ...(*Interruptions*)... You spoke about that. ...(*Interruptions*)... Come to the next point. ...(*Interruptions*)...

DR. K. MALAISAMY: Coimbatore point is a very important point, Sir.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): You have already explained that. ...(*Interruptions*)... Why do you repeat it? ...(*Interruptions*)... That point is over now ...(*Interruptions*)...

DR. K. MALAISAMY: Okay, I leave Coimbatore. ...(*Interruptions*)... Sir, the point is how a ruling party can afford to help an accused in a bomb blast case. ...(*Interruptions*)... Today it is in Coimbatore case, tomorrow it can be in Mumbai case. ...This is a very important point that I want to make. ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Please support the Chair. ...(*Interruptions*)... I was supporting you all the time. ...(*Interruptions*)... You have to support me now. ...(*Interruptions*)... You please take your seat. ...(*Interruptions*)...

DR. K. MALAISAMY: You have been nice to me but I am yet to finish my speech. ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): There are 20 speakers more. ...(*Interruptions*)... Please take your seat. ...(*Interruptions*)...

DR. K. MALAISAMY: It is only a touch and go on the measures because Dr. Alexander has been very detail ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Now, please take your seat. ...(*Interruptions*)... (*Time-bell*) Shrimati Durga. ...(*Interruptions*)...

DR. K. MALAISAMY: I request the hon. Home Minister that while strengthening the infrastructure ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): You said that you always obey the Chair. ...(*Interruptions*)... Why are you not doing so now? ...(*Interruptions*)...

SHRI DINESH TRIVEDI (West Bengal): If you yield for a moment ...(*Interruptions*)... Juse one second ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): There is no question of his yielding. ...(*Interruptions*)... His time is already over. ...(*Interruptions*)...

SHRI DINESH TRIVEDI: He is yielding ...(*Interruptions*)... Sir, my question is if we are discussing such an important aspect of terror where the country's existence is concerned, why can't we extend the time and the number of speakers?

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): It is for the House to decide ...(*Interruptions*)...

SHRI DINESH TRIVEDI: Let us take the sense of the House. ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): It is for the House to decide ...(*Interruptions*)...

SHRI DINESH TRIVEDI: I do not understand it. ...(*Interruptions*)... Let's sit on Sunday ...(*Interruptions*)... Instead of that, we are curtailing it. ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): It is for the House to deside ...(*Interruptions*)... You are in the panel of Vice-Chairman,

Mr. Trivedi and you yourself know constraints. ...(*Interruptions*)...

SHRI DINESH TRIVEDI: As an ordinary Member also I have a right to speak. It is such an important discussion. We talk about terror and we want to concise this. If somebody has an important point.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Yes, Shrimati Durga, please start. I allowed him to make his important point.

SHRIMATI N.P. DURGA (Andhra Pradesh): Sir, at the outset, I convey my deepes condolences on hebalf of my party and on my own behalf to this horrifying successive blasts in different trains of Mumbai's Western Local Line killing 184 people and injuring nearly 850 people. I also express my heartfelt condolences to the people who have died in Srinagar blasts. I confine my remarks only to these two incidents. I am uterly disappointed after going through the statement by hon. Home Minister, since the statement contains nothing but superfluous words. There is no mention as to why intelligence has failed. There is no mention as to how RDX, Ammonium Nitrate and fuel oil sneaked into first class railway compartments. There is no mention about the failure of the RPF which is supposed to frisk every passenger and his baggage before he enters into the station. Sir, I would like to know from the hon. Minister whether it is true that according to the frensic reports there is a striking similarity between the Varanasi blasts and the serial Mumbai blasts since there is a similarity between the explosives used, the *modus operandi,* the days they have selected—Tuesdays on both the occasions—and the time they have chosen *i.e.*, between 6.00 P.M. and 6.30 P.M., explosives were planted in handbags and left behind in both the cases. If. 'yes', whether the Anti Terrorist Squad is moving in that direction to solve this case. The next point I wish to make is: just a couple of months ago *i.e.*, in May this year the Anti-terror Task Force cracked down on terror cells in Mumbai. The blasts clearly show that these crackdowns on a few cell did not deter terrorists to desist their plan. In fact, the way it has been executed clearly shows that they are able to attack with more vigour and ease. I wish to know where the lacuna is. I would like to know whether the ATF failed in its operation to clean up these cells or the so-called clean up is only an eyewash. I

wish to know this from the hon. Minister. Sir, the next point on which I seek information from the hon. Minister is, what are the plans the Railways have for Internet Protocol TV Network in all zones of the Railways to avoid recurrence of such blasts in other railway zones. I would like to know whether the Maharashtra Government or the Government of India is aware that large quantities of explosives meant for road building construction in Afghanistan are missing from ships off the Mumbai Port. If, 'yes', what have the State and the Union Governments done to recover them? Sir, to my mind, the attacks at Mumbai and Srinagar have been carried out to cripple Mumbai's lifeline; and tourism industry at Srinagar and the attempt is to hit our economic base. Sir, I am not in favour of repealing POTA. Yes, I agree that this powerful Act might have been misused. But, how the present Home Minister, who is a very senior Member of the Cabinet, agrees with the argument that since POTA was misused, it should be repealed. If that is the argument he buys, there are umpteen Acts on our Statute Book which are being misused. Are you repealing them all? No. But the repeal of POTA has given a clear, unambiguous signal to Jehadis and their patrons that they can do as they wish without any let or hindrance. This has been done by this UPA Government just for a fistful of votes. So, I urge that if not POTA, you enact another law for God's sake, give it another name, and deal with these spineless creatures, who are crippling the development of our country. Sir, the next point I wish to know from the hon. Minister is whether it is true that IB had given a tip to Mumbai police about RDX and arms consignment to the State. But, in spite of getting the tip from the IB, the leads have not been followed. If, 'yes', what are the reasons behind this? Who are behind this non follow up of these leads from IB? And, what the Ministry has done in this regard against the errant police officials. And, whether it is also true that there are as many as ten agencies tracking terrorists, apart from IB, which collects information on terrorists. Whether it is also true that there is a lack of coordination between all the ten agencies, which are tracking terrorists, and the results are heart-breaking and mind-boggling. If so, what is the Ministry doing in this regard? Sir, the hon. Minister spoke about compensation. I agree that you cannot bring back the life by paying money. Here, I wish to seek a small clarification from the hon. Minister. The Minister said that so far Rs. 3.52 crores has been paid as *ex-gratia.* I wish to known whether this amount also

includes the Rs. 5 lakhs announced by the hon. Railway Minister. This may be clarified.

Finally, I do not want to go into all recommedations made by the Task Force set up in 2000 for revamping the intelligence apparatus. I only wish to know as to what are the reasons for not implementing a coordination mechanism in each State under the leadership of the IB? This important recommendation has not been implemented for six years. Sir, I would like to know why this recommendation has not been implemented and what the Government of India is doing to make the States implement this.

So, Sir, just do not try to pacify us after these twelve blasts—five in Srinagar and seven in Mumbai—by saying that investigation is going on and until we get the report, we cannot go ahead. The Government should realise the understand that there is something grossly wrong with our domestic intelligence apparatus. There is a need to overhaul the entire intelligence apparatus and there is also a need to inject fresh blood into it. Otherwise, there will be no end to such horrific crimes on humanity. Thank you.

DR. CHANDAN MITRA (Nominated): Mr. Vice-Chairman, Sir, thank you very much indeed. Many of us are waiting for three days to give our views in the matter and much has already been said. So, I shall try to be as brief as possible. So, the point has been made by many earlier speakers but I would just like to reiterate again that there is a major issue of intelligence which is at the root of what has happened in Mumbai and, unless, very serious steps are taken with regard to the intelligence failure, we are likely to see many such incidents again in the future. I would like to know from the Home Minister, Sir, what steps the Government is proposing to take, to beef up the intelligence mechanism of the security forces because that is the key to preventing such incidents in the future. Because, without adequate intelligence information in advance, it is almost impossible; expecially in cities like Mumbai or Delhi or in other places like Varanasi where we had such incidents. It is virtually impossible to act. For the police to be present in every spot, to scan every bag, to scan every passenger, is not physically possible.

So, unless we have adequate information, there is going to be a

2.00 P.M.

serious problem recurring. And, in this context, Sir, I wish to point out that very often, matters seem to get handled in an extremely amateurish manner. I recall that after the Mumbai blast, the Mumbai Police gave out that the prime suspect, the master mind in this was somebody by the name Rahil, who lived in a flat in Mahim in Mumbai. This news appeared in newspapers the following day, and two days later we also found in the same newspapers a report again with reference to sources in the Mumbai Police that this certain Rahil, who is supposed to be a very well networked terrorist with connections in the ISI and the Hujim of Bangladesh, this Rahil managed to escape by jumping off the second floor balcony when the police surrounded his Mahim residence.

Sir, I know that it may not be possible to nab every wanted or anybody who is a suspected terrorist, but if the police have such suspicion, if there are instances where you know that some people are masterminding or networking the entire terrorist apparatus, why is preventive custody not considered for these people? If there are laws that come in the way, why are these laws not strengthened? Preceding speakers have talked about the need for stronger laws. I do not want to go into the issue of POTA. This Government has some serious problems in this regard. But, Sir, I would only appeal to the Home Minister that at a time when every Government, all over the world, is strengthening the anti-terrorism laws, is it not a fact that we also need a strengthen rather than dilute anti-terrorism legislation in this country? If you don't like the name POTA, call it "KOTA" or anything else that you wish. But, I would, again, earnestly appeal to this Government that there is a need to strengthen anti-terrorist laws. I am sorry, Sir, I have a very bad cold today. So, please excuse me for this.

I would also like to draw the hon. Minister's attention to some serious lapses that have taken place from the Office of the National Security Adviser in the last seven or ten days. First, we had this alarming 'leak' from the NSA's office about Lashkar-e-Taiba's infiltration into our Air Force. This was subsequently denied by the Indian Air Force. And it appeared that the matter had blown over. But, now, I refer to a TV interview that was telecast on Sunday night in a channel in which the NSA has said that several of our nuclear installations are under threat

from the Lashkar-e-Taiba. Sir, this is a very serious allegation. It is a matter of very serious concern. I want to know whether this kind of information belongs to the public domain. This is a very serious lapse on the part of the Government, I feel, and on the part of the NSA who have gone public with the information of this kind. I would like to know from the hon. Home Minister what steps the Government propose to take to try and plug loopholes of this nature. At the same time, what steps the Government is taking, because what he has said is extremely seriously whether it is Air Force or Army we know subsequently.... *(time-bell)*.... I shall wind up very soon. Army is helping us in Jammu and Kashmir. Now, nuclear installations are under threat.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Your throat is not good. So, conclude early.

DR. CHANDAN MITRA: Sir, I am just concluding. We have waited for three days. My throat was fine then. The problem has started in the last couple of days.

I think, there is also a need for holistic approach in this entire issue. The hon. Home Minister is actually aware of the serious problem caused by the Maoist insurgency in parts of India. The hon. Prime Minister has said that this is the biggest security threat. I wish to draw his attention that the very day the hon. Home Minister was himself discussing the matter with the Chief Minister of Chhattisgarh, in Delhi, a tribal policy unveiled by his Cabinet colleague talked about treating Maoists as disturbed tribals and called for a more humane policy and attacked the whole system of Salwa Judum which is being practised in Chhattisgarh. I appeal to the hon. Home Minister, can the Government not better coordinate so that one message goes out instead of multiciplicity of contradictory messages about our approach to terrorist-related issues?

Finally, the last point I would like to make is this. In the past also I had, on this issue, appealed to the Government to consider adequate legislation to declare certain offences as federal crimes. As a part of the system of strengthening the anti-terror laws, I again, appeal to the hon. Home Minister and the Government to consider bringing terrorist in books as a federal crime so that we are better able to handle the matter. Thank you.

DR. GYAN PRAKASH PILANIA (Rajasthan): Sir, I am deeply conscious of your kind dispensation in permitting me to speak on this issue of national importance. Very much has been said. And, I think, very relevant things have been said. I resist the temptation of repeating them. But, I will only submit that attack on Mumbai is symptomatic. Attack on Mumbai is attack not only on the mega polis, but it is an attack on the country, as attack on the New York was attack on the USA. And, it has to be taken up in that perspective. Mumbai is Shanghai of India; Mumbai is the Industrial Capital of India; Mumbai is the Bollywood centre. Mumbai is so much to us. And, this is not the first attack. That is to be thought of. Mumbai has suffered so many times. It is a wounded city now. I won't pretend to claim who are at fault. But some people are at fault, agencies are at fault, and somebody has to be accountable for that. On 12th March, 1993 don Dawood and Company had first time attacked Mumbai and there were 13 blasts. I need not repeat what a holocaust it was. It was as worse as a tsunami curse. The second attack was 2nd December, 2002; the third one was on 06th December, 2002; 4th attack was on 05th August, 2003; and now, the last one had come on 11th July, 2006. May God ensure, or may Government ensure that this should be the last one. Our fear is there may be more of that also. I won't say who has failed; it is for the Government to decide whether the Central Government has failed; whether the State Government has failed; whether the intelligence has failed; whether the soft underbelly of law and order set up has been exposed. But some failure has been domewhere; there is no doubt about it. I would like to submit that is not a law and order situation, it is an attack on the sovereignty, integrity, unity and solidarity of the country. It has to be dealt that way. I can raise one question before this august House—I think, all will agree with me—which place is safe in the country? If Mumbai is not safe, is Delhi safe; is Chennai safe; is Calcutta safe? Which place is safe? We have suffered attacks everywhere. No train, no bus, no temple, no place is safe. Even '7 Race Course' is not safe, in which on 27th of this month a high drama took place. Two young women and a drunken man breached the security. Two Prime Ministers have fallen victims to the assassins' bullets. The Lal Chowk, the Dal Lake, Gulmarg, Sonmarg, the sanctum sanctorum of our democracy, that is, the Parliament was attacked on 13th December, 2001. The Ram Mandir at Ayodhya was attacked on 5th July, 2005; the

Akshardham Temple was attacked on 24th September, 2002; the Sankatmochan temple was attached on 03rd March, 2006. The Lal Quila is also not safe. The Indian Institute of Science, Bangalore was attacked on 28th December, 2005. The Jama Masjid was also not spared. In Delhi, on the eve of Diwali, on 29th October, 2003, there were blasts. The R.S.S. Headquarters at Nagpur was attacked on 1st June, 2006. There are innumerable such incidents. In the saffron fields of the J&K, everyday there is a blast and there is a smell of gunpowder. When will this dahshatgiri stop? As was quoted very rightly, the Security Advisor to the country has said, "The evidence with New Delhi of Pakistani role was stronger than what Washington pas post-9/11". This is the exact verbatim statement of a very, very responsible and very experienced intelligence man. Now, our docks are on target; our dams are on target. And, as pointed out by Dr. Chandan Mitra, even our nukes are not safe. What is safe in the country? And, who will make them safe? I don't want to accuse anyone. But something has to be done in this context. As far as overall terror scenario is concerned, we have five monsters which are attacking us. One is Pakistan-sponsored terrorist. We call it proxy war and that comes from the North. That is from across the border and it is happening daily. This is the biggest terror; terror from the North. And, a genocide is taking place. A particular class is being massascred. Training camps, arms, Fidayeen, Jehadis are there. There is a terrorist infiltration ino the country. And the figures given by the hon. Home Minister show that during 2005, terrorist infiltration was 92. During this year, that is, 2006, so far, terrorist infiltration is 299; this is three times more and this is what you have captured. Ten times more must be there, whom we have not been able to detect. Casualties are startling. I will just mention two or three figures and I won't take more of your time, Sir. From 1994 to June 2005, 19,662 civilians—they are authentic figures of casualties—and 7320 security personnel were killed. 30,000 AK 47 rifles, 60,000 grenades and tonnes of RDX have been recovered. Now, they say they are having 82 MM mortars. This is **. It is one front which the country has to face.

Another front is from the East. I will cal it the porous border of Bangladesh infiltration. ...(*interruptions*)...

SHRI SHAHID SIDDIQUI (Uttar Pradesh): Sir, I object to this. To say* is extremely wrong and dangerous. ...(*interruptions*)...

---

*Expunged as ordered by the Chair.

DR. GYAN PRAKASH PILANIA: There is some terrorism. ...(*interruptions*)...

SHRI SHAHID SIDDIQUI: We should not talk of * terrorism. ...(*interruptions*)...

DR. GYAN PRAKASH PILANIA: No; I am not talking. ...(*interruptions*)...

SHRI SHAHID SIDDIQUI: Don't talk of *. ...(*interruptions*)...

DR. GYAN PRAKASH PILANIA: * is daily written in newspapers. ...(*interruptions*)... It is a universal phenomenon. ...(*interruptions*)... You are raising the Muslim question. ...(*interruptions*)... I have not raised the Muslim question. ...(*interruptions*)...

मौलाना ओबैदुल्लाह खान आज़मी: चेयरमैन सर ..(**व्यवधान**)..

† [**مولانا عبیداللہ خان اعظمی** : چئیرمین سر،۔۔مداخلت۔۔]

SHRI SHAHID SIDDIQUI: We are not following the newspapers. ...(*interruptions*)...

DR. GYAN PRAKASH PILANIA: I am addressing the Chair. ...(*interruptions*)... He has given a wrong... ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Mr. Siddiqui, please sit down. ...(*interruptions*)... I will deal with it. ...(*interruptions*)... Please sit down. ...(*interruptions*)... Mr. Siddiqui, please take your seat. ...(*interruptions*)...

मौलाना ओबैदुल्लाह खान आज़मी: इसको * क्यों कहा जा रहा है? ..(**व्यवधान**).. इसको * क्यों कहा जाता है? ..(**व्यवधान**)..

[**مولانا عبیداللہ خان اعظمی** : اس کو اسلامک آتنک واد کیوں کہا جا رہا ہے؟ ۔۔۔مداخلت۔۔۔ اسلام آتنک واد کے خلاف ہے، تو اس کو اسلامک آتنک واد کیوں کہا جاتا ہے؟]

SHRI SHAHID SIDDIQUI: Don't talk of religious terrorism. ...(*interruptions*)...

---

†[ ] Transliteration in Urdu Script.
•Expunged as ordered by the Chair.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Mr. Siddiqui, please sit down. ...(*interruptions*)...

DR. GYAN PRAKASH PILANIA: What will you call a *Jehadi?* ...(*interruptions*)... What will you call a Fidayeen? ...(*interruptions*)... What will you call terrorism across the border? ...(*interruptions*)... Is it *? ...(*interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Please, I will deal with it. ...(*interruptions*)... You sit down. ...(*interruptions*)... No; no, please sit down. ...(*interruptions*)... Please take your seat. ...(*interruptions*)... Please take your seat. ...(*interruptions*)... Mr. Azmi, please sit down. ...(*interruptions*)...

श्री धर्म पाल सभ्रवाल (पंजाब) : सर, आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता। आतंकवादी की कोई जात नहीं होती। ....(व्यवधान)..

डा. ज्ञान प्रकाश पिलानिया: अपराधी की जात नहीं होती है, यह मैं बोल रहा हूं। ..(व्यवधान)...

THE VICE CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Mr. Pilania, please conclude ...(*interruptions*)... Mr. Siddiqui, please sit down. ...(*interruptions*)...

DR. GYAN PRAKASH PILANIA: Who told you that? ...(*interruptions*)... Sir, he raised the question many times. ...(*interruptions*)... I have not spoken about it. ...(*interruptions*)...

मौलाना ओबैदुल्लाह खान आज़मी: इस्लाम आतंकवाद को खंडन करता है। ..(व्यवधान)..

†[مولانا عبیداللہ خان اعظمی : اسلام آتنک واد کا کھنڈن کرتا ہے—مداخلت—]

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Mr. Azmi, please sit down. ...(*interruptions*)... One minute. ...(*interruptions*)... Mr. Azmi, I will name you. ...(*interruptions*)... Mr. Azmi, I will name you. Sit down. ...(*interruptions*)... I would like to say that there is no * and there is no * ...(*interruptions*)... * is deleted. ...(*interruptions*)... A terrorist is a terrorist. ...(*interruptions*)...

†[ ] Transliteration in Urdu Script.
*Expunged as ordered by the Chair.

मौलाना ओबैदुल्लाह खान आज़मी: सर, * पार्लियामेंटरी है या अनपार्लियामेंटरी है? ...(**व्यवधान**)...

† [**مولانا عبیداللہ خان اعظمی:** اس * پارلیمنٹری ہے یا ان‌پارلیمنٹری ہے؟۔۔۔مداخلت۔۔۔]

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN) : You keep quiet. ...(*interruptions*)... I know how to deal with it. ...(*interruptions*)... This is not the way. ...(*interruptions*)...

DR. GYAN PRAKASH PILANIA: Mr. Vice-Chairman, Sir, I am grateful for your kindness. In Mumbai, when there was a holocaust, it was suspected that it was caused by LeT and SIMI. And, they are which kind of outfits, everybody knows it; what I mean is, who is sponsoring them, who is giving them funds, who is giving them arms or who is giving them training? If I take their names, they will say, I am talking of muslims! I never talk of it. They are casting aspersions on the people of Mumbai. When the Government failed, ...(*interruptions*)... When everybody failed, ...(*interruptions*)... every citizen of Mumbai rose to the occasion. ...(*interruptions*)...

मौलाना ओबैदुल्लाह खान आज़मी: कोई भी मुसलमान या हिंदू आतंकवाद फैलाता है, तो उसका नाम लिया जाता है। ...(**व्यवधान**)...

† [**مولانا عبیداللہ خان اعظمی** : کوئی بھی مسلمان یا ہندو آتنک واد پھیلاتا ہے، تو اس کا نام‌لیا جاتا ہے۔۔۔مداخلت۔۔۔]

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN) : Mr. Pilania, please conclude now ...(*interruptions*)... Mr. Pilania, please conclude now. ...(*interruptions*)... Mr. Pilania, please conclude now. ...(*interruptions*)... You have taken enough time. ...(*interruptions*)...

DR. GYAN PRAKASH PILANIA: Sir, I will stop it when he stops. ...(*Interruptions*)...

मौलाना ओबैदुल्लाह खान आज़मी: गांधी जो को किसने मारा, क्या वह ' है? ...(व्यवधान)...: गोडसे के लिए क्या कहा गया, क्या यह * है?

† [**مولانا عبیداللہ خان اعظمی** : گاندھی جی کو کس نے مارا، کیا وہ * ہے؟ ۔۔۔مداخلت۔۔۔ گوڈسے کے لئے کیا کہا گیا، کیا وہ * ہے؟]

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Mr. Azmi ...(*Interruptions*)...

मौलाना ओबैदुल्लाह खान आज़मी: क्या सनातन धर्म को दोषी माना गया है? ...(**व्यवधान**)...

†[ ] Transliteration in Urdu Script.

*Expunged as ordered by the Chair.

†[مولانا عبیداللہ خان اعظمی کیا سناتن دھرم کو دوشی مانا گیا ہے؟ ...مداخلت...]

DR. GYAN PRAKASH PILANIA: Why is he feeling so upset? ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Mr. Pilania, please conclude. ...(*Interruptions*)...

SHRI SHAHID SIDDIQUI: If you cast such aspersions, he will be upset. ...(*Interruptions*)...

DR. GYAN PRAKASH PILANIA: Pan-Islamism is talked about daily ...(*Interruptions*)... It always comes ...(*Interruptions*)... Pan-Islamism is written in every newspaper.

मौलाना ओबैदुल्लाह खान आज़मी: यह क्या बात है? ...(व्यवधान)...

† [مولانا عبیداللہ خان اعظمی : یہ کیا بات ہے ؟]

श्री विनय कटियार (उत्तर प्रदेश): महोदय, ...(व्यवधान)...

SHRI SHAHID SIDDIQUI: Then, your terrorism is * ...(*Interruptions*)... What did you do in Gujarat? ...(*Interruptions*)...

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ पी॰ जे॰ कुरियन): आप बैठिए, आप बैठिए! ...(व्यवधान)... Only what Shri Pilania says will go on record. Nothing else will go on record ...(*Interruptions*)... Only what Shri Pilania says will go on record. Nothing else will go on record ...(*Interruptions*)... Now, Mr. Pilania, please conclude ...(*Interruptions*)... Nothing will go on record other than what Mr. Pilania says ...(*Interruptions*)... Please sit down. I will deal with it ...(*Interruptions*)...

श्री विनय कटियार: *

मौलाना ओबैदुल्लाह खान आज़मी: *

श्री शाहिद सिद्दिकी: *

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Please conclude ...(*Interruptions*)...

श्री विनय कटियार: *

†[ ] Transliteration in Urdu Script.
*Not recorded.

मौलाना ओबैदुल्लाह खान आज़मी: *

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Nothing will go on record. ...(*Interruptions*)...

श्री विनय कटियार: *

मौलाना ओबैदुल्लाह खान आज़मी: *

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Now, take your seats...(*Interruptions*)... Mr. Katiyar, now take your seat...(*Interruptions*)... Mr. Azmi, please take your seat ...(*Interruptions*)...

मौलाना ओबैदुल्लाह खान आज़मी: *

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Mr. Azmi, I will have to name you ...(*Interruptions*)... I will have to name if you do this ...(*Interruptions*)... Sit down Mr. Pilania ...(*Interruptions*)...

DR. GYAN PRAKASH PILANIA: Sir, I am sorry, I would stop ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): No, no listen to me. You have taken much more time than what was allotted to you ...(*Interruptions*)...

DR. GYAN PRAKASH PILANIA: Sir, they have taken...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): No, no, even otherwise,...(*Interruptions*)... You please conclude.

DR. GYAN PRAKASH PILANIA: I will conclude, Sir, but the point is they have put their words into my mouth. I never said ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): No, no...(*Interruptions*)... You please conclude ...(*Interruptions*)...

DR. GYAN PRAKASH PILANIA: No, one thing is to be decided ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): You please conclude ...(*Interruptions*)... Whatever decision I may take, ...(*Interruptions*)... you conclude. You say what you want to say ...(*Interruptions*)... As for decision, you don't interfere.

* Not recorded.

DR. GYAN PRAKASH PILANIA: I will say one thing. The Pakistan ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Speak on the subject.

DR. GYAN PRAKASH PILANIA: The proxy war from Pakistan, what would we call it; the proxy war from Bangladesh, what would we call it; *Jehadis,* what would we call them? ...(*Interruptions*)... I never raised the question of Muslims or Hindus. It is they who talked of this. I never talked of Muslims or Hindus, because both are Indians. For both of them, Constitution is one; for both of them, country is one; for both of them, the President is one; and, for both of them, Parliament is one. They are dividing; we are not dividing. I will conclude by saying only one thing, Sir. We have to be careful about proxy was across the border from the North; we have to be careful about infiltration from Bangladesh; we have to be careful about internal disturbance of naxalism, which needs a very detailed analysis; and we have to be careful about insurgency which is there in seven North Eastern States. I will conclude by saying let us rise together, the Government, the people and everyone against terrorism, without caste, creed and without any difference.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): That is good.

DR. GYAN PRAKASH PILANIA: I will just invoke by saying, let us today think of 600 martyrs (*Time-bell*) who laid their lives at Kargil. Let us bow...(*Interruptions*)... our heads in their sacred memory. Let us remember Brigadier Usman who laid his life at the age of 36 ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Please wind up.

DR. GYAN PRAKASH PILANIA: You are talking of Muslims and Hindus...(*Time-bell*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Mr. Vedprakash Goyal.

DR. GYAN PRAKASH PILANIA: And, let us rise to the occasion to make sacrifice for the ashes of our fathers, for the honour of our temples,

for the glory of our Gods and for the security of this motherland which is above everything. And another operation Vijay is the need of the hour. I will say only this thing, and extraordinary situation requires extraordinary response. Let us stand united, and let there be no lack of will on the part of the Government as well as on the part of ...(*Time-bell*)... both Houses of Parliament. ...(*Time-bell*)... We stand united and we win. ...(*Interruptions*)... Thank you very much, Sir, for tolerating me for so long.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Thank you. Next speaker is, Mr. Vedprakash Goyal. Now, Goyalji, you should know my constraints. See, every hon. Member who is speaking has been allotted five minutes only. That is the position. Yet, I am allowing extra time to the Members. Why I am saying this is because there are fifteen Members who are yet to speak. Now, it would be good for all of us, if, without making me ring the bell, you could conclude within five minutes.

श्री विनय कटियार: सीनियर सिटीजन का लाभ दे दीजिए।

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ पी॰जे॰ कुरियन): वह ठीक है, I have only said it. It is up to the Members to observe it. I am only reminding you.

श्री वेद प्रकाश गोयल (महाराष्ट्र): उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपकी बात को ध्यान में रखूंगा। मैंनें इस सदन में 10 सरल तक यह देखा है कि जो लोग ज्यादा बोलते हैं, वे बोलते चले जाते हैं, उन्हें कोई रोक नहीं सकता, लेकिन जो स्वभाव से ही कम बोलते हैं, वे और भी कम बोलें, तो कहां से शुरू करें और कहां खत्म करें? मैं आपका बड़ा शुक्रगुज़ार हूं कि आपने मुझें allow किया कि बोलो। मैं तो इतना ही कहूंगा कि अगर किसी को मेरी बात ठीक न लगे, तो उसका जवाब दें, लेकिन ख्वामख्वाह तोहमत न लगाएं।

उपसभाध्यक्ष महोदय, आज का जो विषय है, यह केवल मुंबई का नहीं है, मुंबई के संदर्भ में सारे देश में जो बढ़ता हुआ terrorism है, इसके ऊपर आज यहां चर्चा हो रही है और यह चर्चा केवल मुंबई तक सीमित नहीं है। मुंबई के बारे में यहां बहुत कुछ कहा गया है। मैं तो स्वयं इस हादसे का, हादसा नहीं कहूंगा, इस terrorist attack का चश्मदीद गवाह हूं। मैं उस दिन वहीं था, मैंने खुद देखा है कि किस तरह से war heroes की तरह लोगों को भर-भरकर Sion Hospital में लाया जा रहा था-मरे हुए, हाथ-पैर कटे हुए। मेरा घर Sion Hospital से 100 कदम की दूरी पर है, वहां मैंने यह सब खुद देखा है। आप लोग तो ब्रीच कैन्डी हॉस्पिटल, जसलोक हॉस्पिटल, माहिम के हॉस्पिटल तक, बड़ी दूर-दूर तक देखने जाते हैं, जो बिल्कुल

माटुंगा स्टेशन की बगल में है- Sion Hospital वहां कोई नहीं जाता। बड़ी-बड़ी dignitaries घायलों को देखने जाती हैं। मंत्री जी ने कहा कि हम एकदम वहां गए, उनकी पार्टी की अध्यक्षा भी गईं, उनके साथ दूसरे मंत्री भी गए, लेकिन वे कहां गए? वे माहिम के हॉस्पिटल में गए, प्राइवेट हॉस्पिटल में गए, लेकिन यह जो सरकारी अस्पताल है- Sion Hospital, जिसमें सभी तरह की सुविधाएं उपलब्ध हैं, एक से एक बढ़िया सुविधाएं उपलब्ध हैं, वे वहां नहीं गए। वे वहां क्यों नहीं गए, वहां जाने में क्या तकलीफ थी? मैं यह कहना चाहता हूं कि आप ऐसे स्थानों पर जाते, जहां विधवाएं रो रही थीं, जिनके आदमी हताहत हुए थे, आप वहां नहीं गए। अस्पताल में जाकर केवल 15 मिनट, घंटे, दो घंटे में चार लोगों से आप मिल लिए, फोटो खिंचवा ली और बात खत्म हो गई, इससे बचना चाहिए।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं शुरू में ही यह कहना चाहता हूं कि यह जो terrorism का विषय है, इसको communal झगड़ों के साथ जोड़कर बात नहीं करनी चाहिए। जब कभी terrorism की बात आती है, तो इसको एकदम communal विषय बना दिया जाता है, जब कि यह communal विषय नहीं है। आप देखिए कि इसके बारे में हमारी approach क्या है?

महोदय, जो संस्थाएं अलग-अलग नामों से terrorism फैलाने के लिए काम कर रही हैं, उनके ऊपर जरा विचार करिए कि उनके नाम क्या हैं और वे क्या ज़ाहिर करती हैं? मैं केवल दो-तीन उदाहरण दूंगा, उदाहरण तो बहुत हैं, लेकिन मैं केवल दो-तीन उदाहरण दूंगा जैसे जैशे-मोहम्मद। जैश क्या होता है? जैश का मतलब है तलवार या फौज। तो ये क्या मोहम्मद साहब की फौज है? हम कहते हैं कि * नहीं है, तो ये किसकी फौज है, किसकी तलवार है? जिसे लेकर वे हिन्दुस्तान के अन्दर टेरोरिज्म कर रहे हैं। जब यह तलवार चलती है, तो हिन्दू भी मरता है, मुसलमान भी मरता है। वह distinguish नहीं कर सकती है कि हिन्दू कहां बैठा है और मुसलमान कहां बैठा है। इससे सबको मारा जा रहा है, सारे मुल्क को हताहत किया जा रहा है।

एक और नाम है, यह बहुत कॉमन है-लश्करे तैय्यबा। इसे अलग-अलग spelling से लिखते हैं। तैय्यब का मतलब है- पवित्र। यह कौन सा पाक लश्कर है, जो अंधाधुंध हिन्दू-मुसलमान, सबको मौत के घाट उतार रहा है? यह एक मनोवृत्ति है। जोशी जी ने कहा था कि टेरोरिज्म एक मनोवृत्ति है, यह वह मनोवृति है जिसने पाकिस्तान को जन्म दिया। पाकिस्तान को पाक कहा जाए, तो क्या इसका मतलब हिन्दुस्तान नापाक है? यह मनोवृत्ति किसने पैदा की? हमने तो नहीं की। किसी पार्टी ने की है, जिस पार्टी ने भी की हो। मगर यह लश्करे तैय्यबा है क्या? ऐसे और कितने हैं? हम तो मानते हैं- वसुधैव कुटुम्बकम, सारा देश नहीं, सारा विश्व एक है। हम सबको भाई मानते हैं और हमको यह कहना कि * इसका कोई मतलब ही नहीं।

•Expunged as ordered by the Chair.

एक अन्य नाम है-लश्करे कहर। ये किस पर कहर ढाह रहे हैं? तब बिजली गिरेगी, तो हमारे घरों पर गिरेगी, आपके घरों पर गिरेगी। वे इस तरह के शब्दों का जो इस्तेमाल करते हैं, क्यों करते हैं? वे ऐसा इसलिए करते हैं कि पढ़े-लिखे लोगों पर, शहरों पर तो इसका असर न पड़े। लेकिन जो इसका मतलब ही नहीं समझते, हममें से भी कितने लोग समझते हैं, गांवों में, छोटे शहरों के लोग, इसमें से क्या सबक लेते हैं? वे सबक लेते हैं, जो उनको उकसाने के लिए काफी है। वे ऐसे शब्द इस्तेमाल करते हैं कि लोग उसे समझते ही नहीं, लेकिन उनको उकसाने के लिए काफी है, उनमें मजहबी जुनून पैदा करने के लिए काफी है। यह बड़े खतरे की बात है। हमें इसको ध्यान में लेना चाहिए।

इस हिसाब से यह उनका पांच पन्ने का बड़ा लम्बा जवाब है। मैं उनसे अपील करता हूं कि ऐसी जो संस्थाएं हैं, उनके साथ जुड़े हुए जो लोग हैं, उनके नाम publish करें, कम-से-कम उनके नाम यहां टेबल पर रखें। डर किस बात का है? क्या मुसमानों के वोट का डर है? वे तो already आपसे दूर जा चुके हैं, वे कांग्रेस के पास तो हैं ही नहीं। फिर आप चिन्ता क्यों करते हैं। लेकिन जो सही है, जो सच है, उसे समाज के सामने लाइए। इससे लाभ होगा, नुकसान नहीं होगा। मैं चाहूंगा कि वे अपने जवाब में इसका जवाब दें कि वे ऐसी लिस्ट छापने वाले हैं या नहीं। ... (*समय की घंटी*)... अभी तो मैंने शुरू किया है।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): You have taken six minutes. आपने छह मिनट ले लिया है।

SHRI VEDPRAKASH P. GOYAL: Please bear with me for a while.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): You shall get only five more minutes.

श्री वेद प्रकाश गोयल: आप रोज अखबार देखिए। हर रोज अखबार में इनमें से किसी-न-किसी संस्था का ज़िक्र रहता है। कौन पकड़े गए, इसका ज़िक्र है। उनको पकड़ा गया, दो दिन रखा गया, छोड़ दिया गया। क्या किसी एक को भी सजा हो रही है? 1993 के मुकदमें अब तक चल रहे हैं, कितने साल हो गए, किसी को याद रहेगा। इनका भी यही हश्र होने वाला है। इनका भी यही हाल होगा। आप सुनें या सुनें, आप मेरी बात जरूर समझ रहे हैं। वे कह रहे हैं कि सुन नहीं रहे हैं। मैं केवल किसी व्यक्ति की तरफ नहीं कह रहा हूं, मैं सारे हाउस को address कर रहा हूं और आपके माध्यम से कर रहा हूं। यह जो खूनी तहजीब पैदा हो रही है, अगर उसका जवाब नहीं दिया जाएगा, पकड़े हुए लोगों को कुछ सजा नहीं मिलेगी, तो यह ठीक नहीं है। पोटा, टाडा, मकोका, सबका जिक्र आता है- अगर आपको इन शब्दों से allergy है, तो छोड़ दीजिए, पोटा को छोड़ दीजिए। लेकिन क्या सिविल लॉ से इसे control

*Expunged as ordered by the Chair.

किया जा सकता है? क्या यह लॉ एंड ऑर्डर का सवाल है? दुनिया में कहीं भी यह सिविल लॉ से control नहीं हुआ है। कई दोस्तों ने बताया। सब मुल्कों में इस तरह के हालात को deal करने के लिए अलग कानून होते हैं। आप ऐसा कानून बनाइए, हम इसमें आपका साथ देंगे। लेकिन इसमें time bound सज़ा का इंतजाम होना चाहिए। अगर सालों-साल मुकदमा चलेगा तब तो महत्व ही खत्म हो जाएगा। मैं आप के आग्रह पर बहुत-सी मिसालें छोड़ देता हूं, मैं ज्यादा नहीं बोलूंगा। यहां इंटैलीजेंस की बात की गयी, इस के बहुत से दोस्तों ने बहुत उदाहरण दिए हैं। मैं सिर्फ आप को एक कोटेशन बताना चाहूंगा। श्री ए॰बी॰ बर्धन जो कि सी॰पीआई॰ के जनरल सेक्रेटरी हैं।

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ पी॰जे॰ कुरियन): गोयल साहब, कंक्लूड कीजिए।

श्री वेद प्रकाश गोयल: चलिए मैं उसे पढ़ता नहीं। सी॰पी॰आई॰ के जनरल सेक्रेटरी ने पूछा है कि आप को इंटैलीजेंस ने जो खबर दी थी, आप ने उस का क्या किया, उस का कैसे इस्तेमाल किया? स्वयं प्राइम मिनिस्टर ने भी किसी-न-किसी रूप में कहा है कि केन्द्र ने बहुत information दी थी, उस का क्या इस्तेमाल हुआ? आप की सरकारी इंटैलीजेंस का, आप की दोस्त पार्टी का अगर यह कहना है और आप उस बारे में कुछ नहीं कहते तो उस इंटैलीजेंस से क्या होगा? आज इंटैलीजेंस टैक्नीकल होनी चाहिए क्योंकि आज टैरेरिस्ट्स के पास बहुत हाई-टैक्नॉलोजी है। उन में कंप्यूटर इंजीनियर्स हैं, सॉफ्टवेयर इंजीनियर्स हैं और भी इस लेवल के लोग हैं। उन को पाकिस्तान में और दूसरे मुल्कों में सब नेटवर्क available है। आप उन से कैसे लड़ेंगे? आज हमारी इंटैलीजेंस के पास क्या टैक्नॉलोजी है, उस का खुलासा होना चाहिए। हम कौन-सी टैक्नॉलाजी इस्तेमाल कर रहे हैं। आज दूसरे मुल्कों में टैक्नॉलोजी बहुत डवलप्ड है और हिंदुस्तान में भी बहुत डवलप्ड है। आप बेंगलोर को इस काम में लगा दीजिए, वहां के लोग आप के लिए पूरा हल निकाल देंगे। ...(व्यवधान)... गोपाल भाई ने कैलेंडरवाइज बहुत-सी इंसीडेंट्स का जिक्र किया है, इसलिए मैं उन सब को छोड़ देता हूं। मैं उन को रिपीट नहीं कर रहा हूं।

गृह मंत्री जी ने अपने 5 पन्ने के बयान में कहा है कि we pay our tribute to the people of Mumbai for their resolve to triumph over terrorism.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Instead of five minutes you have taken ten minutes. ...(*Interruptions*)... There are another 14 speakers. Please conclude... ...(*Interruptions*)...

श्री वेद प्रकाश गोयल: सर, हमारी पार्टी के एक सदस्य नहीं बोले हैं। उन का टाइम भी available है। अरुण शौरी साहब नहीं बोले हैं, इसलिए आप के पास बहुत टाइम है

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Your party has already

exhausted the time. ...(*Interruptions*).... No time is available ...(*Interruptions*).... It is already over. ...(*Interruptions*)... This is all bonus ...(*Interruptions*)...

श्री वेद प्रकाश गोयल: सर, यह जो ट्रिब्युट है, इस का हम क्या करें?

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): There are 14 other Members to speak. ...(*Interruptions*)...

श्री वेद प्रकाश गोयल: मुंबई तो हमेशा अगले दिन चलने लगती है। वहां लाखों लोग रोजी-रोटी के लिए बाहर से आते हैं। अगर वे काम पर नहीं जाएंगे तो खाएंगे क्या और घर पर बीमार मां-बाप के लिए क्या भेजेंगे? इसलिए आप यह मत समझिए कि सब शांति है। उन के दिल गुस्से से भरे हुए हैं। आप उस शांति को कमजोरी मत समझिए। अगर यह शांति एक लिमिट से बाहर गयी तो लोग खड़े हो जाएंगे और इतने लोग खड़े होंगे कि आप रोक नहीं पाएंगे, कोई सरकार नहीं रोक पाती है। हमारा समाज शोरगुल नहीं करता तो इस का मतलब यह उन की कमजोरी नहीं है।

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ पी॰जे॰ कुरियन): गोयल साहब, आप बहुत सीनियर मेंबर हैं। अभी 14 लोग और बोलने वाले हैं, आप ऐसे बोलेंगे तो रात तक बैठना पड़ेगा।

श्री वेद प्रकाश गोयल: उपसभाध्यक्ष जी, मैं रात तक बैठूंगा और बहुत लोग बैठेंगे।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): I think the Home Minister is sitting here without even taking lunch. ...(*Interruptions*)...

श्री वेद प्रकाश गोयल: कोई बात नहीं, वह हमारे दोस्त हैं और महाराष्ट्र के हैं। एक दिन उपवास करेंगे तो फर्क नहीं पड़ेगा।

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ पी॰जे॰ कुरियन): आप सीनियर मेंबर हैं Please conclude. ...(*Interruptions*)... प्लीज खत्म करें। मैं इसलिए हिंदी में बोल रहा हूं क्योंकि मेरी बात आप को पसंद आएगी।

श्री वेद प्रकाश गोयल: इस बारे में गवर्नमेंट का रिस्पांस क्या है? इनका बयान 'नंबर एक हैं, यह मानवीय घटना है बयान नंबर दो, हम इसकी भर्त्सना करते हैं। बयान नंबर तीन, सरकार आतंकवादियों से निपटेगी आप बताएं कि कैसे निपटेगी? वे हर रोज जहां चाहे अटैक कर सकते हैं।

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ पी॰जे॰ कुरियन): श्री गाँधी आज़ाद।

श्री वेद प्रकाश गोयल: आप इस विषय की गहराई में जाकर क्या सोचते हैं, यह बताइए? आशा है, आप मेरी बातों की गंभीरता को समझेंगे। आप अपने जवाब में बताएं कि कैसे इस आतंकवाद को रोकेंगे।

श्री गांधी आज़ाद (उत्तर प्रदेश): महोदय, 11 जुलाई, 2006 को मुम्बई में जो बम विस्फोट हुए, वह बहुत ही निंदनीय है। इसकी जितनी भी निन्दा की जाए, वह कम है। मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी बहुजन समाज पार्टी की तरफ से इस कृत्य की घोर निन्दा करता हूं तथा मारे गए व्यक्तियों के प्रति शोक-संवेदना प्रकट करता हूं। इसके साथ ही मैं घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना भी करता हूं। महोदय, संकट की इस घड़ी में धर्म और मजहब से ऊपर उठकर मुम्बई के वासियों ने मानवता का जो परिचय दिया है, मैं उसके लिए मुम्बईवासियों को बधाई भी देता हूं।

[श्री उपसभापति पीठासीन हुए]

महोदय, आज आतंकवाद दिन-प्रति दिन भयावह रूप लेता जा रहा है। आज आतंकवाद से केवल हमारे देश को ही खतरा नहीं है, बल्कि यह खतरा दुनिया के अन्य देशों में भी बढ़ता चला जा रहा है। महोदय, हमारी सरकार आतंकवाद से निपटने के लिए, इस खतरे का रोकने के लिए, लगातार प्रयासरत तो जरूर है, किन्तु आए दिन कहीं-न-कहीं घटना घटित हो जाती है। सरकार से मेरा अनुरोध है कि इसके कारणों का भी पता लगाना चाहिए।

मेरी राय में आतंकवाद के चंद कारण हैं। पहला कारण यह है कि आतंकवाद की घटना बाहरी कारणों से घटित होती है। दुनिया के कुछ देश आतंकवाद को बढ़ावा देने में संलग्न हैं। सरकार से मेरी अपील है कि प्रगतिशील देशों तथा विकासशील देशों के साथ बैठकर यू॰एन॰ओ॰ में इस बात को उठाकर इसके कारणों का पता लगाना चाहिए और इसका निवारण भी करना चाहिए।

महोदय, इसके साथ-ही-साथ आतंकवाद के आंतरिक कारण भी है। हमारे देश में बेरोज़गारी, अशिक्षा और भुखमरी के कारण आज का नौजवान भटकता जा रहा है। एक कहावत है-"भुभुक्षित् किम् न करोति पापम", मरता क्या न करता। इस भूख के कारण नौजवानों के भटकने से उनमें देशप्रेम की भावना की कमी होती जा रही है। आतंकवादियों के चंगुल का शिकार बन जाने के कारण वह कहीं-न-कहीं और किसी-न-किसी रूप में उनको प्रश्रय देने का काम कर रहा है, इसलिए भी आतंकवाद बढ़ रहा है। सरकार से हमारा अनुरोध है कि इस तरह के कारणों का पता लगा कर, इसका भी निवारण करने की जरूरत है।

महोदय, खुफिया तंत्र की निष्क्रियता का प्रतिफल भी आतंकवाद को बढ़ावा देना है। अत: मैं सरकार से निवेदन करता हूं कि खुफिया तंत्र को और सक्रिय तथा मजबूत बनाया जाए, क्योंकि बार-बार यह होता है कि जब घटना घटित हो जाती है, तो कौन-से आतंकवादी संगठन ने घटना धटित करने का काम किया, हमारा खुफिया तंत्र उसका तो पता लगा लेती है, लेकिन हमारा मानना है, सरकार से हमारा निवेदन है कि खुफिया तंत्र को इतना मजबूत करना चाहिए कि क्यों न घटना के घटित होने से पहले ही ऐसे आतंकवादी संगठनों का पता लगाकर उनके नापाक इरादों को, उनके षड्यंत्रों को रद्द कर दिया जाए और उनके हौसले को पस्त किया जाए। इस तरह खुफिया तंत्र को तेज करने की जरूरत है।

महोदय, मैं समझता हूं कि यदि इन कारणों का निवारण किया जाए, तो देश से आतंकवाद का सफाया भी किया जा सकता है। इन्हीं शब्दों के साथ, मैं अपनी बात समाप्त करता हूं। धन्यवाद।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Shri Praveen Rashtrapal. You have five minutes.

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL (Gujarat): Sir, in fact, I had planned to speak in great detail. But, now, because of the time constraint, I have decided to restrict myself. At the same time, I want to clear many misgivings given by the Opposition Party. As has been rightly discussed by some of my colleagues, let us not blame a particular community for terrorism. Sir, terrorism now is a universal phenomenon and even if we restrict to our own country, in the recent past, we had very bad experience in the city of Delhi, then in Varanasi, and, lastly, in the blasts which took place in the financial capital of our country, that is, Bombay. As very rightly pointed out by Dr. P.C. Alexander, who was the Governor of the State of Maharashtra in the past, Bombay has faced two very worst calamities, one on the 12th March, 1993...(*Interruptions*)

SHRI MANOHAR JOSHI (Maharashtra): Sir, I would request the hon. Member of say 'Mumbai' and not 'Bombay' because the name has been changed.

श्री उपसभापति: मुंबई बोलिए, बंबई नहीं।

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: All right. It is a very small mistake. I mean, let us tolerate.

SHRI MANOHAR JOSHI: It is not a small mistake. It hurts the sentiments of the entire State of Maharashtra.

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: Whenever I say, Bombay, it should be understood as Mumbai. ...*(Interruptions)*....

श्री उपसभापति: नाम मुंबई है, तो मुंबई बोलिए।

श्री मनोहर जोशी: बोलना ही चाहिए, सर। अच्छा लगता है। ..(व्यवधान)

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: Sir, I may inform my hon. colleage Shri Manohar Joshi that I am also a Mumbaikar. I took my college education in Mumbai, I stayed in Mumbai and that too in Shivaji Park,

Dadar where his good self, is residing and where the great leader of his party is taking frequent meetings and misdirecting the people all over the country. So, I am proud of Mumbai. I am very much concerned but let us take this opportunity also to congratulate the people of Mumbai, to congratulate the people of Delhi and also to congratulate the people of Varanasi because in spite of very severe bomb blasts—in which lot of people lost their lives, a lot of people suffered injuries—they did not lose their courage. We know what happened in Mumbai. Nearly 200 people died and more than one thousand people were injured. Sir, our Minister who is in the Government right now, Shri Murli Deora, in spite of being a Minister, has written a letter to the Railway Minister that the compensation of Rs. 50,000/- which is likely to be paid by the Ministry of Railways, will not be sufficient for those who have lost their limbs, as they are likely to remain unemployed throughout their life. Sir, we are very much concerned but, at the same time, we congratulate them for their courage, I mean, the way in which all passengers were trying to help each other. At that time, they forget whether they were Hindus or Muslims. If they could forget whether they are Hindus or Muslims, why are we, the Members of this House—which is not an ordinary House, this is the Upper House—not forgetting whether we are Hindus or Muslims.

Sir, a very incorrect suggestion was made by one of the Members that the Maharashtra Government should publish the names of those who have been arrested during the course of the investigation so that we could know to which community they belonged to. I say that this is highly objectionable. That way, I will request, let the Government of India publish the names of those who have taken loans worth crores of rupees from the banks and not paid, so that I could know to which community they belonged to. I want to know the religion of those who are blackmarketers; I want to know the religion of those who are hoarders; I want to know the religion of all those who have been arrested in Delhi in the past five years, who have raped innocent women in the colleges, in the parks. I want to know their religion. Where are we heading for? A criminal is a criminal. An offender is an offender. He may belong to any religion. Just half-an-hour ago, there was a discussion...*(Interruptions)* Please don't interfere...*(Interruptions)*... No, Sir. I am not addressing him. I am addressing you.

श्री उपसभापतिः राष्ट्रपाल जी, वह बैठकर बात कर रहे हैं, You don't take... (*Interruptions*)

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: It's all right. Right now, one Member interpreted what is *Jaish-e-Mohammed,* Jaish means war, so it means fighting for *Mohammed.* If one can object to that name, I can object to the name of Shiv Sena. Why do we require Sena in India? We have got Indian Army. How can there be *Bajrang Dal*? How can he object for such names? They have kept it, its all right. It is their name. In India, we have got the *Durga Vahini;* we have got the *Bajrang Dal;* we have got the Shiv Sena; and we have got the *Trishul Sena.* Are they not objectionable names? To me, they are objectionable, *(Interruptions) (Time-bell)* But they have kept them.

SHRI MANOHAR JOSHI: Sir, he is referring to a party.

श्री उपसभापतिः राष्ट्रपाल जी, आप पार्टी पर मत जाइए। (*Interruptions*) It is a recognised party. (*Interruptions*)

SHRI MANOHAR JOSHI: ...take the names of all those who are involved in criminal matters. (*Interruptions*) I have asked the hon. Minister to give the names of those who are involved in the Mumbai bomb blasts and arrested. (*Interruptions*) There is nothing wrong in it, Sir.

श्री उपसभापतिः आप बैठिए।

SHRI MANOHAR JOSHI: I will take the history of all the bomb blasts... (*Interruptions*) And it is very unfortunate... supporting that. (*Interruptions*) It is because of your support. (*Interruptions*)

श्री प्रवीण राष्ट्रपालः हम भी मुम्बई में रहे हैं। आपसे तो कभी नहीं डरूंगा, शिव सेना से तो कभी नहीं डरुंगा। ..(व्यवधान)..

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You know it is a political party. (*Interruptions*)

SHRI MANOHAR JOSHI: He has no business to take the name of a party. (*Interruptions*) ...history of the Congress Party. (*Interruptions*)

श्री धर्म पाल सभ्रवालः जोशी जी का भी भाषण हमने सुना, इन्होंने ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापतिः आप बैठिए।

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: Now, Sir, I am going to a very correct quotation from an article written by a resident (Asghar Ali Engineer) of Mumbai. I quote, "Interestingly, Gandhiji's concept comes very close to the Quranic teaching of truth and patience as enshrined in chapter 103. It is a great shame that the so-called jehadis are committing such dastardly acts of violence in the name of Islam. Nothing can be more un-Islamic than these horrifying inhuman acts."

The author goes further, and I quote. "The Prophet when asked what is jehad, is reported to have said that the best form of jehad is speaking truth in the face of a tyrannical ruler." See what is the correct meaning of jehad as answered by Hazrat Mohammad Paigambar Sahab. He further says, and I quote, "Here the so-called jehadis themselves are tyrannical and it is needed to speak plain truth in their face. They need to be told that what they are doing is tyranny against innocent people." The bombs planted in the Western Railway from Mumbai to Bhayandar were not planted to kill aggressors. Those passengers have not committed any offence. The travellers are travellers. They do not belong to any community or any religion. They have not done anything wrong to that particular terrorist. But it was done. It is against Islam; it is against any religion. That is what is written in *Quran-e-Sharif.* That is what is written in the *Ramayana;* that is what is written in the *Mahabharata;* and that is what is written in the *Vedas.* Even in the *Ramayana* and the *Mahabharata* rules for war are given. That after sunset, there should not be any war. That when your enemy is not armed, you should not attack him. These are the rules in our Hindu soriptures. You read any book. You read the *Ramayana*, you read the *Mahabharata*, you read the *Kalpasutra*, you read the *Dhammasutra,* or the *Dhammapitaka*, nowhere sanction is given for war; nowhere sanction is given for killing innocent people. I am going to talk about this issue in the coming days. Some reference was made to our Bhartiya Sanskriti. I don't want to go into what was *Bhartiya Sanskriti* 150 years ago; how the *Bhartiya Sanskriti* were treating untouchables in this country; how the *Bhartiya Sanskriti* were treating the widows in this country.

श्री उपसभापति: प्रवीण जी, आप कन्कलूड कीजिए।

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: And how the *Bhartiya Sanskriti*

were celebrating the child's birth. (*Time-bell*) So, let us not go into that discussion. If you come down to this particular issue of terrorism, I would request the Government of India to distinguish between the terrorist activities by outsiders, those who are foreigners, and insiders. I mean we must try to find out how we can prevent such incidents. Police will come only after the incident. Right now, the Maharashtra Police is doing the investigation. Give them proper time. Everyday, they are arresting somebody. Don't disturb them. That is my request. Today, it is the Congress Government; tomorrow, it will be the BJP Government. I do not hope. But, we will have to argue like that. Tomorrow, it will be any party's Government. The police is the agency which is investigating a very serious blast. Let us not disturb them. Sir, if there is terrorism from outsiders, there is terrorism from insiders also. Then, in our country, we should try to find out (*Time-bell*) how many terrorist attacks took place...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude because there are a number of speakers.

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: Sir, I am only making some points.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude. You have already taken seven minutes against your five minutes.

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: I know, Sir. How many terrorist attacks took place in India prior to Babri Masjid demolition? How many terrorist attack took place subseqent to Babri Masjid demolition? Let us try to find out. How many terrorist attacks took place prior to Gujarat riots? Let us see together and analyse.

Now, when we talk about international border we think only of Pakistan. But we have international border with Nepal, we have international border with Bangladesh and infiltrators are not coming only from Pakistan border. I request the Government of India to take a serious note of this information. Now, when we talk of border States, we think only of Kashmir. Punjab is equally a border State; Rajasthan is equally a border State; Gujarat is equally a border State; and on sea route, all our Arabian Sea and Maharashtra. West Bengal has got international border by sea route. Sir, I have this experience because I was elected from Patan district which is very close to Pakistan border. (*Time-bell*)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude, please conclude. I have to call the next speaker.

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: It is only twenty kilometres. Infiltrators may come. Sir, the police of these States...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Kumari Nirmala Deshpandeji.

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: The police of Gujarat, Rajasthan, Maharashtra and Punjab (*Time-bell*) may be given sufficient instruments, sufficient arms and ammunition, sufficient feedback of Intelligence Bureau to stop the incoming outsiders and terrorist activities. Where this RDX is coming from? It is coming by land route only.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude. I have already called the next speaker.

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: Yes, Sir. Sir, I am going to conclude, but, Sir, because they made frequent references...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no. There is no time for your answering all the references. Make your point and conclude. I think you have made your point. Please allow other speakers also.

SHRI PRAVEEN RASHTRAPAL: Okay, Sir. Sir, I request the Government of India to give one particular information to this House that if there is a disaster management scheme at the Central level and the State level whether during these types of events, untoward event like Mumbai-blast, that disaster management structure of the Central Government and the State Government started working within half an hour or one hour of the event or not. That information may be given and if there is no disaster management for such blasts, such an agency may be created in all sensitive areas in our country. With these words, I conclude. Thank you, Sir.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Thank you. Now, Kumari Nirmala Deshpande.

कुमारी निर्मला देशपांडे (नाम-निर्देशित): उपसभापति महोदय, हमेशा आप ही मुझे समय देते हैं, इसलिए सबसे पहले मैं आपका शुक्रिया अदा करना चाहती हूं।

इस विषय पर पूरे सदन के सभी सदस्यों ने जिस तरह अपनी शोक संवेदना प्रकट की, साथ ही मुम्बई के निवासियों के धीरज की सराहना की, उसमें मैं भी शामिल होना चाहती हूं, लेकिन

कुछ चन्द बातों के लिए मैं निवेदन करना चाहती हूं, जिस ओर ध्यान देना बहुत जरुरी है। सबसे पहली बात तो यह है कि यह जो आतंकवाद है या हिंसा है, इन सब का मुकाबला केवल पुलिस या सेना से अथवा कोई कानून बनाकर नहीं हो सकता है। मुझे रामायण की एक कहानी याद आती है कि जब हनुमान जी लंका जा रहे थे, तब सुरसा नाम की एक राक्षसी उन्हें निगलने के लिए खड़ी हो गई। हनुमान जी ने अपना रुप दुगुना कर दिया, तो सुरसा ने अपना रुप चौगुना कर दिया, हनुमान जी ने आठ गुना किया, तो सुरसा ने सोलह गुना कर दिया। फिर हनुमान जी को एक बात ध्यान में आई कि इससे सुरसा का विनाश नहीं हो सकता है। इस बारे में तुलसी दास जी लिखते हैं कि–''अति लघु रुप धरे हनुमाना।'' फिर हनुमान जी सुरसा की एक नाक के सुराख से भीतर गए और दूसरी से वापिस आए और इस तरह सुरसा की हत्या हो गई। बात यह है कि आतंकवादी इतने सॉफेस्टिकेटेड वेपंस लेते हैं तो हम दोगुने लें। वे चौगुने लेते हैं तो हम आठ गुने लें, इससे कुछ होने वाला नहीं है। हमको इससे भिन्न प्रक्रिया को अपनाना होगा और वह भिन्न प्रक्रिया है डॉयलोग की, बातचीत की, लोगों के दुख सुनकर उसको मिटाने की और इसी सिलसिले में मैं कहना चाहती हूं कि पहली बात जो मुझे निवेदन करनी है कि किसी भी एक समुदाय का नाम लेना गलत है। गुजरात के दंगों के बाद मैं अमेरिका गयी थी। वहां लोग पूछते थे कि क्या हिन्दू ऐसे आतंकवादी होते हैं जिन्होंने अहसान जाफरी की क्रूर हत्या की। मैं कहती थी–नहीं, हिन्दुस्तान के लोग बहुत अच्छे हैं, चंद लोग गलत हैं। इसी तरह हम भी आज इस चीज की तरफ ध्यान दें कि किसी भी समुदाय में चंद लोग गलत हो सकते हैं लेकिन समुदाय का नाम लेना बहुत गलत है। हमारे हिन्दुस्तान की ताकत ही इसमें है कि सब धर्मों के लोक एक साथ रहते हैं और ताकत इसी में है कि इंडोनेशिया के बाद दूसरा सेकेंड लार्जेस्ट मुस्लिम पोपुलेशन हिन्दुस्तान में है। यह हम गर्व के साथ कहते हैं। इसलिए हमारे अपने ही भाई-बहनों के बारे में संदेह प्रगट करना देश की एकता के लिए खतरा है। दूसरी बात मुझे निवेदन करनी है कि यह जो दूसरा तरीका है इससे मुकाबला करने का उसकी तरफ क्यों नहीं हम ध्यान देते और उसकी अलग-अलग क्या बातें हो सकती हैं इसकी खोज करने की ओर क्यों नहीं ध्यान दिया जा रहा है।

मैं यह भी कहना चाहती हूं कि मुम्बई में धमाके होने के बाद तीन घंटे के अंदर मीडिया ने कहना शुरु कर दिया कि पड़ौसी का हाथ है। क्या इसका हमको कोई सबूत मिला था? क्यों पड़ौसी का हाथ है यह हम मान ही लेते और मैं पूछना चाहती हूं कि क्या हम जानते नहीं हैं कि जो आतंकवादी तत्व हिन्दुस्तान पर हमला करते हैं उन्हीं आतंकवादी तत्वों ने पाकिस्तान के राष्ट्रपति पर दो बार ऐसा हमला किया कि बस बाल-बाल ही बच पाए। तो वे जो तत्व हैं वे सब के खिलाफ काम करते हैं। इन तत्वों का मुकाबला सब को मिलकर करना चाहिए और इसीलिए मेरी यह गुजारिश है कि भारत और पाकिस्तान के बीच जो पीस प्रोसेस है, शांति प्रक्रिया है इसको तेजी से आगे बढ़ना चाहिए। मसले का हल या तो जंग से हो सकता है या बातचीत से हो सकता है और हम

लोगों ने जो नारा कुछ दिनों से दिया है कि मसले का हल गोली से नहीं बोली से हो। तो बोली से हल तभी हो सकता है जब हम बातचीत करने के लिए टेबल के दोनों ओर बैठते हैं। यह भी चाहे कश्मीर में हो, चाहे मुम्बई में हो, चाहे वाराणसी में हो, जो कुछ हो रहा है यह गलत हो रहा है। इसी तरह चाहे कराची में बम ब्लास्ट हो, चाहे उनके सदर साहब पर हमला हो, वह भी गलत है। इन सब गलत तत्वों का मुकाबला हम मिलकर कैसे कर सकते हैं, यह तरीका हमको अपनाना होगा और दुख के साथ कहना पड़ता है कि हर बार पाकिस्तान का नाम लिया जाता है। क्या आपको पता है कि पाकिस्तान में कितनी मीटिंग्स हुईं मुम्बई के धमाके की निंदा करने के लिए, कितनी शोक संवेदना प्रगट की हैं, कितने लोगों ने अपनी भावनाएं प्रगट की हैं। हिन्दुस्तान के मीडिया में इसका कोई जिक्र ही नहीं, इसलिए हमको मालूम नहीं होता। लेकिन मैं कहना चाहती हूं कि मेरे पास कितने सारे टेलीफोन आए यह कहने के लिए कि हम आपके साथ हैं। पाकिस्तान की एक अपोजिशन पार्टी की बैठक इंग्लैंड में हो रही थी। वहां के कई एम॰ पी॰ज॰ ने फोन करके कहा कि हम यह प्रस्ताव पास करते हैं कि हम आपके साथ हैं, हमको आपको मिलकर इस आतंकवाद का मुकाबला करना है, यह कहा है। लेकिन दुर्भाग्य से हमारे मीडिया का ध्यान किसी भी अच्छी चीज की तरफ जरा कम जाता है। और दूसरी चीज़ की तरफ कुछ अधिक जाता है इसलिए मीडिया से भी मेरा निवेदन है कि जो भी अच्छे काम हो रहे हैं, जहां भी हो रहे हैं, उन सबके प्रति मीडिया को ध्यान देना चाहिए। काशी के, बनारस के, संकटमोचन मंदिर के जो प्रमुख पुजारी हैं, उन्होंने किस तरह काशी नगरी को बचाया, उसकी कितनी जानकारी हमें मिली है? उन्हें तो कोई भी पुरस्कार दें, वह कम ही होगा–इतना बड़ा काम उन्होंने किया। इसलिए अंत में मेरा यही निवेदन है कि इस समस्या का हल पुलिस बढ़ाने से, सेना बढ़ाने से या हिंसा की ताकतों को बढ़ावा देने से नहीं होगा। इसका हल होगा–बातचीत से, अहिंसा और शांति के तरीकों की खोज करने से, और पड़ोसी के साथ बैठकर इस समस्या का हल निकालना संभव होगा। अंत में अपनी बात फिर दोहराते हुए मैं कहना चाहती हूं कि गोली से कोई मसला हल नहीं हो सकता, मसला हल होगा, बोली से। धन्यवाद। जय जगत।

श्री अवनि राय (पश्चिमी बंगाल): धन्यवाद उपसभापति महोदय, मुम्बई की उस दिन की घटना पर सभी मुम्बईवासियों ने मिल-जुलकर, सभी धर्मों की जनता ने एक साथ होकर सबको बचाया, अस्पताल पहुंचाया और उसके बाद पूरे शहर में जिस शांति की श्रृंखला के साथ उसको निभाया, उसके लिए मैं सबको धन्यवाद देता हूं। मुम्बई की यह घटना एक दुखदायी घटना है। घटना रेलवे के डिब्बे में घटी और रेलवे के डिब्बे में जब यह घटना घटी तो उसके बाद लगातार एक के बाद एक स्टेशन पर घटती जा रही थी हमारे वहां की जो एजेंसीज़ हैं या खुफिया तंत्र है, उनको जितनी क्षमता के साथ काम करना चाहिए था, उसमें कहीं कुछ कमी है। साथ ही साथ रेलवे ऐसी जगह है, जहां पर यह घटना घटी थी, उसमें कोई खुफिया तंत्र नहीं

3.00 P.M.

है। या तो जीआरपी के ऊपर उन्हें डिपेंड करना पड़ता है या आरपीएफ के ऊपर। इतना बड़ा ट्रांसपोर्ट का सिस्टम, जो हमारे भारत में एक प्रांत से दूसरे प्रांत तक लोगों को लेकर जाता है, उस रेलवे के अंदर कोई न कोई घटना घटती रहती है–कोई डकैती पड़ती है, कभी रेप केस होता है, कभी मार-पीट हो जाती है। ऐसी स्थिति में मैं महसूस करता हूं कि रेलवे में भी ऐसा कोई खुफिया तंत्र होना जरूरी है जिससे वह भी पता करे कि क्या हो रहा है, क्या नहीं हो रहा है। केवल दो दिन के लिए वहां चैकिंग लगा दी और दो बक्से देखे, इससे काम नहीं चलने वाला है, बल्कि ट्रेन के डिब्बों को भी देखना चाहिए, नहीं तो ऐसी घटनाओं से हम पैसेंजर्स को नहीं बचा पाएंगे। हमारे हर प्रांत का मैं इसलिए कह रहा हूं कि जहां जहां यह घटना घटती है, वहां भी इसमें कुछ भाग लेना चाहिए, हिस्सा लेना चाहिए। इसमें रेलवे की एक कमी है। दूसरी बात यह है कि हमारे गृह मंत्रालय के जितने विभाग हैं, उनमें भी थोड़ा सा सुधार करना चाहिए और राजनीतिकरण कम करना चाहिए। मैं यह इसलिए कह रहा हूं कि हमारे देश में खबर जो है–जब इंदिरा गांधी जी की हत्या हुई थी तो हत्या के बाद पता चला कि कुछ खबर हमारे पास थी। इसी प्रकार राजीव जी की हत्या हुई और उसके बाद एक के बाद एक, इस तरह की घटनाएं घटती जा रही हैं–कभी गुजरात में, कभी अयोध्या में, कभी बनारस में, कभी मुम्बई में। मुम्बई में तो कई बार इस तरह की घटनाएं घट चुकी हैं। लेकिन घटना घटने के बाद हम किसी को पकड़ लेते हैं और किसी एजेंसी को बोल देते हैं कि यह इस घटना के लिए जिम्मेदार हैं। वाकई है या नहीं, हमें नहीं मालूम। जिसे पकड़ रहे हैं, वह भी ठीक है या नहीं, यह भी नहीं मालूम–कभी कभी इनोसेंट आदमी भी पकड़े जाते हैं। इस प्रकार इस चीज़ को अगर हम ढंग से नहीं देखेंगे, तो जिस घटना की हम निन्दा कर रहे हैं, केवल उसकी निन्दा से कुछ नहीं होगा, अगर हम ठीक ढंग से व्यवहार करके इसको पहले से बंद नहीं कर सके या इसके लिए कार्यवाही न कर सके। माननीय गृह मंत्री ने उस दिन एक प्रश्न के उत्तर में कहा था कि 299 टेररिस्ट्स हमारे देश में पहुंचे हैं– यह बयान दिया था। अब ये 299 टेररिस्ट्स जो यहां पहुंचे हैं, कहां से पहुंचे, कैसे गिने गए, किसने गिना और ये अब 299 कहां गए? अब अगर ये 299 टेररिस्ट्स यहां पहुंचे हैं, यह खबर हमारे पास है, तो ये कहां-कहां पहुंचे हैं, यह खबर भी होनी चाहिए। इनका किसके साथ मेल-जोल है, यह भी खबर होनी चाहिए। इसके ऊपर कौन नज़र रख रहा है, इसके ऊपर भी ध्यान देना चाहिए।

महोदय, हमारी जो पुलिस फोर्सेज यहां हैं, मनोहर जोशी जी ने कहा कि हम चीफ मिनिस्टर थे, मुम्बई के बारे में हमें जानकारी है, तो चीफ मिनिस्टर थे वहां के, उसके बाद उनकी सरकार भी यहां थी, मैं उनसे अगर यह कहूं कि मुम्बई के लिए जब आपको पता है कि यह घटना घटती है और घटती जा रही है, तो आपने वहां के लिए क्या ठोस कदम उठाए? 40,000 पुलिस फोर्स है, यह उन्होंनें बताया और अगर मैं इनसे पूछूं कि इस 40,000 पुलिस

फोर्स में वी.आई.पी. की सुरक्षा कितने लोग करते हैं, खुफिया एजेंसियां जो वहां हैं, वे क्या काम करती हैं, किस-किस के पीछे लगे रहते हैं? किसके लिए? हमारे बचाव के लिए? वी. आई.पी. को बचाने के लिए या जनता को बचाने के लिए? अगर उनकी कमी है, तो हमने उनकी भरती क्यों नहीं की? हमने उनकी संख्या बढ़ाई क्यों नहीं? तो हर जगह की जो प्रॉब्लम है, मेरा ख्याल है कि पुलिस फोर्स को उसी ढंग से बढ़ाना चाहिए और चाहे मिलिटरी फोर्स हो, पैरा-मिलिटरी फोर्स हो, इनको एक ट्रेनिंग देनी चाहिए कि ऐसे हादसों में वे क्या काम करेंगे? या हादसे घटने से पहले, जो भी हो। जैसे इस मामले में खबर आई कि इस बारे में भी खुफिया एजेंसी को कुछ जानकारी थी। तो जानकारी अगर थी, यह खबर बाद में हो या पहले, खबर जब आती है, तो हमारे गृह मंत्रालय, दोनों, केंद्र के हों राज्य के, दोनों में कहीं कम्युनिकेशन या सहयोग का अभाव है, क्योंकि देश बहुत बड़ा है और इतनी घनी जगह जो है, मुम्बई जैसी घनी जगह है, जहां पर खास तौर से ट्रेनें इतनी भरी हुई होती हैं कि उनमें किसी का मूव करना मुश्किल होता है। अगर कहीं पर कुछ पड़ा भी हो, तो उसको निकालना भी मुश्किल होता है। इसीलिए अगर हमारे ये फोर्स तत्पर नहीं होंगे, गृह मंत्रालय और गृह मंत्रालय के साथ जो हैं, राजनीतिकरण कम हो और राजनीतिकरण के लिए ये चुपचाप बैठ जाते हैं, निष्क्रिय हो जाते हैं या काम नहीं करते हैं और अगर काम न करें, तो ऐसी एजेंसी का कोई मतलब नहीं है। सीधी बात यहां है, और पुलिस फोर्स को उसी ढंग से लगाया जाए, किसी की सुरक्षा के लिए नहीं, पहले देश की सुरक्षा करें, देश की रक्षा करें। व्यक्ति को रक्षा की आवश्यकता है या देश की जनता की रक्षा की आवश्यकता है? अगर देश की जनता की है, तो मैं मानता हूं, भले ही मंत्री महोदय हों या वी.आई.पी. हों, इन सबको पहले कहना चाहिए कि हमें नहीं चाहिए, आप जनता के लिए पहले काम करो। एक को बचाने के लिए इतनी बड़ी फोर्स लग जाएगी, यह हम सोचते हैं। यहां हम देश की जनता को बचा नहीं पाते हैं, अपने को बचाने की कोशिश करते हैं, यह हमारे लिए शर्मदायक घटना है, यह घटना नहीं घटनी चाहिए। साथ-साथ मैं यह दरख्वास्त करूंगा कि पुलिस फोर्स हो, खुफिया एजेंसी हो, पैरा-मिलिटरी फोर्स हों, इनकी तनख्वाह को भी देखा जाए, इनकी डयूटी भी देखी जाए और इनको सही ढंग से इस्तेमाल किया जाए, ट्रेन-अप किया जाए कि कैसे वे काम कर सकते हैं?

मैं रेलवे मंत्रालय को भी कहता हूं कि रेलवे के हों या कोई ट्रांसपोर्ट कंपनी हो, उनको भी यात्रियों की सुरक्षा के लिए, बहुत ट्रेनिंग होनी चाहिए। वह नज़र उनके अंदर होनी चाहिए कि कहीं पर ऐसी घटना न घट जाए कि हमारे जो यात्री जा रहे हैं, उनको कोई परेशानी हो या उनका देहांत हो जाए। बाद में हम बहुत पैसा खर्च करते हैं। संसद में जिस दिन घटना घटी थी, घटने के बाद पार्लियामेंट के अंदर कई करोड़ रुपए खर्च करके मशीनें लगाईं। चैकिंग किसकी होती है? एम. पी. की होती है और यहां पर जो आते हैं, उनकी होती है। हमने बहुत अच्छे ढंग से इसको सजा

लिया, गाड़ी आने पर यह डंडा उठ जाएगा, गाड़ी रुक जाएगी, यहं रुक जाएंगे और उसके साथ-साथ वह सिस्टम भी फेल करता है, वह तो छोड़िए, लेकिन आसपास में नॉर्थ ब्लाक है, साउथ ब्लॉक है, जहां प्राइम मिनिस्टर बैठते हैं, उसके सामने राष्ट्रपति भवन है। अब वहां जब घटना घटेगी, तब कई करोड़ रुपए खर्च करेंगे। तो ऐसा करके हम कोई फोर्ट या किला तो नहीं बना सकते हैं, लेकिन जनता को ठीक ढंग से पालने के लिए, उसकी रक्षा के लिए जो-जो कदम हमें उठाने चाहिए, वह उठवाइए और राजनीतिकरण कम कीजिए। साथ ही साथ मैं ... दरख्वास्त करूंगा कि जितने मंत्री हों, वी.आई.पी. हों, वे अपनी फोर्स को छोड़ दें और जनता की रक्षा करें, धन्यवाद।

श्री दिनेश त्रिवेदी: उपसभापति महोदय, मैंने अभी बहुत से सदस्यों की चर्चाएं सुनीं। कोई हिन्दू के बारे में बोल रहा था तो कोई कहता था कि हम मुसलमान हैं। मैं यहां पर बैठे-बैठे सब सुन रहा था और मुझे दुख भी हो रहा था, साथ ही मैं यह चिंता भी कर रहा था कि एक अच्छा मुसलमान बनने से पहले या एक अच्छा हिन्दू बनने से पहले हमें एक अच्छा इंसान बनना चाहिए। इसीलिए तो किसी शायर ने कहा है कि 'तू हिन्दू बनेगा, ना मुसलमान बनेगा, इंसान की औलाद है, इंसान बनेगा।' मैं यह बात इसलिए कह रहा हूं कि यहां जो आतंकवाद का मुद्दा उठा है, आज हमें इस पर बहुत डिटेल में चर्चा करनी थी, मगर समय का अभाव है। महोदय, मैं आपकी परेशानी को समझता हूं, इसलिए आपकी बात को सिर आंखों पर रखते हुए, मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा। वैसे तो मुझे इस विषय पर कम से कम एक घंटा बोलना था। महोदय, हम इंसानियत की बात कर रहे हैं। हमारे भाइयों ने भी सही कहा है कि ये हमले न हिन्दू करता है और न मुसलमान करता है, यह हमला तो इंसानियत पर हुआ है। इस हमले को कौन करता है, इसको करती हैं राक्षसी शक्तियां। कुमारी निर्मला देशपांडे ने जिक्र किया है, इसलिए मुझे भी याद आया है। उन्होंने रामायण का जिक्र किया कि हनुमान जी ने एक सूक्ष्म रूप लिया और उस राक्षसी शक्ति के नाक के अंदर से गए और दूसरी तरफ से निकल गए। जाहिर है कि हनुमान जी उनसे वार्तालाप तो करने नहीं गए थे। वे तो उनका वध करने गए थे, तो यह वध जरूरी है। यदि राक्षसी शक्ति इंसानियत पर हावी हो जाती है, तब उस राक्षसी शक्ति का अंत करना चाहिए और मुकाबले के साथ अंत करना चाहिए। उनके साथ डॉयलॉग का कोई प्रश्न ही पैदा नहीं होता है। सर, उन्होंने रामायण की चर्चा की है। इसके साथ ही मुझे महाभारत भी याद आ गया कि महाभारत में लड़ाई, भाई-भाई के बीच हुई थी और वह लड़ाई इंसानियत को बचाने के लिए हुई थी। अब, जब पाकिस्तान का जिक्र आया है, तो किसी ज़माने में वह हमारे साथ था और वहां के लोग हमारे भाई थे। यदि इंसानियत को बचाना है और दूसरे मुल्क से हमारे यहां टेरर आता है, तो उसको खत्म करना यकीनन हमारा धर्म है। सर, यह कोई अखबारों की बात नहीं है कि चंद अखबारों ने लिख दिया कि यह जो आतंकवाद है, यह पड़ौसी मुल्क से आ रहा है। सर, हमारे प्रधानमंत्री जी ने यह कहा है। हिन्दुस्तान

जो इस दुनिया की सबसे बड़ी जम्हूरियत है, जब हिन्दुस्तान के प्रधानमंत्री बोलते हैं, तो उनके एक-एक लफ्ज मे वजन होता है और वे कोई बात ऐसे ही नहीं बोलते हैं। जब पूर्व में श्री अटल बिहारी जी प्रधानमंत्री थे, तब हमने बहुत कोशिश की थी कि शांति से समस्या हल हो। अभी जैसा कि निर्मला जी ने भी कहा है कि 'गोली से नहीं बोली से' बात हो। हिन्दुस्तान में आज तक तारीख गवाह है कि कभी किसी पर अटैक नहीं किया,बोली तो हमारी संस्कृति है। मगर जब वे बोली को लाचारी समझते हैं और जब राक्षसी शक्तियां इंसानियत पर हावी होती हैं, तब मैं दोबार कहना चाहूंगा कि रामचन्द्र जी जो कि मर्यादा पुरूषोत्तम या मर्यादा पुरूष कहलाते हैं, उन्होंने भी रावण का वध करने के लिए धनुष बाण हाथ में उठाया था और रावण का वध किया था, इसलिए मामला बहुत साफ है। उपसभापति महोदय, मैं यह भी कहना चाहूंगा कि हम जिस दौर से गुज़र रहे हैं, वह एक बहुत ही नाजुक दौर है। So, I am not standing here to blame one or the other because that does not serve the purpose. हम सब एक ही नाव में सफर कर रहे हैं और उस नाव में छेद होगा, तो हम सबका अंत होगा, किसी का पहले, किसी का बाद में। हमें यह देखना है कि कोई हमारी तरफ बुरी नज़र से बिल्कुल न देखे। आज National Security Advisor की बात का जिक्र हुआ, हमने भी वह इंटरव्यू सुना और उसमें उन्होंने बड़ी गंभीर और चिंताजनक बात कही है। मैं उस बात को बहुत ही गंभीरता से लेना चाहूंगा और मुझे इसमें कोई शक नहीं है कि सरकार भी उसको सीरियसली लेगी। उन्होंने क्या कहा? उन्होंने कहा कि this is a design for something more serious. उन्होंने यह भी कहा, जिसका मतलब होता है कि this is the tip of the iceberg.– मतलब यह कि उनके इरादे इतने नापाक हैं कि जहां पर हिंदुस्तान के atomic installations, scientific areas, economical base हैं, यहां तक कि हमारे जो Icon कहलाते हैं, उनको भी नहीं छोड़ेंगे। इस तरह यह मामला कुछ ज्यादा ही गंभीर हो जाता है। इसलिए मैं चाहूंगा कि सरकार, जैसा मैंने कहा कि चाहे वह किसी भी पार्टी की सरकार हो, जब हम इस पार्लियामेंट में खड़े होकर बोलते हैं, तो सबको एक ही विश्वास होता है कि सरकार चाहे किसी की भी हो, पूरा मुल्क एक है, उसमें मज़हब का कोई सवाल कभी आता ही नहीं है। सरकार, सरकार होती है और मुझे बिल्कुल भी शक नहीं है कि यह सरकार आतंकवाद का मुकाबला करने में पूरी तरह सक्षम है और यह आतंकवाद का मुकाबला करेगी, मगर दुःख की बात यह है कि unfortunately, Sir, when we talk about this Parliament; or the Lok Sabha, we need to be a little more tolerant, and, especially, this House, Sir. But, what has become is, as if all these blasts have become so routine that a blast takes place at one place or the other, the hon. Home Minister of whichever Government comes, gives the reply. We discuss here, the matter ends till unfortunately, God forbid, there is a next blast. I personally feel that the matter needs to be addressed in a

more serious manner. and, that is why, sir, I just want to touch upon—I am not trying to join issues here—that when we left behind the discussion on the Mumbai bomb blast and we started taking some other issue, can you imagine a 70-year old lady sitting in Mumbai, who lost her children, wanting to see what the Parliament is going to debate? Instead of that, for whatever be the reason, we started discussion on some other issue. I am not getting into why it was there, at this point of time. Yes, I had asked this question that day as to what was the compulsion. Can you imagine how we have alienated people from the mainstream, and without the support of the people, we cannot fight terror—I definitely agree with what Nirmalaji said—only through the governmental machinery. Sir, this is where I thought that this issue needs to be discussed in a much more serious manner than, perhaps, it is being discussed. Sir, do we realise.... Sir, I will just take two or two-and-a-half minutes.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You observed my finger going near the bell!

SHRI DINESH TRIVEDI: Sir, before it goes near the bell, I am conscious about it. Sir, do we realise that a mafia network is running a parallel Government? I am not talking about just a mafia network. A parallel Government is run by the mafia network! Sir, since I have mentioned this, I would like to read one line from what the Vohra Committee report says,I am not saying this— because terror, whether it is across the border or from wherever it is, terror cannot take place until and unless there are local mafias. It does not matter which community they belong to, they are terrorists. And, if they are supporting the terrorists, then the mafia system, the mafia network is equally involved.

With your permission, I just would like to read 3-4 lines from the Vohra Committee report. It says, "The DIB has stated that the network of mafia is virtually running a parallel Government, pushing the State apparatus to irrelevance. It is thus the most immediate necessity that an institution be established to effectively deal with this menace. No machinery, to my knowledge, till this day, has been established." Sir, again I would like to read the last two lines. Talking about again the bomb blasts, the Bombay blasts case in 1993—at that time it was Bombay, so it is Bombay here, Joshiji will pardon me, it says and I

quote, "The bomb blasts case and the communal riots in Surat and Ahmedabad have demonstrated how the Indian underworld is exploited by ISI and the latter's network in UAE to sabotage the entire Indian machinery." The reason why I am talking about this is, after the Vohra Committee report came in—I salute my late friend Shri Rajesh Pilot, who had the courage to lay that on the Table of the House and that is why we could discuss it. Sir, I went to the Supreme Court. I wanted to know who those mafias are, because it also says that these mafias come and occupy* (*Interruptions*) That is why I went to the Supreme Court because I wanted to know...(*Interruptions*) I am reading from the Vohra Committee report.

SHRI PENUMALLI MADHU:*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Though it is in the report, it should be removed from the proceedings. (*Interruptions*) That is removed.

SHRI DINESH TRIVEDI: Since he has challenged me, I am reading from the Vohra Committee report. "In certain States like", I do not want to read the name of the States, "these gangs enjoy the patronage of local level politicians, cutting across party-lines and protection of the Government functionary. Some political leader becomes the leader of these gangs, armed Senas and over the years, get themselves elected to local bodies, State Assemblies, and national Parliament."

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That is a general comment.

SHRI DINESH TRIVEDI: Sir, i am just reading from the Vohra Committee report. Sir, I am a responsible Member of Parliament and I know. What I am trying to say is, I went to the Supreme Court. The Supreme Court in their judgement mentioned that there has to be a high-level Committee to monitor not only the Vohra Committee recommendations, to make sure that these kinds of incidents do not take place ever in India.

Sir, I wrote letters to the various Governments including the NDA Government. I have no hesitation in saying that. The last letter I wrote was in 2004 to the hon. Home Minister, Shri Shivrajji, mentioning that this is the Supreme Court order, have you implemented it or not. To the best of my knowledge, till date, this order of the hon. Supreme Court

* Not recorded.

has not been implemented. I would plead to the hon. Minister, during his reply give us some assurance. Otherwise, what will happen? Blast here, blast there, we are taken as a soft State and again we will be unfortunately discussing this. Sir, in conclusion, I will tell you, my hon. colleague mentioned किसी की जान की हिफाज़त है ही नहीं। कौन, कैसे और कहां आतंकवाद का शिकार होगा, कौन कब मर जाएगा, पता नहीं। किसी की भी सुरक्षा नहीं है।

सर, जो लोग मारे गए वे रेल यात्री थे, वे रेल में सफर कर रहे थे। इस सफर से मुझे एक शेर याद आता है मैं वह कहकर conclude करूंगा। कहते है-

"कब टूट जाएगी, कसम ही तो है,
कब बदल जाएगी, नज़र ही तो है,
तू मेरे साथ की आदत मत डाल, ऐ दोस्त,
कब बिछुड़ जाएंगे, सफर ही तो है।"

SHRIMATI HEMA MALINI (Nominated): Mr. Deputy Chairman, Sir, I thank you very much for giving me this opportunity. Being a Mumbaikar myself, I am very emotionally involved because it is my city, which is affected. So, I would like to let you all know what I feel about this tragedy.

[THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI) in the Chair]

We never seem to learn from past experiences. This is a sad fact that has emerged after the recent bomb blasts on the Mumbai locals that went off with so much precison. These serial blasts have caused immense harm to human life and property. While much tall talk is going on about the great resilience of the Mumbaikars and all the TV channels vied with each other to be first one on the scene of the disaster, is anyone bothering to condemn our security systems that have let us down yet again so miserably? Is anyone sparing a thought to the hundreds that have lost their only breadwinners or to those many young lives who were just on the threshold of their career?

Why is it that Mumbai, a city that literally is the business and economic hub of our country, repeatedly attacked, a city that is so culturally rich, so full of achievers like Ratan Tata and Aditya Birla, famous film personalities, eminent sports personalities, successful business houses, such a cosmopolitan loving city that throws open its boundaries to

everyone? Why is it that when it comes to situations like this, nothing is done to prevent such tragedies from happening? A city that prides itself on hard work, Mumbaikars are forced to pick up the threads and resume their lives. Do people understand how much effort is required to go on with life in the aftermath of such tragedy? It is true that many concerned people have come forward with contributions and donations. I am myself going to perform in a fundraiser to help the victims. But will all this bring back the lost lives? Will it alleviate the terrible loss suffered by the surviving family members? Is it going to lessen the trauma that will haunt them all their lives?

It is not that India is a lone country to be thus targeted by these subhuman terrorists who have no regard for human life. Look at the United States. After 9/11, they have consciously spruced up their security and taking good care that unwanted elements with harmful intentions do not enter their country. Should we not have taken a cue from them? The newspapers, both yesterday and today, are full of the number of tourists of different nationalities who have simply melted into our country and cannot be traced. Pakistani and Bangladeshi nationals top the list. What is our security system doing about this? Some of these may have been responsible for the blasts in Mumbai. Is it not the Government's duty to ferret out these possible anti-social elements and throw them out of our country? There are reports that the Maharashtra State Police force was alerted about the possible terror attacks. In spite of this warning the terror attackers have not been arrested as was done in the case of the RSS office at Nagpur. There is total lack of intelligence sharing. Even now, going by the revelation of some of the arrested terrorists, one likely target is some of the vital installations like the BARC. The Maharashtra Government was spending sleepless nights to prevent a disaster waiting to happen. In all developed counties, they have CCTV and other advanced technologies in trains and railway stations. The State Government could have taken preventive measures. At least now the Railway Ministry should immediately install CCTV in all stations and post security personnel in trains equipped in the communication system. There are reports that the DG, Maharashtra Police and the RPF are blaming each other trying to fix the responsibility for taking preventive action. This will not satisfy the people of Mumbai. The only solution is to bring back POTA or enact another legislation in its place to deal with terrorism

more firmly. The office of claim set up by the Railway authorities is in Churchgate. It is a great inconvenience for people to commute. Similar offices should be set up in Bandra and Borivali Station to help the families of those killed and wounded. Should not a country like ours which shares boundaries with so many nations on allsides see to it that we are not thought of as vulnerable and easy targets? Our existing security systems have allowed the Mumbai blasts to happen. Let there not be any more laxity. Terrorists are people with no hearts. They do not care for innocent human lives. Let us teach them a lesson they will not forget in a hurry. Let us all join together, burying all our differences and rise as one nation to deal with situations like this. Let there be no more lives lost in meaningless bombs blasts where the perpetrators are allowed to get away with their misdeeds. Let us reach out to all those victimised. Let us pay a tribute to those who have died and we can do this by seeing to it that we prevent such tragedies from happening in the future.

श्री विजय जे॰ दर्डा (महाराष्ट्र): महोदय, मुझे बोलने का मौका देने के लिए आपका धन्यवाद।

महोदय, सर्वप्रथम मैं इस देश में आतंकवाद के शिकार हुई सभी भाइयों, बहनों और बच्चों को अपनी ओर से श्रद्धांजलि देता हूं। उनके परिवार के दुख में हम सब उनके साथ हैं। मैं यह भावना व्यक्त करते हुए मुंबई की तमाम जनता के प्रति आभार व्यक्त करता हूं, जिसने बहादुरी से इन हादसों का सामना किया और इस देश में बहादुरी की एक मिसाल कायम की। उनके धैर्य और उनकी सूझ-बूझ ने आतंकवादियों के इरादे नाकाम कर दिए। मैं मुम्बई को सलाम करता हूं और कहता हूं-सलाम मुम्बई।

महोदय, किसी भी देश को कमजोर करना हो, तो सबसे पहले उसकी संस्कृति और उसकी आर्थिक रीढ़ को कमजोर करों। इसके बाद उसे भयभीत करो, उसे डरा दो और जाति, धर्म का सहारा लेकर कम्युनल दंगे-फसाद करा के उस देश को आतंकित करो। मुम्बई की जनता ने इससे बचने के लिए अपनी सूझ-बूझ का परिचय दिया। मैं चाहूंगा कि इस देश की जितनी भी पोलिटिकल पार्टीज हैं, नेशनलपार्टीज और रीजनल पार्टीज, उन्हें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमारे देश का अगर कोई महत्वपूर्ण थ्रेड है, तो वह हमारा सेक्युलरिज्म है। हम इस सेक्युलरिज्म के बदौलत ही पूरे विश्व में जाने जाते हैं, हमारी सराहना होती है और हमारा सम्मान होता है। मुझे इस बात का दुख है कि जिस व्यक्ति का मैं बहुत आदर-सम्मान करता हूं, जो मेरे पिताजी के मित्र रहे हैं, जिनको हम लोग सर के नाम से बुलाते हैं, जिनका नाम श्री मनोहर जोशी जी है, जो महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री रहे हैं और जिन्होंने एक शिक्षक होने के नाते कई बच्चों को पढ़ाया है,

जिनमें हिन्दू भी रहे होंगे, मुस्लिम भी रहे होंगे, उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र में तीन मिनी पाकिस्तान हैं। यह सुनकर सिर्फ मुझे ही दुख नहीं हुआ, तमाम जो युवा-पीढ़ी के लिये हैं, उन्हें भी इनके विचार सुनकर बेहद दुःख हुआ होगा, वे भी क्या सोच रहे होंगे? मैं ऐसी उम्मीद जोशी सर से कभी नहीं कर सकता। हां, कुछ लोगों ने ज्यादती जरूर की होंगी, मगर इसलिए सबको इस प्रकार से संबोधित करना गलत है। मेरे ख्याल से उनकी शिक्षा में कहीं कमी रही होगी, ऐसा मुझे महसूस होता है।

महोदय, मुंबई में जो हादसा हुआ, मैं यहां पर विराजमान हमारे होम मिनिस्टर शिवराज पाटिल साहब का धन्यवाद दूंगा कि उन्होंने महाराष्ट्र सरकार को पहले आगाह कर दिया था, उनके पास जो जानकारी थी वह जानकारी उन्होंने दी थी, लेकिन महाराष्ट्र का जो इंटेलीजेन्स विभाग है वह इस काम में फेल हो गया। मुंबई पुलिस का देश में और विदेश में इतना रुतबा रहा है कि लोग इसकी तुलना स्कॉटलैंड पुलिस के साथ करते रहे हैं, मगर हाल के दिनों में मुंबई पुलिस की जो हालत हो रही है, उसे देखकर यह सोचना पड़ता है कि वह पहले वाली मुंबई की पुलिस कहा खो गई है? मैं उनको सारा दोष नहीं दूंगा, क्योंकि उन्होंने बहुत अच्छे काम भी किए हैं, बीच में उन्होंने आरडीएक्स पकड़ा, आर्म्स-एम्युनिशन पकड़ा, जिसकी वजह से हजारों-हजारों लोगों की जानें भी बची हैं। इसके बावजूद भी मैं यह चाहूंगा कि इस मसले पर विचार करने की आवश्यकता हो गई है कि ऐसा क्यों हो रहा है? हमारी जो इंटेलीजेन्स है, वह क्यों कमजोर हुई है?

महोदय, जो आतंकवाद फैल रहा है, जैसा अभी निर्मला जी ने जिक्र किया कि हम लोग अपने पड़ौसियों को क्यों दोष देते हैं? हम लोग किसी एक व्यक्ति को दोष नहीं दे रहे हैं, न वहां पर रहने वाली आम जनता को और न यहां की आम जनता को, उनके बारे में तो हम बात नहीं कर रहे हैं, परंतु हमारे प्रधानमंत्री जी ने स्वयं बुश साहब से बात की थी और उन्हें बताया था कि यह आतंकवाद हमारे पड़ोस से हो रहा है। आपने हाल ही में देखा होगा कि अमरीका के अंदर कैलिफोर्निया में जब कुछ लोग पकड़े गए और उनसे पूछताछ की गई, तो उन्होंने कहा कि पाकिस्तान में हमारे अड्डे हैं, हम लोग वहां से आतंकवाद का प्रशिक्षण ले रहे हैं और वहां से ही हम आगे बढ़ रहे हैं। इसलिए हम यह नहीं कह सकते कि आतंकवाद कोई व्यक्ति, कोई कॉमन मेन वहां का करवा रहा है या यह हमारे यहां रहने वाला करवा रहा है। हम लोग चारों ओर से घिरे हुए हैं। इसलिए हमारी जो गुप्तचर संस्था है, उनको किस प्रकार से हम अधिक प्रभावी कर सकते हैं, कैसे हम मजबूत कर सकते हैं, इसकी ओर भी आपको ध्यान रखने की आवश्यकता है।

महोदय, जब हम लोग मुंबई पुलिस की बात कर रहे हैं, तो यह देखें कि मुंबई पुलिस के पास कितना बजट है, उसको किस प्रकार हमने मोडर्नाइज किया है? मुंबई, यह एक अलग प्रकार की जगह है, यह एक अलग तरह की सिटी, दूसरे राज्यों के शहरों से या मेट्रो से इसकी तुलना नहीं की जा सकती। वहां पर समुद्र का किनारा है, मुंबई शहर समुद्र से घिरा हुआ है,

जिस समुद्री मार्ग से आतंकवादी वहां आ सकते हैं, वहां लोग हवाई-जहाज से आ सकते हैं, इसलिए मुंबई पुलिस को विशेष बजट देने की आवश्यकता है। वहां पर आज पुलिस के पास क्या है? वहां पर उनको निगरानी रखने के लिए हेलीकॉप्टर की आवश्यकता है, वह उनके पास नहीं है, उनके पास स्पीडी कार होनी चाहिए, वह उनके पास नहीं है, उनके पास स्पीडी मोटर-बोट होनी चाहिए, वह उनके पास नहीं है, उनके पास स्पीडी मोटर-साईकल होना चाहिए, वह उनके पास नहीं है, आधुनिक हथियार उनके पास नहीं हैं। जब किसी अपराधी का पुलिस को पीछा करना हो, तो वह किस प्रकार करे? उनकी गाड़ियां ही नहीं चल पाती है, पुरानी होने से बीच में ही वह फेल हो जाती है। अगर वहां आतंकवाद का मजबूती से आपको मुकाबला करना है, तो मुंबई पुलिस को अधिक बजट देना होगा, अधिक अच्छे हथियार देने होंगे सक्षम बनाना होगा। मुंबई आज 58 हजार करोड़ रुपए पूरे देश को, सैंटर को देता है। इस बात पर हम लोगों को विचार करना चाहिए कि मुंबई को किस तरह से इंटरनेशनल सिटी के रूप में डेवलप किया जाए। मुंबई की जिस प्रकार से आबादी बढ़ रही है, हजारों लोग वहां रोज आते-जाते हैं, इसलिए मुंबई के लिए आइडेंटिटी कार्ड होना चाहिए। जब तक हम लोग मुंबई के लिए आइडेंटिटी कार्ड नहीं देंगे, तब तक हम लोग इस बात का पता नहीं लगा पाएंगे। 1993 में जो बम-ब्लॉस्ट हुआ था, उसके नतीजे अभी तक सामने नहीं आए हैं, उसके कल्पिरिट्स को अभी तक सजा नहीं हुई है। मैं कहना चाहता हूं कि फास्ट कोर्ट्स होने चाहिए ताकि अपराधियों को सजा मिल सके।

रेल में जो विस्फोट हुआ, उसके बाद 24 घंटे के अंदर कर्मचारियों ने उस व्यवस्था को फिर से पटरी पर ला दिया, उसके लिए मैं रेल अधिकारियों को, रेल कर्मचारियों को और रेल मंत्री जी को बधाई देना चाहूंगा, उनका अभिनन्दन करना चाहूंगा। आपको ध्यान होगा कि जब लंदन में बम-ब्लॉस्ट हुए थे, तो एक हफ्ते तक वहां का मैट्रो सिस्टम चल नहीं रहा था, लोग आतंकित थे, मगर उसके विपरीत मुंबई की जनता दूसरे दिन काम पर आ गई और उन्होंने दुनिया को एक मिसाल दी और बताया कि हम लोग निडर हैं और देश के अंदर एक नया वातावरण पैदा कर आतंकवाद के खिलाफ नया संदेश दिया है।

मैं एक बात और भी आपके सामने लाना चाहूंगा कि जब-जब भी मुंबई का प्रश्न आता है, तब-तब उसको सिर्फ आर्थिक केपिटल कहकर अलग कर दिया जाता है। मगर कभी किसी ने यह विचार किया है कि मुंबई किन-किन चीजों से जुड़ा हुआ है। किसी ने इस पर विचार नहीं किया है। इसलिए मैं यह चाहूंगा कि होम मिनिस्टर साहब इस बात पर विशेष ध्यान दें, मुंबई पुलिस के लिए विशेष बजट दें। महाराष्ट्र सरकार ने बजट मांगा है या नहीं, इसे न देखते हुए हम लोगों को स्वयं इस पर विचार करना चाहिए, क्योंकि उसका असर पूरे देश पर पड़ता है।

मुझे मेरे मुंबई के एक मित्र ने जो बात लिखकर भेजी, वह सुनाकर मैं अपनी बात समाप्त करूंगा, अधिक समय नहीं लूंगा। यह शेर हमारे एक दोस्त ने भेजा है:-

जब कभी चूम लेते हम, उन डबडबाई आंखों को
सौ चराग अंधेरे में झिलमिलाने लगते हैं,
लम्हे भर को यह दुनिया ग़म छोड़ देती है
लम्हे भर को सब पत्थर मुस्कुराने लगते हैं।

महोदय, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे समय दिया।

श्री बशिष्ठ नारायण सिंह (बिहार): उपसभाध्यक्ष महोदय, एक अत्यंत गंभीर, संवेदनशील और साथ-साथ चिंताजनक विषय पर आज सदन में विचार हो रहा है, यद्यपि देश में हो रही हिंसात्मक घटनाएं और मुम्बई का धमाका, यह सब्जेक्ट है। मुम्बई के लोगों ने धमाका सुना, उसकी देश में प्रतिक्रिया हुई और इस सदन में उस बारे में गंभीरता से विचार हो रहा है। लेकिन, महोदय, धमाके की घटनाएं तो कई हुईं और एक दूसरी तरह के धमाके की घटना तो इस सदन ने और संसद परिसर ने भी सुनी थी। संसद परिसर में एक धमाका हुआ था, उस धमाके के बाद हमारे देश की सुरक्षा व्यवस्था और खुफिया विभाग प्रश्नों के घेरे में आ गया था। मुम्बई में जब धमाका हुआ, तो मुम्बई पुलिस भी बेनकाब हुई है और मुम्बई प्रशासन का खोखलापन भी सामने आया है। जब संसद परिसर में धमाका हुआ था, महोदय, तो उसका कुछ संदेश, उसके कुछ मैसेज थे-सावधान रहो, सतर्क रहो, सजग रहो। जनता के लिए भी था और सरकार के लिए भी था। मुम्बई के इस धमाके के बाद दोनों परीक्षा की कसौटी पर कसे गए हैं, सरकार भी और जनता भी। मुम्बई की इस घटना में एक बात साफ हो गई है कि वहां के लोगों ने जिस तरह से धमाके का मुकाबला किया है, उससे जीवन का जो दर्शन है, उसका अर्थ देश को समझा देने का उन्होंने मौका दिया है। जीवन और मृत्यु एक सच्चाई है और दुनिया को प्रकाश देने वाले सूर्य भी अस्त होता है। मुंबई के लोगों ने तत्काल अपना कार्य प्रारम्भ करके यह साबित कर दिया कि कभी भी, किसी भी तरह की दुर्घटना हो सकती है और उस दुर्घटना का मुकाबला करने के लिए हम लोग तैयार हैं। वहीं दूसरी ओर, वहां की सरकार, वहां की पुलिस व वहां का शासन सूत्र बेनकाब हुए हैं और आज इस बात पर विचार करने की जरूरत है कि अब आगे कैसे बढ़ना है।

उपसभाध्यक्ष जी, यह धमाके अब केवल किसी सीमा तक या कुछ शहरों तक ही सीमित नहीं हैं। यदि हम हिंसात्मक गतिविधियों पर विचार करते हैं, तो हमें विचार करना पड़ेगा कि देश में उग्रवादी संगठन किस-किस तरह के हैं, देश में अलगाववादी शक्तियां किस तरह से काम कर रही हैं? देश में नक्सलवादी संगठन विशेष रूप से किन क्षेत्रों में सक्रिय हैं? इन हिंसक शक्तियों

का विस्तार किस रूप में हुआ है? ये कहा-कहां फैले हैं? इनके विस्तार के तरीकों में क्या-क्या बदलाव आया है? जब इन सभी विषयों पर विचार होगा और इन सभी समस्याओं से निपटने के प्रयास किए जाएंगे, तभी हमारी सुरक्षा व्यवस्था एवं अन्य सभी व्यवस्थाएं दुरूस्त रह सकती हैं। आज राष्ट्र के सामने यह सवाल बन कर खड़ा है।

महोदय, एक बात सोचने की है कि संसद परिसर के ऊपर प्रहार, प्रतिनिधि सभा के ऊपर प्रहार था और मुंबई की दुर्घटना देश की सबसे बड़ी व्यावसायिक नगरी पर प्रहार था। प्रतिनिधि सभा के माध्यम से आतंकित कर देने की एक योजना और पूरी आर्थिक व्यवस्था को चरमरा देने की दूसरी योजना, यह उसकी शुरूआत की ओर एक संकेत है। इसी तरह के अन्य और भी कई संकेत हैं, जिससे सरकार को सबक लेने की जरूरत है कि आगे तरह-तरह की योजनाएं इस देश को डिसरप्ट करने के लिए, इस देश की व्यवस्था को चरमरा देने के लिए बनाई जा सकती हैं और सरकार को उस पर विचार करना है।

उपसभाध्यक्ष जी, मैं भारत के गृह मंत्री जी से जानकारी चाहूंगा, जानकारी शब्द मैं इसलिए प्रयोग कर रहा हूं क्योंकि यहां जानकारी शब्द इस माने में उपयुक्त है कि यदि सरकार के पास इसकी पर्याप्त तैयारी है, तो वह उसकी जानकारी दे और यदि सरकार के पास समुचित तैयारी नहीं है, तो इसे मेरा सुझाव माना जाए, इसीलिए मैं जानकारी शब्द का प्रयोग कर रहा हूं। इन उग्रवादी संगठनों एवं अलगाववादी संगठनों को जहां से आर्थिक मदद प्राप्त हो रही है, क्या सरकार के पास उन स्रोतों की जानकारी है? क्या उन स्रोतों को डिमॉलिश करने के लिए या उसे खत्म करने के लिए सरकार ने सफलता पाई है? क्या सरकार ने उनके स्थानों और उनके संपर्क सूत्रों का पूर्णत: अथवा किसी हद तक पता लगाने का काम किया? राज्यों के द्वारा उग्रवादी संगठनों और इसी तरह के अन्य संगठनों, जो इस तरह की हिंसक गतिविधियों में संलिप्त है, क्या उनकी सूची बना ली गई है? लेकिन मैं कुछ ऑपरेशन के सवाल पर भी बात करना चाहता हूं। क्या सरकार ने कोई योजना बनाई है कि राज्यों और केन्द्र की सरकार ऐसे मौके पड़ने पर संयुक्त रूप से ऑपरेशन करेगी? क्या राज्यों के बीच में सभी राज्य संयुक्त आपरेशन करेंगे? क्या शस्त्रों के साथ सुसज्जित करने के लिए जैसे सेना और पुलिस को, एसपीजी से मैं इसकी तुलना नहीं करूंगा, क्योंकि खास सुरक्षा का उनको इंतजाम दिया गया है, क्या राज्यों की पुलिस को भी इस ढंग से सुसज्जित करने की सरकार ने कोई योजना बनाई है? क्या जवानों को एक विशेष तरह की ट्रेनिंग देने की सरकार ने कोई योजना बनाई है? ये सारे सवाल हैं, महोदय, जिन पर सरकार को जवाब देना चाहिए। महोदय, सरकार को यह भी जवाब देना चाहिए कि यह लोकतांत्रिक देश है और लोकतांत्रिक देश में बातचीत का रास्ता सदा खुला रहता है। केवल फौज, केवल पुलिस ही आतंकवाद का मुकाबला नहीं कर सकती बातचीत का रास्ता हो, क्योंकि इसके बहुत से उदाहरण इस देश में मौजूद हैं, और उन उदाहरणों के डिटेल्स में मैं

जाना नहीं चाहता। लेकिन कई उदाहरण इस देश में ऐसे मौजूद हैं कि जिनके रास्ते हिंसक हैं, विचार के स्तर पर मुकाबला करके उनको बदला गया है, बदले हैं और राष्ट्र की मुख्य धारा में सम्मिलित हुए हैं। जयप्रकाश नारायण के सामने डाकुओं का समर्पण हुआ। जयप्रकाश नारायण जी नक्सलवादियों के गढ़ के बीच में काम करके, और आज बौद्ध गया में खुलेआम जहां हिंसक घटनाएं भी कभी-कभी आती हैं, वहां भी संघर्ष वाहिनी के साथी काम कर रहे हैं। इसलिए मैं यह सवाल उठा रहा हूं। जो उग्रवादी संगठन हैं, जो अलगाववादी संगठन हैं, उनसे निबटने के अलग तौर-तरीके हो सकते हैं, लेकिन जो नक्सलवादी संगठन हैं, जो विचार के स्तर पर मानते हैं कि हिंसा ही समाज को बदलने का एक रास्ता हो सकता है, एक तरीका हो सकता है, एक मैथड हो सकता है, उनसे मुकाबला करने के लिए विचार की शक्ति ही और विकास का रास्ता ही एक हो सकता है। विचार के स्तर पर उनको चुनौती देने का काम महोदय, हो और उनके नक्सलवादी एरिया में और इस ढंग से हिंसात्मक गतिविधियों वाले एरियाज में, जिनका विदेशों से चाहे कहीं बाहर से सम्पर्क न हो, वहां विकास की गति तेज करके उनके रास्ते को अवरुद्ध करना चाहिए, उस इलाके में उनके प्रभाव को कम करना चाहिए। मैं मानता हूं कि आज इन विषयों पर सरकार को गंभीरता से ध्यान देना चाहिए। हमारी संचार व्यवस्था, हमारा खुफिया विभाग, ये जितने तंदरूस्त हो जाएं इससे अच्छी बात सरकार के लिए हो नहीं सकती। मैं एक ही बात, अंत में यही कहना चाहता हूं कि बातचीत के रास्ते को तेजी से बढ़ाने की जरूरत है, जो देश के अंदर संगठन हैं, जो विचार के स्तर पर हिंसक गतिविधियों में लगे हुए हैं, वहां विकास शुरू किया जाए। भारत के गृह मंत्री जी यहां बैठे हुए हैं और इसी कुर्सी पर सरदार वल्लभभाई पटेल भी बैठे थे। सरदार वल्लभभाई पटेल तो कभी-कभी पैदा होते हैं, लेकिन कौन कब सरदार वल्लभभाई पटेल बन सकता है यह तो इतिहास के गर्भ में है। सरदार वल्लभभाई पटेल ने अभेद्य दुर्ग बना दिया था इस देश को। सादगी के प्रतीक सरदार वल्लभभाई पटेल ने संघीय राज्यों को मिलाकर के यहां के स्वरूप को एक साकार रूप देने का काम किया था। इस देश की अस्मिता को कभी कोई चुनौती नहीं दे सकता, लेकिन इसके अंदर दरार पैदा करने की कोशिश करता है। महोदय, कई ऐसे उदाहरण हैं, यहां एक नौजवान ने जो अपनी वीरता दिखाई और कई जगहों पर वीरता के जो उदाहरण मिल रहे हैं, वे देश के लिए बड़े ही स्मरणीय उदाहरण हैं। मैं केवल गृह मंत्री जी को एक उदाहरण देकर के अपनी बात समाप्त करूंगा। यहां संसद परिसर में भी एक तैनात जवान ने अपना करिश्मा दिखाने का काम किया था। युद्ध के अवसर पर भी अनेक जवानों ने, अनेक वीरों ने अपनी वीरता दिखाने का काम किया है, जब श्री लाल बहादुर शास्त्री जी इस देश के प्रधान मंत्री थे। एक छोटी सी घटना याद पड़ गई, उसका उल्लेख करके अपनी बात समाप्त करूंगा। वे युद्ध के वक्त में एक घायल जवान को देखने के लिए अस्पताल गए। अस्पताल में जब लाल बहादुर शास्त्री जी पहुंचे, एक घायल नौजवान – हमें जो बताया गया है – उसकी आंखों

पर पट्टी बंधी थी। उसके हाथ सैल्यूट देने के लिए नहीं उठ सकते थे। जब उसे कहा गया कि भारत के प्रधान मंत्री आपके बेड के सामने उपस्थित हैं तो उस सैनिक की आंखों से केवल आंसू गिर गए और उसके मुंह से एक ही शब्द निकला कि मेरे लिए इससे बड़ा दुर्भाग्य का दिन नहीं हो सकता है। हमारे जवान कैसे हैं, उनकी सुरक्षा की व्यवस्था कर दी जाए, इनको शस्त्रों से सुसज्जित कर दिया जाए और वे कितने कर्त्तव्यपरायण हैं, कर्त्तव्यपरायण के नमूने के रूप में केवल मैं यह कह रहा हूं-कहा, कि मेरे लिए इससे बड़ा दुर्भाग्य का दिन दूसरा कोई नहीं हो सकता है कि हमारे देश का प्रधान मंत्री आज हमारे बेड के सामने खड़ा है और मैं उठकर उनको सेल्यूट नहीं दे सकता। जवान की आंखों में आंसू थे और लाल बहादुर शास्त्री जी की भी आंखों में आंसू थें। एक अजीब तरह का दृश्य था। जवान ने आंसुओं से भारत के प्रधान मंत्री को सैल्यूट देने का काम किया और भारत के प्रधान मंत्री ने आंसू बहाकर उस सैल्यूट को लेने का काम किया। एक अजब एकनिष्ठा, एक अजब एकाग्रता, कर्त्तव्यपरायणता थी और कर्त्तव्यपरायणता का जवाब भारत के उस प्रधान मंत्री ने अपने आंसुओं से देने का काम किया था। महोदय, मेरा आज देश के गृह मंत्री को यही कहना है, आज देश के प्रधान मंत्री के ऊपर विशेष जवाबदेही है कि जिस ढंग के देश में ऐसी शक्तियां पैदा हो रही हैं, (समय की घंटी) उन शक्तियों का मुकाबला करने के लिए निश्चित रूप से योजनाएं, प्रकाश में न लाकर, लेकिन भीतर में इतनी ताकतवर योजना बनायी जाए कि कश्मीर के ऊपर किसी को देखने का मौका न मिले बल्कि नागालैंड से लेकर पूर्वोत्तर राज्य-चाहे समतल भूमि पर, चाहे तटीय इलाके से, चाहे दूसरे इलाके से लोग जो आ रहे हैं, उनका मुकाबला कर सके। आपने घंटी बजा दी है, संकेत दे दिया है कि मुझे अपनी बात समाप्त करनी चाहिए। महोदय, इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं। धन्यवाद।

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM: Thank you very much, Sir, for giving me this opportunity

"Can POTA achieve what TADA could not?" This was the title of an article which I penned, and it was published in *The Hindu* dated 1st January, 2002.

Sir, the idea behind the article was, at the time when introduction of POTA was hardly discussed by the Houses of Parliament, I felt that POTA was not required, because its earlier enactment called 'TADA' was a total failure. There were about 16,500 cases booked under TADA, of which less than 400 ended in conviction. So, when TADA, which was brought in to contain terrorism, could not achieve its objects, what was the necessity of bringing another enactment called 'POTA' which is, in

fact, a re-birth or reincarnation of TADA? This was exactly the question put by me.

Sir, in the State of Tamil Nadu, there were several cases tried under the TADA. Hon. Member, Dr. Malaisamy, is also aware of this because he was, for some time, the Home Secretary of the State during the time when TADA was ...*(Interruptions)*...

DR. K. MALAISAMY: Sir, at that time, everything was under tight control.

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM: Yes; Yes, it was under very, very tight control. Sir, I can tell you and inform this House, how tight was it that under TADA, one Vai Ravichandran was prosecuted. At that time, his elder brother was a Member of this hon. House;his name is Vaiko. Vaiko's younger brother, Mr.Vai Ravichandran, was prosecuted under TADA, at the time when hon. Member was the Home Secretary, and utimately...*(Interruptions)*...

DR. K. MALAISAMY: Sir, may I clarify?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): I don't think you need to clarify anything. Kindly stick to the point...*(Interruptions)*...

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM: I am sticking to the point on terrorism, Sir...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): You don't have more than five minutes. So, don't lose your time .. *(Interruptions)*...

SHRI R. SHUNMUGASUNDARM: Sir, I am sticking to the point on terrorism and on how TADA was used to terrorise politicians and their family members.

DR. K. MALAISAMY: You may go and ask Mr. Vaiko.

SHRI R. SHUNMUGASUNDRAM: Sir, Mr. Vai Ravichandran was ultimately acquitted of the TADA charges. So, what happened to the TADA charges? He was accused in a case along with LTTE men for killing an EPRLF leader called Padmanabha. Ultimately the case ended in acquittal. What was the purpose behind using TADA against a member of a political family?

SHRIMATI S.G. INDIRA:*

DR. K. MALAISAMY:*

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM: Sir, I named Ravichandran. Now, Vaiko is with them and I don't want to talk about Ravichandran ...(*Interruptions*)...

SHRIMATI S.G. INDIRA:*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): Are you yielding?

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM: No, Sir, I am not yielding.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): He is not yielding. Nothing else is going on record. Please, continue.

SHRIMATI S.G. INDIRA:*

THE VICE-CHAIRMAN: (SHRI DINESH TRIVEDI): Please, continue.

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM: Sir, POTA was introduced and under the Act, there were several prosecutions. Of course, in Tamil Nadu too, there were certain prosecutions.

SHRIMATI S.G. INDIRA:*

DR. K. MALAISAMY: Sir, I have got a point of order ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TIRIVEDI): He has got a point of order. Let's listen to his point of order. Madam, would you please sit down? ...(*Interruptions*)... Please, listen to him for a minute.

SHRI V. NARAYANASAMY:*

SHRIMATI S.G. INDIRA:*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): Mr. Narayanasamy, I am going to ask him. Please, tell me under what rule it is. Under what rule does your point of order fall? What is the rule?

DR. K. MALAISAMY: That the case ended in acquittal is a different matter...(*Interruptions*)...that is why he was prosecuted...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): There is no point of order. Please, carry on, Mr. Shunmugasundaram.

* Not recorded.

DR. K. MALAISAMY:*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): You have now got only three minutes. You are losing your time and nothing also is going on record Please, carry on.

DR. K. MALAISAMY:*

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM: Sir, you have to protect me. They are interfering ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): I am protecting you. Nothing else is going on record. He didn't have any point of order.

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM: Sir, Mr. Ravichandran was utlimately acquitted of the false charges; this is what I wish to say. When POTA was introduced, it was equally misused in Tamil Nadu ...*(Interruptions)*... Mr. Ravichandran's elder brother Vaiko was also prosecuted and he was also found not guilty. That POTA was misused is a fact known to everyone ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI S.G. INDIRA:*

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM: Sir, another hon. Member said ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): Will you, please, go beyond Tamil Nadu? ...*(Interruptions)*... Please, go beyond Tamil Nadu ...*(Interruptions)*...

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM: Sir, I shall go beyond Tamil Nadu.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): He is going beyond Tamil Nadu now.

DR. K. MALAISAMY:*

SHRIMATI S.G. INDIRA:*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): Kindly go beyond Tamil Nadu. We are talking about the Mumbai blasts here.

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM: Sir, now the suggestion is that there must be some other new enactment, something like POTA, something like TADA. Somebody said it may be called 'Kota'! It may be called 'Kota' or 'Bata'; whatever it may be, I am only suggesting that such Acts cannot be allowed to be misused by any person, and more so, to target political personalities. I am of the view that if somebody

* Not recorded.

4.00 P.M.

suggests that such an enactment must be brought in, it is only with an ulterior motive, to target politicians and political opponents. They say so only with this view. They view things with a tainted glass, when they say something like — Madani was given a massage in his treatment of Siddha or Ayurveda ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI S.G. INDIRA:*

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM: Sir, this is as per Court ...*(Interruptions)*... As per Court orders, somebody is given treatment; the accused is not found guilty ...*(Interruptions)*... An accused person is given treatment as per Court orders, and the accused person is not an accused under TADA or POTA. He is an ordinary criminal.

SHRIMATI S.G. INDIRA:*

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM: He is an ordinary criminal ...*(Interruptions)*... He is given treatment ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI S.G. INDIRA: You are losing your power ...*(Interruptions)*...

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM: If on humanitarian basis somebody is given treatment, is it bad? ...*(Interruptions)*... We have also seen in this country that some convicted persons are given the seat of Chief Ministers...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): You have made that point ...*(Interruptions)*... Can you go to the next point? ...*(Interruptions)*...

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM: Yes, Sir. I am going to the next point. Now I come from an accused person to a convicted person. This is my another point. A convicted person was offered a seat of Chief Minister. That has happened in Tamil Nadu ...*(Interruptions)*... Therefore, there is nothing wrong in giving treatment to an accused person. ...*(Interruptions)*...

DR. K. MALAISAMY: He is going too far ...*(Interruptions)*... What is the relevance of it? ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): I am on my legs ...*(Interruptions)*...

---

* Not recorded.

SHRIMATI S.G. INDIRA: What is he concerned? ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): Will you let me handle this? ...*(Interruptions)*... Please let me handle this ...*(Interruptions)*...

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM: Can you deny that a convicted person was not offered the seat of Chief Minister? ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI S.G. INDIRA: Can you deny that you are misusing the power in Tamil Nadu? ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DIENSH TRIVEDI): Please let me handle this ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI S.G. INDIRA: Tell the answer ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): If you let me handle ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI S.G. INDIRA: Is he talking about Mumbai blasts? ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): Can you kindly take your seat? ...*(Interruptions)*...Please let me handle this ...*(Interruptions)*... Let me handle this. ...*(Interruptions)*... May I request you to kindly go to your next point? You do not have much time. ...*(Interruptions)*...

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM: I have made my point. ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): You hardly have one more minute. Now it is time for you to conclude. In conclusion, whatever you have to add, kindly do that.

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM: I will do that.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): Kindly go beyond Tamil Nadu.

SHRI R. SHUNMUGASUNDARAM: We have to analyse the situation in Mumbai and what has prompted the blasts, is not some incidents that happened recently. When we look back, the history of modern India has to be divided into two parts. As an hon. Member was telling, the incidents

which happened prior to 6th December, 1992 and incidents which happened after 6th December, 1992 have to be compared. He has made a correct statement. The history of India will definitely be divided into two parts like the English calender of BC and AD — before 6th December, 1992 and after 6th December, 1992. All are the consequences of the demolition that had taken place. Who is responsible for this? Whoever has supported it, whoever offered *Kar Sewa*, they are all responsible for this incident. With these words, I thank you.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): Shri T.S. Bajwa. Not present. Shri Syed Azeez Pasha.

श्री सैयद अज़ीज पाशा (आन्ध्र प्रदेश): उपसभाध्यक्ष महोदय, मुम्बई में जो दुर्घटना हुई है, हिन्दुस्तान का कोई भी अमन पसन्द व्यक्ति यह नहीं चाहता कि इस किस्म के वाकयात हों। ऐसे वाकयात केवल मुम्बई में ही नहीं, बल्कि सारे हिन्दुस्तान में या दुनिया के किसी इलाके में न हों, चूंकि इसमें मासूम लोगों की जानें गई हैं। वे ऐसे मासूम लोग थे, जिनका किसी दंगे-फसाद से कोई वास्ता नहीं है। इस दुर्घटना के बाद कई किस्म के सवालिया निशान उठते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि इस वाकयात के साथ, किसी एक मकसूस कम्युनिटी का वास्ता है अगर चंद टेररिस्ट के नाम पर तमाम कम्युनिटी को बदनाम किया जाए तो बात बेबुनियाद है। किसी टेररिस्ट का कोई रिलीजन नहीं होता है। जैसा कि कहा जाता है – "मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना' तो कोई मजहब इस बात का बरदाश्त नहीं करता। दूसरा सवाल उठता है कि हो सकता है कि गुजरात में जो वाकये हुए, यह उसके बदले का एक हिस्सा है। आंकड़े देखने से पता चलता है कि इनमें सिर्फ 15 प्रतिशत लोग गुजरात के हैं। अगर बदला लेने की भावना से यह काम होता, तो वे माटुंगा रेलवे स्टेशन या माहिम के बजाय, किसी दूसरे स्टेशन को चुनते। इसलिए यह बात बिल्कुल गलत है।

उपसभापति महोदय, इस सदन में तीसरा सवाल यह उठाया गया था कि एक कम्युनिटी के साथ appeasement यानी खुशामदी की वजह से ये लोग आतंकवादी रास्ते की तरफ आ रहे है। हिंदुस्तान के एक बहुत ही मशहूर पत्रकार, जो freelance journalist रहे हैं, श्री सईद नकवी साहब ने 10 साल पहले RSS के संचालक – बालासाहब देवरस से इंटरव्यू लेकर इंडियन एक्सप्रैस में छापा था। उस वक्त उन्होंने यही बात बालासाहब देवरस से कही थी कि आप लोग appeasement की बात कहते हैं, appeasement से क्या इस community को कोई फायदा हो रहा है? अगर आंकड़े देखें, तो पता चलता है कि हिंदुस्तान के दूसरे समाजों के जो लोग हैं, उनमें और इनमें बड़ा फर्क है। अभी पिछले हफ्ते अमरीका की Time मैगजीन में मुंबई बम विस्फोट के बारे में चंद आंकड़े छपे थे। उन्होंने लिखा है कि national average और

मुसलमानों की जो economic conditions हैं – चाहे वह literacy हो, चाहे educational standard हो या bank loan हों, इन्हें अगर देखा जाए, तो ये national average से 10 से 12 प्रतिशत कम हैं। इसलिए यह कहना बिल्कुल बेबुनियाद है कि यह appeasement का नतीजा है, जिसकी वजह से एक मकसूस कम्युनिटी इस मामले में आगे है।

उपसभापति महोदय, इस हादसे के फौरन बाद Communist Party of India की तरफ से हमारे लोकसभा के floor leader कामरेड गुरुदास दासगुप्ता और मैं मुबंई गए थे और हम मौका-ए-वारदात पर पहुंचे थे। हम हॉस्पिटल्स में भी गए और हमने जख्मियों की इयादत की। हम Western Railway के headquarter पर भी गए थे और वहां के officials से हमने बातचीत की, आम शहरियों से बातचीत की थी। हमको यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि इस दुर्घटना के फौरन बाद, पांच मिनट के अंदर, उन रेल की पटरियों के आस-पास रहने वाले जो लोग हैं, जो गरीब लोग हैं, स्लम के लोग हैं, हर तबके के आदमी ने वहां पर पहुंचकर, एक-दूसरे की मदद की। वैसे तो पुलिस हमेशा की तरह बाद में पहुंची, लेकिन आम आदमी ने एक-दूसरे की मदद की। लोग खून देने के लिए वहां पर कतारों में खड़े थे। कई लोगों ने घायलों को फौरन अस्पताल पहुंचाने के लिए अपनी गाड़ियों का इस्तेमाल किया। यह देखकर हमें बड़ी खुशी होती है कि मुंबई में आज भी इंसानियत जिंदा है। यह उन लोगों के मुंह पर एक भरपूर तमाचा है, जिन्होंने यह समझा था कि इस कांड के बाद वहां पर एक खलिश आ जाएगी, वहां पर फिर हिंदू-मुस्लिम फसादात होंगे। उनका यह गेम-प्लान बुरी तरह से नाकामयाब हुआ, यह बड़ा positive aspect है।

उपसभापति जी, इसके साथ-साथ मैं यह कहना चाहता हूं कि हमको जो चंद वाकयात बताए गए, जिनमें लोगों ने एक-दूसरे की मदद की, वहीं पर हम देखते हैं कि चंद corporate hospitals जैसे हिन्दुजा हॉस्पिटल है, लीलावती हॉस्पिटल है, वहां लीलावती हॉस्पिटल में 33 जख्मी admit हुए थे और हिन्दुजा हॉस्पिटल में 31 जख्मी लोग admit हुए थे। चूंकि हुकूमत ने वायदा किया है, रेलवे मिनिस्ट्री ने उनके इलाज का खर्चा बरदाश्त करने का वायदा किया है, इसलिए हॉस्पिटल वालों ने एक-एक bed पर 5 हजार और 6 हजार का खर्च दिखाया है, यानी Five Star Hotel के कमरे से ज्यादा खर्च दिखाया है और इतना बिल दिया है। इस तरह हमें यह मिसाल भी मिलती है कि कारपोरेट हॉस्पिटल वालों ने इस मौके का नाजायज फायदा उठाया है।

उपसभापति महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि चंद तजवीज और suggestions आए हैं, हालांकि वे technical suggestions हैं, जिन पर गौर किया जा सकता है। चूंकि मुंबई एक ऐसी जगह है, जहां पर लाखों लोग ट्रेनों में सफर करते हैं, एक ट्रेन में कम से कम 4 हजार पैसेंजर्स रहते हैं, इसलिए वहां पर यह पता लगाना कि किसने, किस जगह पर बम रखा है, क्या किया है, यह देखना नामुमकिन है। यह मशविरा आया था कि जो overhead luggage rakes होते हैं,

जहां पर लोग luggage रखते हैं, क्यों नहीं उसे बर्खास्त किया जाए? क्योंकि मुम्बई शहर के जो फेरीवाले लोग हैं, बड़ा-बड़ा luggage तो नहीं, उनका जो छोटा-मोटा समान है, वे अपनी जांघों पर रख सकते हैं। इसलिए अगर ऊपर के overhead luggage rakes को बर्खास्त कर दें, तो किसी को वहां पर कोई चीज रखने की गुंजाइश नहीं होगी। इसके साथ अगर सीट के नीचे के तमाम हिस्से को cover कर दिया जाए, तो एक लिहाज से technically वहां पर किसी चीज को रखने की गुंजाइश नहीं रहती है। एक बात यह आती है।

इसके साथ-साथ आखिर में मैं कहूंगा कि हमारी तो intelligence agencies हैं, उन intelligence agencies को ज्यादा मजबूत करना चाहिए। हालांकि आईबी के कहने के बावजूद भी पता नहीं क्यों वहां की स्टेट पुलिस को इस बारे में जो काम करना चाहिए था, उसमें वह बुरी तरह से नाकाम हुई है। हम चाहते हैं कि Central Intelligence Agency और वहां की रियासत की Intelligence Agency में एक co-ordination होना चाहिए। आज जो co-ordination नहीं हैं, उसे और मजबूत करना चाहिए। इसके लिए और बजट allocation होना चाहिए। इसके साथ-साथ हमें disaster management के बारे में भी सोचना चाहिए, क्योंकि मुम्बई के ये वाकये बताते है कि बहुत हद तक हमारा disaster management नाकाम हुआ। अगर आम शहरी इस मामले को लेकर आगे नहीं आते, तो मालूम नहीं कि कितने लोगों की जाने जाया होतीं।

मैं आखिर में एक और बात कहते हुए अपनी बात खत्म करता हूं। वह यह है कि जहां तक investigation की बात आती है, तो कई लोगों को arrest किया गया है। जाहिर है कि इतना बड़ा वाकया हुआ है, तो उसके लिए arrest करना ही पड़ेगा, interrogate करना ही पड़ेगा। मगर इस interrogation के नाम पर जो कई बेगुनाह और मासूम लोगों को arrest किया जा रहा है और अगर उनका कई महीनों, कई सालों तक रखा जाए, तो इससे एक पूरी कम्युनिटी में एक alienation का process शुरू हो जाएगा। यह नहीं होना चाहिए। इस मामले में पुलिस और जितनी भी agencies हैं, इस बारे में ध्यान रखें कि कोई मासूम आदमी इस बात का शिकार न हो। आपको हक है कि हरेक से पूछताछ करें। उसके बाद जो भी मासूम हैं, उसे फौरन unconditionally रिहा कर देना चाहिए।

आखिर में निर्मला देशपांडे जी ने जो बात कही है, वह भी बहुत काबिले गौर है,उसके बारे में भी सोचना चाहिए। बहुत-बहुत शुक्रिया।

श्री दत्ता मेघे (महाराष्ट्र): उपसभाध्यक्ष महोदय, देश में आतंकी हिंसा की बढ़ती घटनाओं, विशेषकर मुम्बई में हाल ही में 11 जुलाई की शाम को 6.20 से लेकर 6.40 तक 7 बम धमाके हुए, जिनमें सरकारी आंकड़े के अनुसार 198 लोगों का निधन हुआ और 712 लोग घायल हुए।

अखबार में प्रकाशित आंकड़ों पर जाएं, तो मरने वालों की संख्या 200 से अधिक है और जख्मी 750 से अधिक हैं। मातुंगा, माहिम, खार रोड, जोगेश्वरी, बोरीवली, मीरा रोड और भयंगर आदि रेलवे स्टेशनों पर ट्रेनों में ये ब्लास्ट हुए हैं।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मुम्बई में जो लगातार घटनाएं हो रही हैं, इसके बारे में मुम्बई के लोगों ने जिस ढंग से जाना, मैं भी उस दिन मुम्बई में था और हमने देखा कि 20 मिनट के अन्दर बहुत organized way में जिस तरह से मुम्बई में बम ब्लास्ट की घटना हुई, उससे पूरी मुम्बई दहल गई। उसमें खास तौर से जो बातें थी, हमने देखा, मैं नागपुर में रहता हूं, जिस दिन आरएसएस के मुख्य कार्यालय के ऊपर भी जब हमला हुआ, तब हमारी महाराष्ट्र की पुलिस बहुत सतर्क थी। जो भी आतंकवादी थे, उन्होंने उन्हें वहां मार गिराया। पुलिस को जहां-जहां information मिली, वहां-वहां महाराष्ट्र की पुलिस गई। मैं तो महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री जी को अभिनंदन करूंगा कि इस घटना के होने के तुरंत आधे घंटे बाद सरकार की जो पूरी यंत्रणा थी, पूरे काम में लग गई यही नहीं, हमारे शिवराज पाटिल जी और हमारे देश की नेता सोनिया गांधी जी, वे तुरंत वहां पहुंचे। इतने कम टाइम में जो घटना हुई और जब मुम्बई में इतनी दर्दनाक घटनाएं होती हैं, तो पूरा देश उसकी तरफ देखता है आतंकवाद की घटनाएं होने की information थी, सब लोग आज कह रहे हैं, लेकिन जब-जब ऐसी बातें होती हैं, तो मुम्बई की पुलिस इसमें बहुत चौकस रही है। लेकिन हमने देखा कि 1993 से लेकर अभी तक करीब 110 के ऊपर बम विस्फोट हुए हैं। 1993 में 12 मार्च को शेयर बाजार, एयर इंडिया इमारत सेंचुरी बाजार, सेना भवन, शिराँक होटल के पास ब्लास्ट हुए।

जिन में 200 से ज्यादा लोगों की जानें गयीं और 713 लोग जख्मी हुए थे। सन् 93 बाद ये घटनाएं बराबर हो रही हैं। ये घटनाएं कोई मामूली घटनाएं नहीं हैं। आम आदमियों का इस ढंग से मारा जाना देश के लिए बहुत चिंता का विषय है। इसलिए पूरे देश के लिए यह घटना बहुत शोक करने की बात होती है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मनोहर जोशी जी ने बहुत गंभीर विषय सदन में चर्चा के लिए रखा है जिस की सभी पार्टियों और देश की सौ करोड़ से ज्यादा जनता ने निंदा की है। इसलिए आज इस तरह की जो निंदा करने वाली घटनाएं हैं वे आगे मुंबई देश में दूसरी जगह न हों, इसलिए काम करना बहुत जरूरी है। उपसभाध्यक्ष जी, हम ने देखा है कि शिवराज पाटिल जी, हमारे रेल मंत्री जी और सोनिया जी हॉस्पीटल गयीं और वहां की सरकारी मशीनरी ने राज भर लोगों की मदद करने का काम किया, लेकिन पुलिस के आने से पहले मुंबई के लोग घटना स्थल पर गए और जितनी मदद हो सकती थी की। चाहे वहां के हॉस्पीटल में या जनता हो, सभी लोगों ने मिलकर इस दुखद घटना पर खाली निंदा कर के घर में बैठे रहना उचित नहीं समझा बल्कि उन्होंने वहां पहुंचकर मदद करने की कोशिश की।

उपसभाध्यक्ष महोदय, हम देखते हैं कि आज इस तरह की घटनाओं के पीछे ये आतंकवादी लोग कौन हैं? वे चाहे जिस समाज के हो उन को सजा मिलनी चाहिए। हम ने किसी एक समाज का कभी बुरा नहीं कहा हैं, न मुस्लिम समाज बुरा है और न कोई और समाज बुरा है। लेकिन समाज में जो इस तरह की घटनाएं हो रहीं हैं, उस में जो लोग लिप्त मिलते हैं, उन के ऊपर कार्यवाही नहीं होती हैं। हम ने देखा कि 93 की घटना में अभी तक किसी को सजा नहीं हुई। इस से जो हमारी जुडीसियरी और वहां हमारी मशीनरी है- इन सब में इस से दहशत है। मैं यह नहीं कहूंगा कि जिन्होंने कुछ नहीं किया, उनको पकड़ा जाय या उन को तकलीफ दी जाय, लेकिन जो भी ''क्लू'' पुलिस के पास आता है, उन लोगों तक आज पुलिस पहुंच रही है, और पहुँचते-पहुँचते लोग दाऊद इब्राहीम का नाम लेते हैं। अभी भी वह सब चल रहा है, लेकिन उस से कोई बात बाहर नहीं आ रही है। इसलिए ये घटनाएं जिस ढंग से सोच-समझकर की जा रही हैं, उतनी सेक्युरिटी रखना देश के लिए बहुत जिम्मेदारी का काम है। वह पुलिस का काम है, हांलाकि उसमें बहुत खामियां हैं। हमने देखा है कि वहां जिस ढंग से लोग आते जाते हैं, उस में हम जो कर सकते हैं, किया जाना चाहिए। मैं यह नहीं कहूंगा कि जहां कुछ लाख लोग रोज सबेरे-शाम आते हैं, वह सभी को देखे, लेकिन उस में कमतरती जरूर हुई है। दस पर जो भी खर्चा था, वह हम ने नहीं किया, महराष्ट्र सरकार को केन्द्र सरकार से जो भी इंफॉर्मेशन मिली थी, उस बारे में उन को और जागरूक रहना था। औरंगाबाद में लोग पकड़े गए, वहां बम और दूसरी चीजें मिलीं। नागपुर में घटना हुई और उसके बाद लगातार तक महीने के अंदर जब यह घटना होती है तो इस बारे में आज कोई भी जिम्मेदारी लेने को तैयार नहीं है, सही मायने में जो भी लोग सरकार में काम करते हैं, हमने देखा पिछले वक्त जो अच्छे अधिकारी थे, उनको बंद कर दिया। उसमें मानवाधिकार की बात होती है। महोदय, जब इस तरह की आतंकवादी घटनाएं होती हैं और जब एक पुलिस अधिकारी कुछ काम करता है, तब उसके ऊपर मानवतावादी और इस तरह की बात होती है, तो वह अधिकारी काम नहीं कर सकता। इसलिए मुंबई में, महाराष्ट्र में और देश में दूसरी जगह सभी लोगों को मिलकर देश की सुरक्षा के लिए कार्य करना चाहिए। महोदय, हम ने देखा है कि इस तरह की घटनाओं के बाद भी मुंबई के लोग घर में बैठे नहीं रह सकते। उन को काम करना ही पड़ता है। मुंबई तो रातभर चालू रहती है। सिर्फ एक-डेढ़ घंटे रात में बंद होती है, फिर सबेरे 4-5 बजे मुंबई के लोग काम पर जाते हैं। हमने देखा है कि इस में सरकार की कोई कमतरती वाली बात नहीं है। इसमें मुख्य मंत्री जी ने काम किया है, सभी पार्टी के लोगों ने काम किया है। तीन दिन लगातार सभी लोग मिलकर इस बारे में सोचते रहे और काम करते रहे। अगर कल कोई और बम विस्फोट हो जाता है और उस में सैकड़ों लोग मरते हैं तो उस से सभी लोगों को दर्द होता है, लेकिन उस दर्द से बात बनने वाली नहीं है। हम ने देखा है कि हमारे यहां महाराष्ट्र में कुछ जगह इस तरह से फोर्स काम कर रहा है। अब यह काम कौन कर रहा है, कहां कर रहा है, यह देखना पुलिस की जिम्मेदारी है , लेकिन चाहे औरंगाबाद हो, बीड़ हो, नांदेड़ हो, हमारे

विदर्भ क्षेत्र में अकोला हो, अमरावती हो, मालेगांव हो- इन सारी सिटीज में यह बात हो रही है। यह कौन कर रहा है, इसे देखना पुलिस का काम है। हम नहीं कहेंगे कि मुस्लिम इस में काम कर रहे है। मैं तो अबू आसिम आजमी जी से हमेशा कहता हूं कि देखिएं, जो भी गलत काम करता है, वह चाहे हिन्दू हो या मुसलमान, आतंकवादियों की कोई जाति नहीं होती है। ...**(समय की घंटी)**... इसलिए जो लोगों को मारता है, उसको पनिशमेंट देना सरकार की जिम्मेदारी होती है। उस जिम्मेदारी को पूरी करने में हमारी पुलिस में जो कुछ असफलताएं दिखीं हैं, उन्हें उसमें सफलता मिले और उनका मोरल बढ़ा रहे। जो घटनाएं हुई हैं, आज भी उनकी इन्क्वायरी चल रही है। जब हमारे शिंदे साहब मुख्य मंत्री थे, तब उनके काल में कोई ब्लास्ट नहीं हुआ, बहुत रिलीफ था। बाद में जब नायक साहब मुख्य मंत्री थे, तब हुआ तब यहाँ से राव साहब ने श्री शरद पवार को वहां भेजा। आप लोगों ने बड़ी सतर्कता से काम किया।

मुम्बई सिर्फ महाराष्ट्र की राजधानी ही नहीं है, देश के हर कोने से हजारों लोग वहां जाते हैं। वहाँ कोई बांग्लादेश से आता है, कोई इधर से आता है, तो कोई पाकिस्तान से आता है। ये जो बातें हो रही हैं कि वे क्यों आ रहे हैं, कहाँ से आ रहे हैं, वे कौन-सी झोपड़पट्टी में कहाँ रह रहे हैं, यह सब देखना बहुत जरूरी है। मुम्बई में कितने लोग कहाँ से आए हैं, इसका भी खुलासा हो जरूरी है। हमारे नेता बाला साहब ठाकरे भी कहते हैं, कि उसके बंद नहीं होने पर भी इस मामले में कुछ तो करना पड़ेगा। हजारों लोग रोज आ रहे हैं। कोई लोटा लेकर आ जाता है और बैठ जाता है, उसे कुछ मिलता नहीं। वहाँ तो भिखारी लोग भी करोड़ो रुपए कमा लेते हैं। कुछ दिन पहले पेपर में भी आया था कि वे लोग सौ करोड़ रूपये से ऊपर कमा रहे हैं। ...**(व्यवधान)**...

श्री मनोहर जोशी: इन्होंने कहा कि हमारे नेता बाला साहब ठाकरे हैं। ...**(व्यवधान)**... मैं कहना चाहता हूं कि उनका क्या उपयोग है? ...**(व्यवधान)**...

श्री दत्ता मेघे: वे हमारे नेता इसलिए हैं कि वे महाराष्ट्र के नेता हैं। मैं कहता हूं कि कोई उनको अलग नहीं कर सकता है। जो नेता है, वह नेता है। शरद पवार जी नेता हैं, तो नेता हैं। सोनिया गांधी जी नेता हैं तो उसमें गलत क्या है? ...**(व्यवधान)**... हम ही नहीं, समाज के लिए जो आदमी अच्छा काम करता हैं, उसका आदर हमारे भारत में सब करते हैं। **(समय की घंटी)**. .. उपसभाध्यक्ष महोदय, आज भी खतरा है। ...**(व्यवधान)**...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): Please conclude.

श्री दत्ता मेघे: हमारे मराठवाड़ा , कोंकण एरिया और इसके अगल-बगल में जो समुद्र है, वहाँ पर भी व्यवस्था रखना बहुत जरूरी है। आज भी जो शस्त्र आते हैं, उनको देखने के लिए कोई उतना प्रभावी नहीं है। हमारे पाटिल साहब बहुत जानकार हैं, उनको मालूम है। पूरे

महाराष्ट्र की जनता उनके साथ है। वे देश के गृह मंत्री हैं। वे हमारे महाराष्ट्र को बचा सकते है। इसलिए वहाँ क्या कार्रवाई करें, जिससे कि कोई घुसपैठिया आकर वहाँ पर बम विस्फोट न कर सके, इसके लिए खबरदार रहना बहुत जरूरी है। यह पूरे देश का काम है। आप लोगों के ऊपर जिम्मेदारी है। हमारी जिम्मेदारी हम पूरी करने वाले हैं। लेकिन जो निरपराध लोग हैं, तो इसमें मारे जाते हैं, उनके बारे में भी हम लोगों को सोचना जरूरी है। हमने जो कहा है कि सब लोगों को मदद मिल रही है, तो जिनको नहीं मिलती, क्यों नहीं मिलती और क्या नहीं होता, उसे भी देखने का काम जरूरी है। वे तो इधर-उधर घूम नहीं सकते । इस तरह से ये सब बाते आज वहाँ पर हैं। वहाँ लोग काम कर रहे हैं। हम ये सब जो घटनाएं होती हैं, उनकी निन्दा करते हैं। देश में सबको मिल कर आतंकवाद को खत्म करना है, यह हमारा प्रमुख उद्देश्य रहना चाहिए। धन्यवाद, सर।

MS. PRAMILA BOHIDAR (Orissa): Sir, terrorist violence is no more confined to fundamentalist groups. It is not even confined to only certain States or areas in the country like Jammu and Kashmir. It is gradually spreading to many other part of the country. Even States without any international border are also being targeted by terrorists and with foreign links. Even States like Orissa without international border are being targeted by terrorists with or without foreign links.

The recent serial bomb blasts in Mumbai is a continuation of the happenings of 1993 bomb blasts. We must thank the civil population of Mumbai who have not only braved the situation, but also have come together to help the blats victims.

While the intelligence and security agencies are working to find out persons responsible for such criminal and anti-national activities, it is necessary to look at the problem with a larger view. Now, it is report by the media that the Maoists, Naxalites, terrorists and separatists in the North-East are exchanging arms, ammunition, information, and training facilities among themselves.

The Government has to take a total view of the situation. It must look at the Maoist and Naxalite problems in the States of Orissa, Jharkhand, Chhattisgarh, Bihar, Andhra Pradesh and Maharashtra . It is necessary to check any nexus or collaboration between these groups and the foreign aided fundamentalists engaged in terrorist activities.

POTA was an effective law to check terrorism. But it was withdrawn.

This encouraged terrorists. They started more violence. Now it is most necessary to adopt a strong law to prevent terrorism. The Government without loss of times hold act on this. Thank you, Sir.

श्री संजय राउत (महाराष्ट्र): उपसभाध्यक्ष महोदय, इस सदन में मुंबई बम ब्लास्ट का विषय जो आज चल रहा है, वह मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है, बहुत ही गंभीर है, क्योंकि मैं भी मुंबई से आया हूं। बहुत से वक्ताओं ने अपने विचार यहां रखे हैं, अलग-अलग विचार, अलग-अलग सुझाव आए हैं। कुछ विचारों से तो हम सहमत नहीं हो सकते हैं, लेकिन विचार यहां व्यक्त किए गए हैं। जब आदरणीय निर्मला देशपांडे जी यहां इस सदन में अपनी कुछ बातें रख रही थीं, तो मुझे बहुत दुख हुआ और मुझे तो ऐसा लगा कि क्या मैं पाकिस्तान की असेम्बली में बैठा हूं और अपने देश की निंदा सुन रहा हूं। ऐसा तो इस सदन में कभी नहीं हुआ है। इस देश में एक आतंकवादी हमला होता है, उसमें दो सौ ज्यादा लोग मारे जाते हैं, हजार से ज्यादा लोग घायल होते हैं और यहां कहा जाता है कि गोली से नहीं, बोली से इसका समाधान होगा। मैं इसे नहीं मानता। यहां आरडीएक्स आता है, एके-47 आता है, विस्फोटक आते हैं और हम सिर्फ बातें करते रहेंगे, ऐसी बात करना ही निंदा का विषय है।

सर, अभी खतरा टला नहीं है, आगे बढ़ता जा रहा है यहां आदरणीय गृह मंत्री जी बैठे हैं, मैं उनके ध्यान में "टाइम्स ऑफ इंडिया" के 26 जुलाई के फ्रंट पेज पर जो न्यूज आई है, वह न्यूज लाना चाहता हूं, जो जरूरी -"Maoists are going to Mumbai-underworld. Arms belonging to Maoists in Nepal are being smuggled to Mumbai-underworld, according to report of the Directorate of Revenue Intelligence." यह एक अत्यंत चिंता की और गंभीर बात है कि अब नेपाल से भी खतरा बढ़ा है। मुंबई का अंडरवर्ल्ड कौन चला रहा है? मुंबई का अंडरवर्ल्ड दाउद इब्राहीम चला रहा है, मुंबइ का अंडरवर्ल्ड छोटा शकील चला रहा है, मुंबई का अंडरवर्ल्ड अबू सालेम चला रहा है और ये सब पाकिस्तान की आईएसआई के और तोइबा के सबसे बड़े एजेंट यहां है। अगर उनको इस तरह से हथियार मिलते हैं, तो मुझे लगता है कि मुंबई में धमाके होते रहेंगे, मुंबई में हादसे होते रहेगे, हादसे बढ़ते जाएंगे और हम अगर बोलते रहेंगे या ज्यादा चर्चा करते रहेंगे, ता उससे कोई हल नहीं होगा।

श्री अबू आसिम आजमी (उत्तर प्रदेश): आपके क्या सुझाव हैं?

†[شری ابو عاصم اعظمی : آپ کے کیا سجھاؤ ہیں؟]

श्री संजय राउत: हम तो सुझाव देंगे। आपको क्यों तकलीफ हो रही है। हम तो सुझाव देंगे। हम जब दाउद का नाम लेते हैं, छोटा शकील का नाम लेते हैं, अबू सालेम का नाम लेते है, ...(व्यवधान)...

†[ ] Transliteration in Urdu Script.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI DINESH TRIVEDI): Don't pay any attention to that. You please carry on.

श्री अबू आसिम आज़मी: आप जब वहां सरकार में थे, तो आपने क्या किया? **...(व्यवधान)...**

†[**شری ابو عاصم اعظمی** : آپ جب وہاں سرکار میں تھے، تو آپ نے کیا کیا؟ —مداخلت—]

श्री संजय राउत: जब दाउद की बात आती है, छोटा शकील की बात आती है **...(व्यवधान)...**

उपसभाध्यक्ष (श्री दिनेश त्रिवेदी): आज़मी साहब, आप इसके बाद बोलने वाले हैं, उस समय अपने तर्क जरूर रखिएगा।

श्री संजय राउत: जब दाउद का नाम लेते हैं, तो क्या हम टाइम वेस्ट करते हैं। क्यों आपको दाउद से प्यार है? क्यों पाकिस्तान से प्यार है? **...(व्यवधान)...**

श्री वीरेन्द्र भाटिया (उत्तर प्रदेश): सर, यह तो गलत बात है। किसी माननीय सदस्य को जो आप इस तरह कह रहे हैं, यह तो बिल्कुल आपत्तिजनक बात है। **...(व्यवधान)...**

उपसभाध्यक्ष (श्री दिनेश त्रिवेदी): आजमी साहब, आपका बोलने का समय आएगा, तब बोलिएगा।

श्री अबू आसिम आज़मी: सर, महाराष्ट्र में जब पहली बार बीजेपी और शिव सेना की सरकार आई थी, तो इनके मैनिफेस्टो में था कि जैसे हम सरकार में आऍंगे, हम दाउद इब्राहीम को गिरफतार कर लेंगे। हम तो खुश थे कि गिरफतार करो, मगर 6 साल तक इन्होंने उसका नाम ही नहीं लिया।

†[**شری ابو عاصم اعظمی** : سر، مہاراشٹر میں جب پہلی بار بی جے پی اور شیوسینا کی سرکار آئی تھی، تو ان کے مینیفیسٹو میں تھا کہ جیسے ہم سرکار میں آئیں گے،

श्री संजय राउत: सर, मैंने इतना ही कहा है कि एक बार फिर नेपाल के माओवादियों से अंडरवर्ल्ड को हथियार मिल रहे हैं। यह इंटेलीजेन्स की रिपोर्ट है, वह ''टाइम्स ऑफ इंडिया'' के

†[ ] Transliteration in Urdu Script.

फ्रंट पेज पर छपी है। मैंने उस ओर माननीय गृह मंत्री जी का सिर्फ ध्यान आकर्षित किया है। आपको तकलीफ क्यों हो रही है? ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री दिनेश त्रिवेदी): आप मेहरबानी करके Please don't disturb.

श्री संजय राउत: अगर आपको कोई तकलीफ है, जब हम आईएसआई का मान लेते हैं, दाउद का नाम लेते हैं, तो मैं क्या कर सकता हूं? सरकार देखेगी, गृह मंत्री बैठे हैं। मुम्बई में जो खौफनाक हमला हुआ, सिर्फ 11 मिनट में 7 विस्फोट हो गए और उस हमले में जो मासूम लोग मारे गए, उन मासूम लोगों की चिताओं की आग अभी भी ठंडी नहीं हुई है, घायलों के जख्म नहीं भरे हैं, कुछ घायल आज भी जिंदगी और मौत से जूझ रहे हैं और कम से कम 50 लोग आज भी लापता हैं।

एक बात तो मैं साफ तौर से कहूंगा कि इस घटना की निन्दा सब पार्टियों ने की। हर पार्टी का नेता, बड़ा नेता मुम्बई आया, संवेदना जताई- सोनिया गांधी आईं, लाल कृष्ण आडवाणी जी आए, राष्ट्रपति , प्रधानमंत्री, सब नेता आए। अमर सिंह जी भी आए, मैं उनका नाम भी लेने वाला हूं। मुम्बई में आकर सबसे महत्वपूर्ण बात अगर किसी ने कही तो अमर सिंह जी ने कही। अमर सिंह जी नें एक बात बहुत महत्वपूर्ण कही, उन्होंने कहा–

"How come blasts occur in Delhi and Mumbai only when Congress Party is in power?"

जब दिल्ली और महाराष्ट्र में कांग्रेस की सत्ता होती है तब ही बम-ब्लॉस्ट क्यों होते हैं? ऐसा सवाल, जो अमर सिंह जी ने पूछा है, मुझे लगता है कि हमें इसका जवाब ढूंढना चाहिए और गृह मंत्री जी को भी इसका उत्तर देना चाहिए।

डा॰ प्रभा ठाकुर (राजस्थान): ब्लॉस्ट वे करवाते हैं, जिन्हें कांग्रेस की सत्ता बर्दाश्त नहीं होती, मेरा भी यह कहना है माननीय सदस्य से।

श्री संजय राउत: सर, कांग्रेस का आतंकवाद से क्या रिश्ता रहा है? मुझे लगता है आतंकवाद का रिश्ता वोट बैंक की राजनीति से होतो है, मुस्लिम तुष्टिकरण की जो राजनीति होती है, उससे आतंकवाद का रिश्ता होता है। लम्बे समय तक देशद्रोहियों और आतंकवादियों के प्रति सरकार की जो उदासीनता रही, उसका फल आज पूरा देश भोग रहा है। प्रधानमंत्री डा॰ मनमोहन सिंह जी ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री के सामने कहा था कि इस हादसे की, बम-ब्लॉस्ट की सूचना दो महीने पहले महाराष्ट्र सरकार को केन्द्र ने दी थी। इस चेतावनी के बावजूद, राज्य की सरकार सोती

रही और 200 लोग मुम्बई ब्लॉस्ट में मारे गए, यह बहुत चिंताजनक और गंभीर बात है। लेकिन इस चेतावनी के बावजूद अगर राज्य सरकार कुछ नहीं करती, तो मैं पूछता हूं कि केन्द्र सरकार ने राज्य सरकार पर क्या कड़क कार्रवाई की? कुछ नहीं किया। इस विस्फोट के बाद हमारे देश के मुस्लिम भाइयों को लोग शंका की दृष्टि से देखने लगे, संदेह की नजर से देखने लगे, यह दुख की बात है। इस देश के राष्ट्रपति एक ऐसे व्यक्ति हैं, जिनका हम आदर करते हैं, जिनको हम एक आदर्श की तरह सामने रखते हैं और अपने बच्चों को कहते हैं कि अगर कुछ बनना है तो डा॰ कलाम जैसे बनो, कुछ करना है तो डा॰ कलाम का आदर्श अपने सामने रखो। इस हादसे के बाद हर मोबाइल पर एक "डै उभरकर आया था। डै क्या था? हर मुसलमान आतंकवादी नहीं है, लेकिन हर आतंकवादी मुसलमान क्यों होता है? सर, यह सच है कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता, लेकिन आज धर्म के नाम पर मुम्बई में, महाराष्ट्र में, पूरे देश में आतंकवाद हो रहा है और इस आतंकवाद के पीछे लश्कर-ए-तैय्यबा, जैश-ए-मोहम्मद, पाकिस्तान की आईएसआई और भारी संख्या में जो बंगलादेशी इस मुल्क में घुसे हैं, उनका हाथ है। इन बंगलादेशियों को भगाना चाहिए, यहां से हटाना चाहिए, यह नारा सबसे पहले दिया था शिव सेना ने, मुम्बई में। बाला साहेब ठाकरे जी ने कहा था कि इन बंगलाशियों को भगाओं, इनसे देश को खतरा है। लेकिन, यह चीज जब बाला साहेब ठाकरे कहते थे तो यहां बैठे हुए हमारे कुछ साथी कहते थे कि यह तो बहुत भड़काऊ भाषण है, बाला साहेब ठाकरे धार्मिक चेतावनी की बात करते हैं। क्योंकि, उन बंगलादेशियों में भी कुछ लोगों को अपनी वोट बैंक की राजनीति नजर आती थी।

उपसभाध्यक्ष (श्री दिनेश त्रिवेदी): आप, बंगलादेशी यानी इललीगल इम्मिग्रेंट्स की बात कर रहे हैं न?

श्री संजय राउत: जी, मैं उन्हीं की बात कर रहा हूं, जो बंगलादेशी पाकिस्तान से, नेपाल से या बंगलादेश से इललीगली आते हैं। मैं ऐविडेंस के साथ कह सकता हूं, उनको राशन कार्ड देने का काम किसने किया, वोटर लिस्ट में उनका नाम डालने का काम किसने किया, सब कांग्रेस ने किया। महाराष्ट्र में जब-जब कांग्रेस की सरकार रही, तब-तब मुम्बई में, ठाणे में, नवीं मुम्बई में दो लाख बंगलादेशी आ गए, जिनका नाम वोटर लिस्ट में है। नवीं मुम्बई में दो लाख से भी ज्यादा लोग हैं, जिनका नाम वोटर लिस्ट में है और मुंब्रा में तो उससे भी ज्यादा हैं।

सर, ये बांग्लादेशी कहां से आते हैं? उनका कोई ठिकाना नहीं है। यह बांग्लादेशी घुसपैठिए एक कैंसर रोग की तरह चारों ओर फैल गए हैं और इंटैलिजेंस ब्यूरो की जो रिपोर्ट है, उसमें सह स्पष्ट कहा गया है कि इन बांग्लादेशियों का इस्तेमाल ही इन बॉम्ब ब्लास्ट्स में अथवा मानव बॉम्ब

की तरह या फिर बॉम्ब्स कैरियर की तरह किया जाता है। आज इस देश में आईएसआई के 250 मॉड्यूस एक्टिव हैं। ये मॉडयूल्स स्थानीय बांग्लादेशियों में जो टैररिस्ट है, उनके सहयोग से चलते हैं। इसमें जम्मू-कश्मीर के, मैं नाम नहीं लेना चाहता, लेकिन इन मॉडयूल्स को स्लीपर सेल्स कहा जाता है। स्लीपर सेल्स का मतलब यह है कि उनका कोई भी क्रिमिनल रिकॉर्ड नहीं होता है। जब कोई बड़ा हादसा करना होता है, तब उनको यूज़ किया जाता है, जैसे कि मुम्बई में किया गया है। इनमें से 146 स्लीपर सेल्स उत्तर प्रदेश में काम कर रहे हैं। बिहार, पश्चिम बंगाल और असम में भी ये सक्रिय हैं। दक्षिणी राज्यों में इनकी संख्या 80 है और महाराष्ट्र में 6 स्लीपर सेल्स काम कर रहे हैं। इनके पास भारी मात्रा में हथियार एवं विस्फोटक होते हैं। आरडीएक्स जैसे विस्फोटक एवं इसी तरह का अन्य सामान भी रहता है।

सर, हमारे देश की सीमाओं को नेपाल, पाकिस्तान और बांग्लादेश इन तीनों ने घेरा हुआ है। पिछले केवल एक वर्ष में ही अकेले महाराष्ट्र में 200 मुस्लिम युवकों को प्रशिक्षित किया गया है। प्रशिक्षण देने के लिए उन्हें अब पाकिस्तान नहीं बल्कि बांग्लादेश में ले जाया जाता है। बमकांड के तुरंत बाद पूर्वोत्तर सीमा पर, मुंब्रा में पकड़े गए दो दर्जन युवकों को भी प्रशिक्षण के लिए ही ले जाया जा रहा था।

सर, देश के गृह मंत्री जी ने मदरसों के बारे में एक बात कही थी कि मदरसे मानवता के मंदिर हैं। मैं उनसे कुछ हद तक ही सहमत हूं। मदरसे धार्मिक कार्य करते हैं, सामाजिक कार्य भी करते होंगे, लेकिन महाराष्ट्र के जलगांव एव मराठवाड़ा में कुछ मदरसों में ऐसी बात नजर आई है कि वहां आतंकवादी गतिविधियां चालू थीं और वहां पर कुछ लोग पकड़े भी गए हैं। नवीं मुम्बई में भी जो चार लोग पकड़े गए, उनका संबंध भी मदरसों से ही था। मैं यह नहीं कहूंगा कि दाढ़ी रखने वाला हर मुसलमान ओसामा बिन लादेन है। मैं हर मदरसे के ऊपर उंगली नहीं उठाऊंगा लेकिन कुछ न कुछ गड़बड़ तो है, हमें उस गड़बड़ को देखना पड़ेगा।

मैं यहां पर एक बात और कहना चाहता हूं कि जब भी ऐसी दुर्घनाएं होती हैं, ब्लास्ट होता है अथवा टैररिस्ट अटैक होता है तो पाकिस्तान का नाम लिया जाता है। Every time, after a blast or terror attack, we point fingers at Pakistan which is quite easy. लेकिन, सर, पाकिस्तान का नाम लेने से कुछ नहीं होगा, क्योंकि पाकिस्तान का हाथ इतना लम्बा नहीं है, दाऊद का क़द भी इतना लम्बा नहीं है। इस देश की आबादी 100 करोड़ की है, यह देश महाकाय है, महाभारत है और यह पाकिस्तान या दाऊद के कुछ कहने या कुछ करने से खत्म नहीं होगा।

इस देश में जो छोटे-छोटे पाकिस्तान बने हुए हैं, उन छोटे-छोटे पाकिस्तानों में एक दाऊद है, एक मुशर्रफ है, उन्हीं से देश को ज्यादा खतरा है। मुझे लगता है कि पहले उन्हें खत्म किया जाए और बाद में क्रॉस बॉर्डर टैररिज्म की बात की जाए। जब तक ये ताकतें खत्म नहीं होंगी, तब तक देश के लिए खतरा इसी तरह बढ़ता रहेगा।

सर, मैं आपका ज्यादा समय नहीं लूंगा, आपने मुझे समय दिया है, एक बात मैं और कहूंगा कि जब भी कोई आतंक की घटना होती है और कुछ लोग पकड़े जाते हैं, जो किसी धर्म विशेष से संबंध रखते हैं, उन्हें इनोसेंट कहा जाता है। आतंकवादी इनोसेंट नहीं होता। मैं एक बात बताना चाहूंगा कि एक-दो साल पहले गुजरात में आपने इशरत जहां की कहानी सुनी होगी। यह मुब्रा की एक लड़की थी, जो गुजरात में गई और उसके माध्यम से कुछ आतंकवादी घटनाएं की जाने वाली थीं। वह अपने साथियों के साथ वहां गई और गुजरात पुलिस के हाथों मारी गई। उसका मिशन था नरेन्द्र मोदी की हत्या करना, लेकिन पुलिस के हाथों मारे जाने के बाद ह्यूमेन राइट्स वाले भी इशरत जहां की वकालत करने लगे। कहने लगे कि वह तो इनोसेंट थी, उसे क्यों मारा? लेकिन, सर, जब इसी इशरत जहां को पाकिस्तान की अखबारों ने शहीद करार दिया, तब उसकी मासूमियत कहां गई? उस समय उनकी कोई निन्दा भी नहीं की गई उनके घर बहुत से नेता भी गए. ..(व्यवधान)... नहीं आप उसे मासूम क्यों कहेंगे ...(व्यवधान)... नहीं, नहीं, मासूम थी, लेकिन अगर पाकिस्तान की अखबारों ने उसे शहीद करार दिया है, तब आप उसको मासूम क्यों कहते हैं ...(व्यवधान)... प्रमाणित हुआ है कि वह आतंकवादी है।

[उपसभाध्यक्ष (प्रो॰पी॰जे॰ कुरियन) पीठासीन हुए]

प्रमाणित हुआ है कि वे आतंकवादी है। ...(व्यवधान)... नहीं, अगर उनको आतंकवादी करार दिया है तो आप कैसे उनको मासूम कहते हैं और यही बात है कि जो टैरोरिस्ट्स को बढ़ा रही हैं। सर, मैं मानता हूं कि आतंकवाद मानवता का दुश्मन है और इससे लड़ने के लिए सभी को एक जुट होना चाहिए। अगर इस लड़ाई में हम शामिल नहीं हुए तो हमें मानव होने का अधिकार नहीं है। हिन्दुस्तान ने युद्ध में इतने जवान नहीं खोए होंगे, जितने आतंकवाद के शिकार हुए हैं। इस देश के स्वतंत्रता संग्राम में जितने लोग शहीद नहीं हुए उससे कहीं अधिक 25 साल में आतंकवाद में मारे गए हैं। सर, आखिर में मैं इतना ही कहूंगा कि देश खतरे में है, कैसा है यह खतरा, एक ही बात आखिर में कहूंगा कि अफगानिस्तान के दिशखोर प्रांत के बंकर से अमेरिकी सेना ने कुछ अलकायदा लड़ाकू हाल ही में पकड़े। उनके पास से एक नोट बुक मिली, उसमें अलकायदा के उस लड़ाकू ने "ललकार" नाम की एक कविता लिखी थी, क्या थी वह कविता? वह कविता ऐसी थी कि:

"कल रूस को बिखरते देखा था, अब इंडिया को टूटते देखेंगे,

हम बर्क-ए-जमाल के शोलों से अमेरिका को जलता देखेंगे।"

इंडिया को तोड़ने को, हिन्दुस्तान को तोड़ने का यह सपना है और इस सपने को अंजाम देने का काम इस देश के कुछ आतंकवादी संगठन कर रहे हैं। मुझे लगता है इस खतरे को हमें महसूस करना चाहिए और इस खतरे से लड़ने की तैयारी हमें करनी चाहिए और यह खतरा गोली से नहीं तो बोली से खत्म होगा। धन्यवाद।

श्री अबू आसिम आज़मी: सर, थैंक्यू वेरी मच, आपने मुझे मुम्बई के बम ब्लास्ट के बारे में बोलने का समय दिया। सर, 11 जुलाई को मुम्बई में 7 जगहों पर ट्रेनों में जो वाक्यात हुए, हर इंसान ने इसकी निंदा की, मज़म्मत की। जितनी कड़े लफ्जों में इसकी मज़म्मत करनी चाहिए, मुझे लगता है कि हर आदमी ने की है और खास तौर से इस देश के मुसलमानों ने, तो घूम-घूमकर माइक ढूंढा है, अखबार ढूंढा है कि किसी तरह मेरा नाम छप जाए, नहीं तो कुछ लोग इस देश में ऐसे बैठे हैं जब कभी भी बम ब्लास्ट होता है, बगैर इंक्वायरी के घंटे-दो घंटे-तीन घंटे के अंदर किसी मुस्मिल संगठन या किसी मुस्लिम आदमी का नाम ले लेतें है कि बम ब्लास्ट किया है। सर, बहुत ही सीरियस मामला है। मेरा मानना है कि इसमें कोई राजनीति नहीं होनी चाहिए। इसके लिए हम तमाम लोगों को, तमाम पार्टियों को इसके लिए मिलकर लड़ना चाहिए, सच्चाई के लिए ...**(व्यवधान)**...

श्री संजय राउत: सर, आपने अच्छा काम किया है...**(व्यवधान)**...

श्री अबू आसिम आज़मी: नहीं, हम हमेशा अच्छा काम ही करते हैं, हम कभी खराब काम नहीं करते। हम खराब लोगों के खिलाफ हैं, हम इस देश में एकता चाहते हैं। सर, मैं सिर्फ दो-तीन बातें कहना चाहता हूं। बार-बार यह बात कही जाती है कि तमाम देश के मुसलमान आतंकवादी नहीं हैं, परन्तु तमाम आतंकवादी मुसलमान ही क्यों हैं। मैं उन तमाम लोगों से सवाल पूछना चाहता हूं कि आतंकवाद की परिभाषा क्या है। आप मुझे बता दीजिए कि इस देश के अंदर गांधी जी का मर्डर हुआ था। क्या मुसलमान ने किया था? इस देश के अंदर इंदिरा गांधी की हत्या हुई थी। क्या मुसलमान ने की थी? इस देश में राजीव गांधी की हत्या हुई थी। क्या मुसलमान ने की थी? इस देश में माँआइस्ट, क्या मुसलमान हैं? इस देश में नक्सालाइट्स हैं, क्या वे मुसलमान हैं? सर, गुजरात के अंदर दो हजार पांच सौ लोग मार दिए गए, जला दिए गए। यह आतकवाद नहीं है? तो आपको अगर यह नहीं मालूम है, आप कह रहे हैं कि सारे आतंकवादी मुसलमान क्यों हैं तो आप उसमें जोड़ लीजिए और आपकी जानकारी के लिए, आप जानते भी हैं आपको बताने की जरूरत भी नहीं है लेकिन आप जानबूझकर एक समुदाय को चिड़ाने की

कोशिश कर रहे हैं। मैं कहना चाहता हूं कि आपको क्या नहीं मालूम है। हम कह रहे हैं कि अगर इस देश में आतंकवादी मुसलमान हैं तो गिरफ्तार कीजिए, हम सबसे आगे बढ़कर उसे गिरफ्तार करवाना चाहते हैं। परन्तु आप मुसलमान नाम मत दीजिए। हर मजहब के अंदर चाहे हिन्दू मजहब हो, चाहे क्रिश्चियन मजहब हो, सिख हो, इसाई हो, हर मजहब के अंदर लोग पैदा हुए हैं जो अपने मजहब से बगावत करते हैं। हो सकता है कि मुसलमान हो, हो सकता है हिन्दू हो, हो सकता है क्रिश्चियन हो, लेकिन उसका किसी रिलीजन से नाम लिखना चाहिए, यह मेरा आपको बोलना है। मैं कहना चाहता हूं कि अभी जो इंक्वायरी हो रही है इस इंक्वायरी के ऊपर तमाम मुसलमानों को शक के दायरे में ला दिया गया है। सर, मैं कल मुम्बई गया था। मुम्बई के अंदर कुछ लोग इस जमात के हैं कि जो जमात जमीन के नीचे और आसमान के ऊपर की बात करती है तथा दुनिया में क्या हो रहा है उससे कोई मतलब नहीं कि कहां कौन सी पॉलिटिक्स चल रही है, कौन सी बिरादरी क्या कर रही है, उससे कोई मतलब नहीं हैं। वह सिर्फ मजहब के बारे में बात करती है कि मुसलमानों, अगर इस दुनिया में रहना है तो नमाज पढ़ो, रोजा रखो, और धर्म पर चलो, किसी को मारो मत। अगर एक इंसान को मारा तो हर इंसानियत का कत्ल हैं। इस तरह की चीजें करने वाले जो लोग हैं, उनको कल गिरफ्तार कर लिया गया। क्या कहकर कि ये भाभा एटोमिक की तरफ से गुज़र रहे थे, इनके दाढ़ी थी। वह रास्ता जो टूटा हुआ है, उस रास्ते से आम पब्लिक जाती है, वे भी जा रहे थे, किसी को गिरफ्तार नहीं किया गया, लेकिन मुसलमान को गिरफ्तार करके जेल भेज दिया। लोग त्रिपुरा गए थे, जा रहे हैं, यह जमात हमेशा जाती रहती है और ये सब पदजमससमबजनंस लोग हैं, उनको आपने गिरफ्तार कर लिया। मुम्बई से एटीएस गयी, उनको चेक किया, उनकी इंसल्ट की गयी। मैं यहां पर बताना चाहता हूं कि कल जब मैं मुम्बई गया तो मेरे पास एक बेचारा कश्मीरी आया। रोता हुआ लगा कहने लगा कि आसिम भाई, मेरे पास रात को ढाई बजे आए और मुझे गिरफ्तार करके ले गए। ढाई बजे रात से दूसरे दिन नौ, साढ़े नौ बजे तक मुझे वहां रखा और कहा कि दो साल तुम्हें जेल में रखेंगे। दस हज़ार रुपए मैंने दिए हैं, तब मैं छूटकर आया हूं। कह रहा था कि क्या मेरा कश्मीरी होना या मुसलमान होना इस देश में जुर्म है? यह मैं होम मिनिस्टर साहब से कहना चाहता हूं कि इस बात को नोट किया जाए और यह चीज़ मुम्बई में बंद की जाए। मेरा एक रिश्तेदार है। कल रात को उसे साढ़े नौ बजे पुलिस ने उसके घर में से पकड़ा और उसके घरवालों से कहा कि दूसरे दिन सुबह साढ़े नौ बजे आना तब बात करेंगे। इस तरह से अगर मुसलमानों को तंग किया जा रहा है तो मैं समझता हूं कि यह बात ठीक नहीं है। सर, मैं आपको बताना चाहता हूं कि आज अगर इस देश में आतंकवादी गतिविधियां बढ़ रही हैं तो उसके

जिम्मेदार वे लोग हैं, जो इस देश के अंदर नफरत फैला रहे हैं। अगर आईएसआई के लोग इस देश के अंदर आतंकवादी गतिविधियां बढ़ा रहे हैं तो मैं यह कहना चाहता हूं कि उनको गिरफ्तार कीजिए, कोई रोकने वाला नहीं है, हम सब चाहते हैं कि वे पकड़े जाएं। अगर लश्करे-तैयबा के लोग इस देश में एक्टिव हैं, तो उन्हें गिरफ्तार कीजिए। परन्तु मैं यह कहना चाहता हूं कि एक ही तरफ शक की सुई क्यों जाती है। मेरा सिर्फ यह कहना है कि आज अगर नान्देड़ के अंदर, पाट बंदारे नगर में घर में बम बन रहा था और बम बनाने वाले *यह होम मिनिस्टर ने कहा है, मैंने नहीं कहा है। यह अखबार में छपा हुआ है। ...(व्यवधान)...

श्री सुरेन्द्र लाठ (उड़ीसा): यह कहीं से भी प्रमाणित नहीं हो ...(व्यवधान)... यह आरोप लगाया जा रहा है। ...(व्यवधान)...

श्री अबू आसिम आज़मी: अखबार में छपा हुआ है, यह मैंने नहीं कहा है। ...(व्यवधान).. आप सुनिए अगर आप वाकई इस देश से आतंकवादी गतिविधियां बंद करना चाहते हैं, तो खुलकर चर्चा होनी चाहिए। ...(व्यवधान)... इस देश में आप जितनी भी सिक्योरिटी बढ़ा दें, कुछ नहीं होगा जब तक हम इस पर चर्चा नहीं करेंगे। ...(व्यवधान)...

†[श्री ابو عاصم اعظمی "اتر پردیش" : سر، تھینک یو ویری مچ، آپ نے مجھے ممبئی کے بم بلاسٹ کے بارے میں بولنے کا وقت دیا۔ سر، ۱۱ر جولائی کو ممبئی میں ۷ جگہوں پر ٹرینوں میں جو واقعہ ہوا، ہر انسان نے اس کی نندا کی، مذمت کی۔ جتنے کڑے لفظوں میں اس کی مذمت کرنی چاہیئے، مجھے لگتا ہے کہ ہر آدمی نے کی ہے اور خاص طور سے اس دیش کے مسلمانوں نے، تو گھوم گھوم کر مائک ڈھونڈا ہے، اخبار ڈھونڈا ہے کہ کسی طرح میرا نام چھپ جائے، نہیں تو کچھ لوگ اس دیش میں ایسے بیٹھے ہیں جب کبھی بھی بم بلاسٹ ہوتا ہے، بغیر انکوائری کے گھنٹے دو گھنٹے تین گھنٹے کے اندر کسی مسلم سنگھٹن یا کسی مسلم آدمی کا نام لے لیتے ہیں کہ بم بلاسٹ کیا ہے۔ سر، یہ بہت ہی سنجیدہ معاملہ ہے۔ میرا ماننا ہے کہ اس میں کوئی راجنیتی نہیں ہونا چاہئے۔ اس کے لئے ہم تمام لوگوں کو، تمام پارٹیوں کو اس کے لئے ملکر لڑنا چاہئے، سچائی کے لئے ....مداخلت....

†[ ] Transliteration in Urdu Script.
*Expunged as ordered by the Chair.

شری سنجے راؤت : سر، آپ نے اچھا کام کیا ہے .....مداخلت.....

شری ابوعاصم اعظمی: نہیں، ہم ہمیشہ اچھا کام ہی کرتے ہیں، ہم کبھی خراب کام نہیں کرتے ہیں۔ ہم خراب لوگوں کے خلاف ہیں، ہم اس دیش کی ایکتا چاہتے ہیں۔ سر، میں صرف دو تین باتیں کرنا چاہتا ہوں۔ بار بار یہ بات کہی جاتی ہے کہ تمام دیش کے مسلمان آتنک وادی نہیں ہے، لیکن تمام آتنک وادی مسلمان ہی کیوں ہیں؟ میں ان تمام لوگوں سے سوال پوچھنا چاہتا ہوں کہ آتنک واد کی پریبھاشا کیا ہے۔ آپ مجھے بتا دیجیے کہ اس دیش کے اندر گاندھی جی کا مرڈر ہوا تھا۔ کیا مسلمان نے کیا تھی؟ اس دیش کے اندر اندرا گاندھی کی ہتھیا ہوئی تھی۔ کیا مسلمان نے کی تھی؟ اس دیش میں راجیو گاندھی کی ہتھیا ہوئی تھی، کیا مسلمان نے کی تھی؟ اس دیش میں مائیسٹ ہیں، کیا مسلمان ہیں؟ اس دیش میں نکسلسٹ ہیں، کیا وہ مسلمان ہیں؟ سر، گجرات کے اندر دو ہزار پانچ سو لوگ مار دیے گئے، جلا دیے گئے۔ یہ آتنک واد نہیں ہے؟ تو آپ کو اگر یہ نہیں معلوم ہے، آپ کہہ رہے ہیں کہ سارے آتنک وادی مسلمان کیوں ہیں تو آپ اس میں جوڑ لیجئے اور آپ کی جانکاری کے لئے، آپ جانتے بھی ہیں آپ کو بتانے کی ضرورت بھی نہیں ہے لیکن آپ جان بوجھ کر ایک فرقہ کو چڑانے کی کوشش کر رہے ہیں۔ میں کہنا چاہتا ہوں کہ آپ کو کیا نہیں معلوم ہے۔ ہم کہہ رہے ہیں کہ اگر اس دیش میں آتنک وادی مسلمان ہیں تو گرفتار کیجئے، ہم سب سے آگے بڑھکر اسے گرفتار کروانا چاہتے ہیں۔ لیکن آپ مسلمان نام مت دیجئے۔ ہر مذہب کے اندر چاہے ہندو مذہب ہو، چاہے کرسچن مذہب ہو، سکھ ہو، عیسائی ہو، ہر مذہب کے اندر لوگ پیدا ہوئے ہیں جو اپنے مذہب سے بغاوت کرتے ہیں۔ ہوسکتا ہے کہ مسلمان ہو، ہوسکتا ہے ہندو ہو، ہوسکتا ہے کرسچن ہو لیکن اس کا کسی مذہب سے نام نہیں جوڑنا چاہئے، یہ میرا آپ کو بولنا ہے۔ میں کہنا چاہتا ہوں کہ ابھی جو انکوائری ہو رہی ہے اس انکوائری کے اوپر تمام مسلمانوں کو شک کے دائرے میں لا دیا گیا ہے۔ سر، میں کل ممبئی گیا تھا۔ ممبئی کے اندر کچھ لوگ اس جماعت کے کہ جو زمین کے نیچے اور آسمان کے اوپر کی بات کرتی ہے تھانہ دنیا میں کیا ہو رہا ہے اس کے کوئی مطلب نہیں کہ کہاں کون سی پالیٹیکس چل رہی ہے، کون سی برادری کیا کر رہی ہے اس سے کوئی مطلب نہیں ہے۔ وہ صرف مذہب کے بارے میں بات کرتی ہے کہ مسلمانوں، اگر اس دنیا میں رہتا ہے تو نماز پڑھو، روزہ رکھو، اور دھرم پر چلو، کسی کو مارو مت۔ اگر ایک انسان کو مارا تو ہر انسانیت کا قتل ہے۔ اس طرح کی چیزیں کرنے والے

جولوگ ہیں، ان کوکل گرفتار کرلیا گیا۔

کیا کہہ کر کہ یہ بھابھا اٹامک کی طرف سے گزر رہے تھے، ان کے داڑھی تھی۔ وہ راستہ جوٹوٹہ ہوا ہے، اس راستے سے عام پبلک جاتی ہے، وہ بھی جارہے تھے، کسی کو گرفتار نہیں کیا گیا، لیکن مسلمان کو گرفتار کر کے جیل بھیج دیا۔ لوگ تری پورہ گئے تھے، جارہے ہیں، یہ جماعت ہمیشہ جاتی رہتی ہے اور یہ سب Intellectual لوگ ہیں، ان کو آپ نے گرفتار کرلیا۔ ممبئی سے اے ٹی ایس گئی، ان کو چیک کیا، ان کی انسلٹ کی گئی۔ میں یہاں پر بتانا چاہتا ہوں کہ کل جب میں ممبئی گیا تو میرے پاس ایک بیچارہ کشمیری آیا۔ روتا ہوا کہنے لگا کہ عاصم بھائی، میرے پاس رات کو ڈھائی بجے آئے اور مجھے گرفتار کر کے لے گئے۔ ڈھائی بجے رات سے دوسرے دن نو، ساڑے نو بجے تک مجھے وہاں رکھا اور کہا کہ دو سال تمہیں جیل میں رکھیں گے۔ دس ہزار روپے میں نے دیئے ہیں، تب میں چھوٹ کر آیا ہوں۔ کہہ رہا تھا کہ کیا میرا کشمیری ہونا یا مسلمان ہونا اس دیش میں جرم ہے؟ یہ میں ہوم منسٹر صاحب سے کہنا چاہتا ہوں کہ اس بات کو نوٹ کیا جائے اور یہ چیز ممبئی میں بند کی جائے۔ میرا ایک رشتہ دار ہے۔ کل رات کو اسے ساڑھے نو بجے پولیس نے اس کے گھر میں سے پکڑا اور اس کے گھر والوں سے کہا کہ دوسرے دن صبح ساڑے نو بجے آنا تب بات کریں گے۔ اس طرح سے اگر مسلمانوں کو تنگ کیا جارہا ہے تو میں سمجھتا ہوں کہ یہ بات ٹھیک نہیں ہے۔

سر، میں آپ کو بتانا چاہتا ہوں کہ آج اگر اس دیش میں آتنک وادی گتی ودھیاں بڑھ رہی ہیں تو اس کے ذمہ دار وہ لوگ ہیں، جو اس دیش کے اندر نفرت پھیلا رہے ہیں۔ اگر آئی ایس آئی کے لوگ اس دیش کے اندر آتنک وادی گتی ودھیاں بڑھا رہے ہیں تو میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ ان کو گرفتار کیجئے، کوئی روکنے والا نہیں ہے، ہم سب چاہتے ہیں کہ وہ پکڑے جائیں۔؛ اگر لشکر طیبہ کے لوگ اس دیش میں ایکٹیو ہیں، تو انہیں گرفتار کیجئے۔ لیکن میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ ایک ہی طرف شک کی سوئی کیوں جاتی ہے۔ میرا صرف یہ کہنا ہے کہ آج اگر ناندیڑ کے اندر، پاٹ بندارے نگر میں گھر میں بم بن رہا تھا اور بم بنانے والے (*) یہ ہوم منسٹر نے کہا ہے، میں نے نہیں کہا ہے۔ یہ اخبار میں چھپا ہوا ہے .....مداخلت.....

شری سریندر لاٹھ : یہ کہیں سے بھی پرمانت نہیں ہوا .....مداخلت..... یہ آروپ لگایا جارہا ہے.....مداخلت.....

شری ابوعاصم اعظمی : اخبار میں چھپا ہوا ہے، یہ میں نے نہیں کہا ہے۔ .....مداخلت..... آپ سنئے۔ اگر آپ واقعی اس دیش سے آتنک وادی گتی ودھیا بند کرنا چاہتے ہیں، تو کھلر کر چرچہ ہونی چاہئے.....مداخلت.....

اس دیش میں آپ جتنی بھی سیکورٹی بڑھادیں، کچھ نہیں ہوگا جب تک ہم اس پر چرچہ نہیں کریں گے
.....مداخلت.....]

श्रीमती माया सिंह (मध्य प्रदेश): अगर तथ्य नहीं हो तो इस तरह के आरोप नहीं लगाने चाहिए। ...(व्यवधान)...

श्रीमती सुषमा स्वराज (मध्य प्रदेश): यह रिकॉर्ड में नहीं जाना चाहिए। ...(व्यवधान)...

श्री अबू आसिम आज़मी: *सर जब वहां चैकिंग हुई तो पुलिस को वहां दाढ़ी मिली। ...(व्यवधान)...

[**شری ابو عاصم اعظمی** : سر، جب * وہاں چیکنگ ہوئی تو پولیس کو وہاں داڑھی ملی ---مداخلت---]

श्रीमती सुषमा स्वराज: सर, अखबार के आधार पर यह कह देना कि* यह रिकॉर्ड पर नहीं जाएगा।...(व्यवधान)...

श्री अबू आसिम आज़मी: पुलिस को वहां कुर्ता-पायजामा मिला...(व्यवधान)...

†[**شری ابو عاصم اعظمی** : پولیس کو وہاں کرتا پائجامہ ملا ---مداخلت---]

श्रीमती सुषमा स्वराज: अगर इस बहस को आगे चलाना है तो *यह रिकॉर्ड पर नहीं जाएगा, वरना फिर उसी दिन की तरह होगा।...(व्यवधान)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Mr. Azmi, please...(*Interruptions*)... Just a minute, Mr. Azmi...(*Interruptions*)... We are discussing ...(*Interruptions*)... Please listen to me ...(*Interruptions*)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: यह बहस अभिशप्त हो गयी हैं अगर इस बहस को आगे बढ़ाना है तो आप इतना भर कर लीजिए कि यह रिकॉर्ड पर नहीं जाएगा। ...(व्यवधान) *... इस तरह से नाम, अखबार के आधार पर, कि वे थे...(व्युवधान)...

श्री अबू आसिम आज़मी: सर, मुझे इस देश की चिंता है। मैं इस मुल्क में रहता हूं, मुझे इस मुल्क की सिक्योरिटी की चिंता है। ...(व्यवधान)... अगर इस मुल्क की सिक्योरिटी पर चर्चा नहीं होगी तो...(व्यवधान)...

†[**شری ابو عاصم اعظمی** : سر، مجھے اس دیش کی چنتا ہے. میں اس ملک میں رہتا ہوں، مجھے اس ملک کی سیکورٹی کی چنتا ہے ---مداخلت--- اگر اس ملک کی سیکورٹی پر چرچا نہیں ہوگی تو ---مداخلت---]

श्रीमती सुषमा स्वराज: सर, रिकॉर्ड से निकलवा दीजिए, फिर बहस चलेगी ...(व्यवधान)...

श्री अबू आसिम आज़मी: मैं जब से इस बहस में आया हूं यह पहली चर्चा नहीं है। ...(व्यवधान)... हर सेशन में इस पर चर्चा होती है। हर सेशन में चर्चा होती है ...(व्यवधान)...

*Expunged as ordered by the Chair.
†[ ] Transliteration in Urdu Script.

†[شری ابو عاصم اعظمی : میں جب سے اس بحث میں آیا ہوں، یہ پہلی چرچا نہیں ہے ---مداخلت--- ہر سیشن میں اس پر چرچا ہوتی ہے۔ ہر سیشن میں چرچا ہوتی ہے۔ ---مداخلت---]

श्रीमती सुषमा स्वराज: रिकॉर्ड से निकलवा दीजिए, फिर चर्चा चलेगी। ...(**व्यवधान**)... रिकॉर्ड से निकलवा दीजिए ...(**व्यवधान**)...

श्री अबू आसिम आज़मी: सर, हकीकत सुननी चाहिए। ...(**व्यवधान**)..

†[شری ابو عاصم اعظمی : سر، حقیقت سننی چاہئے---مداخلت---]

श्रीमती सुषमा स्वराज: सर, रिकॉर्ड से निकालने का ऑर्डर करिए, फिर बहस चलेगी। ...(**व्यवधान**)...

श्री अबू आसिम आज़मी: सर, मैं वह बात आपसे कह रहा हूं, जो मुझे महाराष्ट्र के होम मिनिस्टर ने स्वयं कहा है, मैं वह बात कह रहा हूं ...(**व्यवधान**)...

†[شری ابو عاصم اعظمی : سر، میں وہ بات آپ سے کہہ رہا ہوں، جو مجھے مہاراشٹر کے ہوم منسٹر نے خود کہا ہے، میں وہ بات کہہ رہا ہوں ---مداخلت---]

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Mr. Azmi, please. (*Interruptions*)...

श्री अबू आसिम आज़मी: जो मुझे डीआईजी ने कहा है ...(**व्यवधान**)... मैं कोई अपनी मर्जी से नहीं कह रहा हूं। ...(**व्यवधान**)..

†[شری ابو عاصم اعظمی : جو مجھے ڈی-آئی-جی- نے کہا ہے---مداخلت--- میں کوئی اپنی مرضی سے نہیں کہہ رہا ہوں---مداخلت---]

श्रीमती सुषमा स्वराज: महाराष्ट्र के होम मिनिस्टर यहां नहीं हैं। ...(**व्यवधान**)... महाराष्ट्र के होम मिनिस्टर यहां नहीं हैं इसलिए वे डिफेंड नहीं कर सकते। ...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Mr. Azmi we are discussing....(*Interruption*)...Please listen ...(*Interruptions*)

श्री अबू आसिम आज़मी: सर, मैं यह कहना चाहता हूं कि कोई फायदा नहीं इस तरह की. ..(**व्यवधान**)... मैं दुखी हूं, अगर इस हाउस के अंदर सच्चाई पर चर्चा नहीं होगी तो याद रखिए, कभी भी आतंकवाद खत्म नहीं हो सकता।...(**व्यवधान**)...सर, मैं एक दुखी आदमी हूं, मैं आपसे कहना चाहता हूं कि...(**व्यवधान**)...

[شری ابو عاصم اعظمی : سر، میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ کوئی فائدہ نہیں اس طرح

†[ ] Transliteration in Urdu Script.

کی ۔۔۔مداخلت۔۔۔ میں دکھی ہوں، اگر اس ہاؤس کے اندر سچائی پر چرچا نہیں ہوگی تو یاد رکھئیے، کبھی بھی آتنک واد ختم نہیں ہو سکتا۔ ۔۔۔مداخلت۔۔۔ سر، میں ایک دکھی آدمی ہوں، میں آپ سے کہنا چاہتا ہوں کہ ۔۔۔مداخلت۔۔۔]

श्रीमती वृंदा कारत (पश्चिम बंगाल): यह क्या तरीका है?...(**व्यवधान**)...यह महाराष्ट्र के होम मिनिस्टर ने कहा है।...(**व्यवधान**)... ये जब मर्जी अखबार को कोट करते रहते हैं। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ पी॰ जे॰ कुरियन): एक मिनट प्लीज़। वृंदा जी आप बैठिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री अबू आसिम आज़मी: सर, मैं किसी जाति या धर्म की बात नहीं कर रहा हूं।

†[**شری ابو عاصم اعظمی** : سر، میں کسی ذات یا دھرم کی بات نہیں کر رہا ہوں۔]

SHRI MANOHAR JOSHI: Sir, I am on a point of order ...(*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Let me listen to his point of order, please

श्री मनोहर जोशी: मेरा प्वाइंट ऑफ ऑर्डर यही है...(**व्यवधान**)...

श्री वीरेन्द्र भाटिया: आपकी बात सुनी जा रही है हाउस में, हमारी बात नहीं सुनी जाएगी ...(**व्यवधान**)... जो हकीकत है, उसे सुनने की ताकत रखनी चाहिए।...(**व्यवधान**)...

SHRI MANOHAR JOSHI: The hon. Member is misguiding the House...(*Interruptions*) He is misguiding the House because he is talking about the RSS and the Bajrang Dal withthout his personal knowledge and proof. Therefore, the whole House may be misguided, and it is necessary that such a thing be not allowed in the House ...(*Interruptions*)

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Mr. Azmi, please listen to me. The point is, we are discussing the bomb blasts. In the course of the discussion, you cannot make such a blanket remark against any organisation, whether it is the RSS or it is the Bajrang Dal or it is any other organisation. Do not make such a blanket allegation against an organisation. So, if that is mentioned like that, that is expunged. ...(*Interruptions*)

SHRI ABU ASIM AZMI: Sir, when we are condemning...(*Interruptions*)

†[ ] Transliteration in Urdu Script.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): The point is...(*Interruptions*)... Mr. Azmi, in the morning, ...(*Interruptions*)... Earlier...(*Interruptions*)...

श्री अबू आसिम आज़मी: सर, मैं आपको...(व्यवधान)..- Sir, I will prove it. I challenge that I will prove everything ...(*Interruptions*)

† [شری ابو عاصم اعظمی : سر، میں آپ کو ۔۔۔مداخلت۔۔۔]

SHRI MANOHAR JOSHI: Sir, you have given your ruling. ...(*Interruptions*)...The hon. Member cannot challenge your ruling. ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Mrs. Brinda, you are not supposed to do it. ...(*Interruptions*)...You know the rules...(*Interruption*)...No, no; you cannot do that. ...(*Interruptions*)... So what? ...(*Interruptions*)... Mr. Azmi, you listen to me ...(*Interruptions)*...

श्री अबू आसिम आज़मी: सर, मैं हाऊस का समय खराब नहीं होने देना चाहता हूं।... (व्यवधान)...

† [شری ابو عاصم اعظمی : سر، میں ہاؤس کا سمے خراب نہیں ہونے دینا چاہتا ہوں۔

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ पी॰ जे॰ कुरियन): ज़रा सुनिए... Number one, this is very important discussion, and in this discussion, we should show that we are united and one. Our concern should be against the blasts and those individuals who suffered. You should speak againt those individuals. The Government is taking care of that. If we show such divided House here on such an important issue which is concern with the unity of our country, I am sorry to say that we are not showing good example to the nation ...(*Interruptions*)...Remember, the nation is watching us. See, in the morning, while I was on the Chair, someone from this side, mentioned about terrorism and connected it with a community. Immediately, I expunged it. The same thing, I am doing now. I am not showing any partiality. So, you cannot mention name of any organisation. The Government is enquiring into it. Nobody has come up with any evidence that a particular organisation is doing it. ...(*Interruptions*)...So, that is expunged.

श्री अबू आसिम आज़मी: सर, मैं इस बारे में बहुत दुखी हूं। मैं बिल्कुल सच्चाई बतलाना चाहता हूं कि इसकी सही...(व्यवधान)...

† [ ]Transliteration in Urdu Script.

†[**شری ابو عاصم اعظمی** : سر،میں اس بارے میں بہت دکھی ہوں۔ میں بالکل سچائی بتلانا چاہتا ہوں کہ اس کی صحیح ۔۔۔مداخلت۔۔۔]

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): Don't try to divert the issue...(*Interruptions*)...You give positive suggestions ...(*Interruptions*).. Give your suggestion.

श्री अबू आसिम आज़मी: मैं तो कह रहा हूं कि आइए, हम बी॰जे॰पी॰, शिव सेना, समाजवादी पार्टी, हम जितने लोग हैं, हम सब पार्टी पोलिटिक्स से उठकर इस पर विचार करें। यह सिर्फ पुलिस की जिम्मेदारी नहीं है। इसके लिए चालीस हज़ार पुलिसकर्मी मुम्बई में हैं। हम मुम्बई के डेढ़ करोड़ लोग सब के सब कंधे से कंधे मिलाकर और अगर मेरा सगा भाई भी है, तो मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि सबसे पहले उसको पकड़वाने वाला मैं होऊंगा। अगर कोई हमारे समाज का आदमी होगा और मुझे मालूम पड़ेगा, तो मैं दावे के साथ कहता हूं कि सबसे पहले मैं उसको पकड़वाने वाला होऊंगा।

[**श्री उपसभापति पीठासीन हुए**।]

लेकिन मेरा यह कहना है सर कि अगर आप हर चीज़ पर नज़र नहीं डालेंगे, तो जब से मैं आया हूं, चौथा साल मुझे हो रहा है इस हाऊस में, हर बार पांच से छ: बार तो मैंने इस हाऊस में डिबेट में हिस्सा लिया है, फायदा क्या है ऐसी डिबेट करके? हम सिर्फ बातें ही करते हैं, निंदा करते हैं, लेकिन अगर बदन में खून खराब है, तो आपको खून का इलाज करना पड़ेगा, तब आपकी फुंसी खत्म होगी, वरना अगर आप सिर्फ मरहम लगाते रहेंगे, तो फुंसी निकलती रहेगी और आप मरहम लगाते रहेंगे, कभी उसका इलाज नहीं हो सकेगा। इसलिए मैं कहना चाहता हूं साथियो, इस बात को सुनो–

"तुमने हर खेत में इंसां के सिर बोए हैं,
ज़मीन खूं उगलती है, तो शिकवा कैसा?"

सर, मैं इसलिए कहना चाहता हूं कि मुझे दुख इसलिए है कि 1992-93 के बम ब्लास्ट्स में ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude.

श्री अबू आसिम आज़मी: उन बम-ब्लास्ट्स में मैं एक आरोपी था। मैं एक एक्यूज्ड था, मुझे गिरफ्तार किया गया था और एक साल तक मुम्बई के बम-ब्लास्ट्स के केस में अबू आसिम जेल की सलाखों के पीछे था। उसके पहले मैं राजनीति में नहीं था। मेरे खानदान का कोई आदमी राजनीति में नहीं था। मैं राजनीति की ए, बी, सी, डी, नहीं जानता था कि वह क्या होती है। मैं सिर्फ एक कारोबार करता था मुम्बई में। मैंने कोई गुनाह नहीं किया था, लेकिन मुझे हथकड़ी डालकर, एक साल तक जेल में डाल दिया गया था और यह कहा गया था कि अबू आसिम मुम्बई के ब्लास्ट्स का मेन एक्यूज्ड है। सर, मैंने एक मोटी एकाउंट्स की किताब, कांग्रेस पार्टी के एक मिनिस्टर थे, उनके साथ मैंने, जो उस वक्त बम ब्लास्ट्स की इनक्वायरी कर रहे थे, उनके पास जाकर कहा कि आप जो कह रहे हैं कि मैंने फ़ाइनेंस किया है, यह किताब आप ले लीजिए और देख लीजिए कि मैंने एकाउंट्स का पैसा लिया है और

† [ ]Transliteration in Urdu Script.

एयरलाइन्स को दिया है। कितना पैसा आया है, कितना गया है, यह सारा प्रूफ है। जब मैंने जमा किया, उन्होंने कहा–बैठो। उन मंत्री जी ने कहा–अबू आसिम, मेरी बात हो गई है, अब यह इनक्वायरी करेंगे और तुम घर जाओगे। शाम को मुझे गिरफ्तार कर लिया गया। जब दूसरे दिन मुझे कोर्ट में पेश किया गया, तो कहा गया कि अबू आसिम ने फाइनेंस किया और अबू आसिम ने टेररिस्टों को पाकिस्तान भेजा। उसके बाद जब मैंने कहा कि मेरी बुक, तो मेरे पैरों के नीचे से ज़मीन निकल गई कि उस ज्वाइंट कमिश्नर ने, जो उस इनक्वायरी का इंचार्ज था, उसने कोर्ट में ऐफिडेविट भेज दिया कि अबू आसिम ने मुझे कोई बुक नहीं दी। मैंने सोचा, ऐसा भी दुनिया, में होता है? मैंने कहा मेरे छः बच्चे हैं, मैं अपने छः बच्चों के सिर की कसम खाकर कहता हूं कि अगर मैंने बुक नहीं दी है, तो मुझे फांसी दे दी जाए, मुझ पर मुकदमा चलाने की कोई ज़रूरत नहीं। अगर मैंने अपनी बेगुनाही का सबूत, जो वह बुक थी, वह सबूत अगर मैंने ज्वाइंट कमिश्नर को न दिया हो, तो मुझ पर मुकदमा मत चलाओ, आज मेरा ऐफिडेविट ले लो कि मुझे आज ही हैंग कर दो, लेकिन एक बार उस ज्वाइंट कमिश्नर को कोर्ट में आकर अपने बच्चे की कसम खाने दो, मैं सारा का सारा कसूरवार अपने को मान लूंगा। कोर्ट ने कहा कि ज़ज्बात से कोर्ट नहीं चलती है और मैं एक साल तक जेल में पड़ा रहा। मेरे बाप ने कहा कि मेरी सारी जायदाद बेच दो और मेरे बेटे को छुड़ा लो। मेरा बाप भी मर गया। मैं एक साल के बाद सुप्रीम कोर्ट पहुंचा और मैं उस केस में सुप्रीम कोर्ट से डिस्चार्ज हुआ। मेरी कोई गलती भी नहीं थी और मैं जानता भी नहीं था कि कहां बम ब्लॉस्ट हुआ है? आज मुम्बई में शिवसेना के लोग कह रहे हैं कि कोई वकील नहीं कर सकता। ...(**समय की घंटी**)... और हुकूमत तमाशा देख रही है। ...(**व्यवधान**)...क्या पुलिस तय करेगी? अगर मैंने वकील नहीं किया होता तो आज मैं जेल से छूट नहीं सकता था और मैं जेल की सलाखों के पीछे रहता। ...(**व्यवधान**)...

श्री अबू आसिम आज़मी : मैं तो कह रहा हूं कि आइये, हम बी जे पी, शिवसेना, समाजवादी पार्टी, हम जितने लोग हैं, हम सब पार्टी पालिटिक्स से उठ कर इस पर विचार करें। यह सिर्फ पुलिस की ज़िम्मेदारी नहीं है। इस के लिए चालीस हज़ार पुलिस की महाराष्ट्र में, मुंबई में हैं। हम मुंबई के डेढ़ करोड़ लोग, सब के सब कंधे से कंधा मिला कर अगर मेरा सगा भाई भी है, तो मैं आप को यकीन दिलाना चाहता हूं कि सब से पहले इस को पकड़वाने वाला मैं होऊंगा। अगर कोई हमारे समाज का आदमी होगा और मुझे मालूम पड़ेगा तो मैं दावे के साथ कहता हूं कि सब से पहले मैं इस को पकड़वाने वाला होऊंगा।

(شری اُپ سبھاپتی صدر نشیں ہوئے)

لیکن میرا یہ کہنا ہے سر کہ اگر آپ ہر چیز پر نظر نہیں ڈالیں گے، تو جب سے میں آیا ہوں چوتھا سال مجھے ہو رہا ہے اس ہاؤس میں، ہر بار پانچ سے چھ بار تو میں نے اس ہاؤس میں ڈیبیٹ میں حصہ لیا ہے، فائدہ کیا ہے ایسی ڈیبیٹ کر کے؟ ہم صرف باتیں ہی کرتے ہیں، نندا کرتے ہیں، لیکن نہیں اگر بدن میں خون خراب ہے، تو آپ کو خون کا علاج کرنا پڑے گا، تب آپ کی پھنسی ختم ہوگی، ورنہ اگر آپ صرف مرہم لگاتے رہیں گے، تو پھنسی نکلتی رہیگی اور آپ مرہم لگاتے رہیں گے، کبھی اس کا علاج نہیں ہو سکیگا۔ اس لئے میں کہنا چاہتا ہوں ساتھیوں، اس بات کو سنو ۔

تم نے ہر کھیت میں انساں کے سر بوئے ہیں
زمیں خوں اگلتی ہے، تو شکوہ کیسا

سر، میں اس لئے کہنا چاہتا ہوں کہ مجھے دکھ اس لئے ہے کہ 93-1992 کے بم بلاسٹ میں ...مداخلت....

شری اُپ سبھاپتی : پلیز کنکلوڈ۔

شری ابوعاصم اعظمی : ان بم بلاسٹ میں میں ایک آروپی تھا۔ میں ایک ایکیوزڈ تھا، مجھے گرفتار کیا گیا تھا اور ایک سال تک ممبئی کے بم بلاسٹ کے کیس میں ابوعاصم جیل کی سلاخوں کے پیچھے تھا۔ اس کے پہلے میں راجنیتی میں نہیں تھا۔ میرے خاندان کا کوئی آدمی راجنیتی میں نہیں تھا۔ میں راجنیتی کی اے بی سی ڈی نہیں جانتا تھا کہ وہ کیا ہوتی ہے۔ میں صرف ایک کاروبار کرتا تھا ممبئی میں۔ میں نے کوئی گناہ نہیں کیا تھا، لیکن مجھے جھگڑی ڈالکر، ایک سال تک جیل میں ڈال دیا گیا تھا اور یہ کہا گیا تھا کہ ابوعاصم ممبئی کے بلاسٹ کا مین ایکیوزڈ ہے۔

سر، میں ایک موٹی اکاؤنٹس کی کتاب، کانگریس پارٹی کے ایک منسٹر تھے، ان کے پاس جا کر کہا کہ آپ جو کہہ رہے ہیں کہ میں نے فائنس کیا ہے، یہ کتاب آپ لے لیجئے اور دیکھ لیجئے کہ میں نے اکاؤنٹس کا پیسہ لیا ہے یا ائرلائنس کو دیا ہے۔ کتنا پیسہ آیا ہے، کتنا گیا ہے، یہ سارا پروف ہے۔ جب میں نے جمع کیا، انہوں نے کہا، بیٹھو آگے۔ ان منتری جی نے کہا، ابوعاصم، میری بات ہوگئی ہے، اب یہ انکوائری کریں گے اور تم گھر جاؤ گے۔ شام کو مجھے گرفتار کر لیا گیا۔ جب دوسرے دن مجھے کورٹ میں پیش کیا گیا، تو کہا گیا کہ ابوعاصم نے فائنس کیا اور ابوعاصم نے ٹیررسٹوں کو پاکستان بھیجا۔ اس کے بعد جب میں نے کہا کہ میری بک، تو میرے پیروں کے نیچے سے زمین نکل گئی کہ اس جوائنٹ کمشنر نے، جو اس انکوائری کا انچارج تھا، اس نے کورٹ میں ایفی ڈیوٹ بھیج دیا کہ ابوعاصم نے مجھے کوئی بک نہیں دی، میں نے سوچا، ایسا بھی دنیا میں ہوتا ہے؟ میں نے کہا میرے چھ بچے ہیں، میں اپنے چھ بچوں کے سر کی قسم کھا کر کہتا ہوں کہ اگر میں نے بک نہیں دی ہے، تو مجھے پھانسی دے دی جائے، مجھ پر مقدمہ چلانے کی کوئی ضرورت نہیں۔ اگر میں نے اپنی بے گناہی کا ثبوت جو وہ کتاب تھی، وہ ثبوت اگر میں نے جوائنٹ کمشنر کو نہ دیا ہو، تو مجھ پر مقدمہ مت چلاؤ، ل آج میرا ایفی ڈیوٹ لے لو کہ مجھے آج ہی ہینگ کر دو، لیکن ایک بار

اس جوائنٹ کمشنر کو کورٹ میں آکر اپنے بچے کی قسم کھانے دو، میں سارا کا سارا قصوروار اپنے کو مان لونگا۔ کورٹ نے کہا کہ جذبات سے کورٹ نہیں چلتی ہے اور میں ایک سال تک جیل میں پڑا رہا۔ میرے باپ نے کہا کہ میری ساری جائداد بیچ دو اور میرے بیٹے کو چھڑا لو۔ میرا باپ بھی مرگیا۔ میں ایک سال کے بعد سپریم کورٹ پہنچا اور میں اس کیس میں سپریم کورٹ سے ڈسچارج ہوا میری کوئی غلطی بھی نہیں تھی اور میں جانتا بھی نہیں تھا کہ کہاں بم بلاسٹ ہوا ہے؟ آج ممبئی میں شیوسینا کے لوگ کہہ رہے ہیں کہ کوئی وکیل نہیں کرسکتا (وقت کی گھنٹی)..... اور حکومت تماشہ دیکھ رہی ہے.....مداخلت..... کیا پولیس طے کرے گی؟ اگر میں نے وکیل نہیں کیا ہوتا تو آج میں جیل سے چھوٹ نہیں سکتا تھا اور میں جیل کی سلاخوں کے پیچھے رہتا

.....مداخلت.....

श्री मनोहर जोशी: सर, यह बात असत्य है।...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: वे डिनाइ कर रहे हैं।...(व्यवधान)...

श्री अबू आसिम आज़मी: ये शिवसेना के लोग...(व्यवधान)... जब संजय दत्त पकड़ा गया था। ...(व्यवधान)... संजय दत्त को छुड़वाने की कोशिश की।...(व्यवधान)...

†[**شری ابو عاصم اعظمی** : یہ شیو سینا کے لوگ ...مداخلت... جب سنجے دت پکڑا گیا تھا ...مداخلت... سنجے دت کو چھڑوانے کی کوشش کی ...مداخلت...]

श्री उपसभापति: अबू आसिम जी, अब आप खत्म करिए।...(व्यवधान)...

श्री अबू आसिम आज़मी: संजय दत्त कसूरवार है या नहीं है, यह फैसला कोर्ट करेगी।...(व्यवधान)...

†[**شری ابو عاصم اعظمی** : سنجے دت قصوروار ہے یا نہیں ہے، یہ فیصلہ کورٹ کرے گی ...مداخلت...]

श्री उपसभापति: अब आप कन्क्लूड करिए।

श्री अबू आसिम आज़मी: एक तरफ ये...(व्यवधान)... छुड़ाने के लिए कोशिश करते हैं।..(व्यवधान)...

†[**شری ابو عاصم اعظمی** : ایک طرف یہ ...مداخلت... چھڑانے کے لئے کوشش کرتے ہیں ...مداخلت...]

SHRI MANOHAR JOSHI: This is absolutely wrong. (*Interruptions*)

†[ ]Transliteration in Urdu Script.

आसिम आज़मी: दूसरी तरफ...(**व्यवधान**)...देख लिया तो हम मारेंगे।...(**व्यवधान**)...

†[**شری ابو عاصم اعظمی** : دوسری طرف ...مداخلت... دیکھہ لیا تو ہم ماریں گے ...مداخلت...]

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude. (*Interruptions*) आप कन्क्लूड कीजिए। आप कन्क्लूड कीजिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री अबू आसिम आज़मी: यह देश गुंडागर्दी से नहीं चलेगा।...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Next, Now, Mr. Thirunavukkarasar. You speak only for two minutes, please. (*Interruptions*)

श्री अबू आसिम आज़मी: सर, होम मिनिस्टर साहब बैठे हैं, मैं उनसे कहना चाहूंगा कि नितिन प्रधान नाम के एक वकील ने सारे मुकदमे वापस कर दिए हैं कि हम मुकदमे नहीं देखेंगे। ...(**व्यवधान**)...

†[**شری ابو عاصم اعظمی** : سر، ہوم منسٹر صاحب بیٹھے ہیں، میں ان سے کہنا چاہوں گا کہ نتن پردھان نام کے لئے ایک وکیل نے سارے مقدمے واپس کر دئے ہیں کہ ہم مقدمہ نہیں دیکھیں گے ...مداخلت...]

श्री एकनाथ के० ठाकुर (महाराष्ट्र): यह हुआ है इसलिए...(**व्यवधान**)...

श्री अबू आसिम आज़मी: सर, यह हो क्या रहा है। सर, सुन लीजिए, मैं पूरे हाउस से कहना चाहता हूं।...(**व्यवधान**)...

†[**شری ابو عاصم اعظمی** : سر، یہ ہو کیا رہا ہے۔ سر، سن لیجئے، میں پورے ہاؤس سے کہنا چاہتا ہوں ...مداخلت...]

श्री उपसभापति: अब आप यह सब छोड़िए।...(**व्यवधान**)... प्लीज, ...(**व्यवधान**)... आप बैठ जाइए। प्लीज बैठ जाइए। ...(**व्यवधान**)... Mr. Thirunavukkarasar.

श्री अबू आसिम आज़मी: एक मिनट सर। ...(**व्यवधान**)...बम ब्लॉस्ट हुआ था और लोग पकड़े गए थे।...(**व्यवधान**)...

---

†[ ]Transliteration in Urdu Script.

†[شری ابو عاصم اعظمی : ایک منٹ سر، ۔۔۔مداخلت۔۔۔ بم بلاسٹ ہوا تھا اور لوگ پکڑے گئے تھے ۔۔۔مداخلت۔۔۔]

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You cannot use this platform for all those things. (*Interruptions*) प्लीज।...(**व्यवधान**)...

श्री अबू आसिम आज़मी: यह कहा था कि एक कंडक्टर जो नोन मुस्लिम है, उसने बस में बम रखते हुए देखा था। उसका नाम लिख दिया। कंडक्टर ने कहा कि मैं सच्चा हिन्दू हूं।...(**समय की घंटी**)... उसने अपने डिपार्टमेंट को लैटर लिखा, जज को लैटर लिखा कि साहब, मैं गलत गवाही नहीं करूंगा। पुलिस ने जबर्दस्ती मेरा नाम लिख दिया है।...(**व्यवधान**)... वे लोग ढाई साल जेल में रहे।...(**व्यवधान**)...

†[شری ابو عاصم اعظمی : یہ کہا تھا کہ ایک کنڈیکٹر جو نان مسلم ہیں، اس نے بس میں بم رکھتے ہوئے دیکھا تھا۔ اس کا نام لکھ دیا۔ کنڈیکٹر نے کہا کہ میں سچا ہندو ہوں۔ ۔۔۔(وقت کی گھنٹی)۔۔۔ اس نے اپنے ڈیپارٹمنٹ کو لیٹر لکھا، جج کو لیٹر لکھا کہ صاحب، میں غلط گواہی نہیں کروں گا۔ پولیس نے زبردستی میرا نام لکھ دیا ہے ۔۔۔مداخلت۔۔۔ وہ لوگ ڈھائی سال جیل میں رہے ۔۔۔مداخلت۔۔۔]

श्री उपसभापति: देखिए, यह ठीक नहीं है। प्लीज।

श्री अबू आसिम आज़मी: सर, मैं यह कहना चाहता हूं कि इन्क्वायरी जरूर कीजिए और इसका इलाज पकड़िए।...(**समय की घंटी**). अगर आप इन्क्वायरी नहीं करेंगे तो ...(**व्यवधान**)...

†[شری ابو عاصم اعظمی : سر، میں کہنا چاہتا ہوں کہ انکوائری ضرور کیجئے اور اس کا علاج پکڑئیے۔ ۔۔۔(وقت کی گھنٹی)۔۔۔ اگر آپ انکوائری نہیں کریں گے تو ۔۔۔مداخلت۔۔۔]

श्री उपसभापति: मेड योर प्वाइंट।...(**व्यवधान**)...

श्री अबू आसिम आज़मी: सर, मैं यह कहना चाहता हूं कि...(**व्यवधान**)...

†[ ]Transliteration in Urdu Script.

†[شری ابو عاصم اعظمی : سر، میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ ۔۔۔مداخلت۔۔۔]

श्री उपसभापतिः नहीं, नहीं। देखिए, प्लीज।...(व्यवधान)...

श्री ~~अब~~ आसिम आज़मी: अगर आप सचमुच ब्लॉस्ट के ऊपर...(व्यवधान)...

†[شری ابو عاصم اعظمی : اگر آپ سچ مچ بلاسٹ کے اوپر ۔۔۔مداخلت۔۔۔]

श्री उपसभापतिः अबू आसिम आज़मी जी, आपने जो कहना था वह कह दिया। प्लीज।...(व्यवधान)...

श्री अबू आसिम आज़मी: सर, इसलिए मैं कहना चाहता हूं...(व्यवधान)... सर, मैं बैठ जाऊंगा?...(व्यवधान)...

†[شری ابو عاصم اعظمی : سر، اس لئے میں کہنا چاہتا ہوں ۔۔۔مداخلت۔۔۔ سر، میں بیٹھ جاؤں ۔۔۔مداخلت۔۔۔]

श्री उपसभापतिः प्लीज, प्लीज,...(व्यवधान)...हां बैठ जाइए।...(व्यवधान)...

श्री अबू आसिम आज़मी: सर, बस मुझे दो मिनट दे दीजिए।...(व्यवधान)...

†[شری ابو عاصم اعظمی : سر، بس مجھے دو منٹ دے دیجئے ۔۔۔مداخلت۔۔۔]

श्री उपसभापतिः देखिए, जो आपकी भावनाएं थीं, आपने कह दीं।...(व्यवधान)...

श्री अबू आसिम आज़मी: सर, मैं अपने साथियों से कहना चाहता हूं कि मैं हिन्दू और मुसलमान को, इस मुल्क में एक खूबसूरत औरत की दो आंखों की तरह समझता हूं। अगर इसकी एक आंख खराब हो गई तो यह हमारा खूबसूरत हिन्दुस्तान बदसूरत हो जाएगा।...(व्यवधान)... हिन्दू हो या मुसलमान, सिख हो या ईसाई की बात नहीं है। यह तो देश की प्रॉब्लम है।...(व्यवधान)... सर, हम सबको अपनी पार्टी लाइन से ऊपर उठकर, मैं खासतौर से मुम्बई के रहने वालों से कहना चाहता हूं, पुलिस की ड्यूटी नहीं है, बल्कि हम सब इस ड्यूटी को आज से लें कि जब हम ट्रेन में बैठें तो हम सब जगह देखें कि कहां क्या हो रहा है? हम आजू-बाजू में भी देखेंगे, तो ये गतिविधियां खत्म हो सकती है।...(व्यवधान)...

† [ ]Transliteration in Urdu Script.

श्री उपसभापतिः अब समाप्त करिए।...(**व्यवधान**)...

श्री अबू आसिम आज़मीः सर, मैं आपको एक शेर सुनाता हूं।...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापतिः हमने शेर बहुत सुन लिए हैं।...(**व्यवधान**)...

श्री अबू आसिम आज़मीः 'ये लाल हरे, पीले, गुलाबी, बैंगनी और सफेद, फूल खिलते हैं तो बनती है बहारे गुलिस्तां। ये हिन्दू, ये मुस्लिम, ये सिख-ईसाई और पारसी भी, जब साथ चलते हैं तो चलता है मेरा हिन्दोस्तां।' आइए, मनोहर जोशी जी, आइए बीजेपी के लोग, आइए कांग्रेस के लोग, हम सब पार्टी लाइन से ऊपर उठकर के, जो भी इस देश के अंदर गतिविधियों में है, राजनीति न करते हुए सब मिलकर उसका मुकाबला करें और इस भारत देश को दुनिया में सबसे आगे आ रहा है, उसको आगे लाने में मदद करें। मैं इसी के साथ मुम्बई के रहने वालों को बहुत मुबारकबाद पेश करना चाहता हूं।...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापतिः आप फिर कहां चले गए?...(**व्यवधान**)...

श्री अबू आसिम आज़मीः बहुत से लोगों ने...(**व्यवधान**)... मुम्बई में दंगा हो जाए, लेकिन वाह मुम्बई के लोगों, तुमको सलाम। तुमने सारी चीजों को रिजेक्ट करते हुए, आपस में सब एक साथ होकर इसका मुकाबला किया।...(**व्यवधान**)... सर, एक बात और आखिरी कहना चाहूंगा।... (**व्यवधान**)...

श्री उपसभापतिः यह क्या है?

श्री अबू आसिम आज़मीः वहां पर एक नौजवान लड़का था, जो लोगों को बचाते हुए मर गया, लेकिन उसको कोई कम्पनसेसन नहीं मिल रहा है। वह राठौर नाम का लड़का है।... (**व्यवधान**)...

श्री उपसभापतिः आप एमपी हैं, लैटर लिखिए, जरूरत मिलेगा।

श्री अबू आसिम आज़मीः वह सबको बचा रहा था और मरे हुए लोगों को निकाल रहा था। मैं सदन से अनुरोध करना चाहता हूं कि जो रेलवे से compensation मिल रहा है, उसको भी वह compensation दिलवाया जाए, क्योंकि वह बहुत गरीब लड़का है। मुझे बहुत कुछ बोलना था, लेकिन आपने मुझे रोक दिया, इसलिए मैं क्या करूं। धन्यवाद।

ابوعاصم اعظمی : سر، میں اپنے ساتھیوں سے کہنا چاہتا ہوں کہ میں ہندو اور مسلمان کو، اس ملک میں ایک خوبصورت عورت کی دو آنکھوں کی طرح سمجھتا ہوں۔ اگر اس کی ایک آنکھ خراب ہوگئی تو یہ ہمارا خوبصورت ہندستان بدصورت ہوجائے گا۔ .....مداخلت.....ہندو ہو یا مسلمان، سکھ ہو یا عیسائی کی بات نہیں ہے۔ یہ تو دیش کی پرابلم ہے.....مداخلت.....سر، ہم سب کو اپنی پارٹی لائن سے اوپر اٹھ کر میں خاص طور سے ممبئی کے رہنے والوں سے کہنا چاہتا ہوں کہ پولیس کی ڈیوٹی نہیں ہے، بلکہ ہم سب اس ڈیوٹی کو آج سے لیں کہ جب ہم ٹرین میں بیٹھیں تو ہم سب جگہ دیکھیں کہ کہاں کیا ہورہا ہے؟ آزو باز و میں بھی دیکھیں، تو یہ گتی ودھیا ختم ہوسکتی ہیں.....مداخلت.....

شری اپ سبھاپتی : اب ختم کیجئے.....مداخلت.....

شری ابوعاصم اعظمی : سر، میں آپ کو ایک شعر سناتا ہوں .....مداخلت.....

شری اپ سبھاپتی : ہم نے شعر بہت سن لئے ہیں .....مداخلت.....

شری ابوعاصم اعظمی : یہ لال ہرے، پیلے، گلابی، بینگنی اور سفید،
پھول کھلتے ہیں تو بنتی ہے بہار گلستاں
یہ ہندو، یہ مسلم، یہ سکھ عیسائی اور پارسی بھی
جب ساتھ چلتے ہیں تو چلتا ہے میرا ہندستاں

آیئے، منوہر جوشی جی آیئے بی جے پی کے لوگ، آیئے کانگریس کے لوگ، ہم سب پارٹی لائین سے اوپر اٹھ کر کے، جو بھی اس دیش کے اندر گتی ودھیوں میں ہے، راج نیتی نہ کرتے ہوئے، سب ملکر اس کا مقابلہ کریں اور اس بھارت دیش کو دنیا میں سب سے آگے آرہا ہے، اس کو آگے لانے میں مدد کریں۔ میں اسی کے ساتھ ممبئی کے رہنے والوں کو بہت مبارکباد پیش کرنا چاہتا ہوں.....مداخلت.....

شری اپ سبھاپتی : آپ پھر کہاں چلے گئے؟.....مداخلت.....

شری ابوعاصم اعظمی : بہت سے لوگوں نے.....مداخلت..... ممبئی میں دنگا ہوجائے، لیکن واہ! ممبئی کے لوگوں، تم کو سلام۔ تم نے ساری چیزوں کو ریجیکٹ کرتے ہوئے، آپس میں سب ایک ساتھ ہوکر اس کا مقابلہ کیا.....مداخلت.....

سر، ایک بات اور آخری کہنا چاہونگا .....مداخلت.....

شری اپ سبھاپتی : یہ کیا ہے؟

شری ابوعاصم اعظمی : وہاں پر ایک نوجوان لڑکا تھا، جو لوگوں کو بچاتے ہوئے مرگیا، لیکن اس کو کوئی کمپن سیشن نہیں مل رہا ہے۔ وہ راٹھور نام کا لڑکا ہے .....مداخلت.....

شری اپ سبھاپتی : آپ ایم پی ہیں، لیٹر لکھئے، ضرور ملے گا۔

شری ابوعاصم اعظمی : وہ سب کو بچا رہا تھا اور مرے ہوئے لوگوں کو نکال رہا تھا۔ میں سدن سے انورودھ کرنا چاہتا ہوں کہ جو ریلوے سے کمپنسیشن مل رہا ہے، اس کو بھی وہ کمپنشیشن دلوایا جائے، کیوں کہ وہ بہت غریب لڑکا ہے۔ مجھے بہت کچھ بولنا تھا، لیکن آپ نے مجھے روک دیا، اس لئے میں کیا کروں۔ دھنیواد۔†

† [ ]Transliteration in Urdu Script.

5.00 P.M.

SHRI SU. THIRUNAVUKKARASAR (Madhya Pradesh): Hon. Mr. Deputy Chairman, Sir, I thank you very much for giving me this opportunity to take part in this very important discussion. Sir, the tragedy of bomb blasts, which has taken place in Mumbai, is most unfortunate and most condemnable. Sir, nowadays the incidents of bomb blasts are increasing. Many innocent people are killed everywhere. In Jammu & Kashmir it has become a routine affair and almost every day bomb blasts are taking place, and innocent people are killed. We all know that in some of the States, particularly in the North-Eastern States, some parts of those States are not controlled by political parties. They are ruled by terrorist groups, in whatever name they may be acting or functioning there. For example, if you take Andhra Pradesh, whether it is Congress Government or whether it was TDP Government or whether BJP comes to power, I can say that three or four districts in that State are ruled by terrorist groups. The People's War Group is ruling throughout some districts in that State. Without their consent...(*Interruptions*)...

AN HON. MEMBER: That is not correct...(*Interruptions*)...

SHRI SU. THIRUNAVUKARASAR: You may not agree out it is there. ...(*Interruptions*)...it is my view.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: It is not 'ruling' ...(*Interruptions*)... It is not like that ...(*Interruptions*)...

SHRI SU. THIRUNAVUKKARASAR: Sir, you have given a ruling on that ...(*Interruptions*)...Sir, I am not talking about any particular party. If I am talking about Congress, I am also talking about BJP. ...(*Interruptions*)...This is a reality which is in existence in Andhra Pradesh. In some of the districts of Andhra Pradesh, they rule. ...(*Interruptions*)... These districts are ruled by terrorist organisations or terrorist groups. Sir, they are targeting Jammu and Kashmir, which we treat as the head of our country India. They are targeting the holy places and temples. They are targeting financial capitals like Mumbai. So, it is increasing every day.

We are giving compensation. The State Government has announced a sum of Rs. 3 lakh and the Railways Ministry has also announced some funds. We all know that money cannot compensate the loss of life. But

at the same time, it helps the families of the deceased there to get some comfort or solace. It is okay. On that line, I urge upon the Central Government to announce some compensation to the families of the deceased. This is number one.

Number two, Sir, we all know that there are some Central intelligence agencies working in States. If you see, whether it is IB or RAW, in every State their manpower is very, very nominal. If you see the strength of these intelligence agencies, it is very, very less and the communication facilities, equipments, which have been provided to them, are not sufficient. So, I insist upon the Central Government and I request the hon. Home Minister to do something in this regard. I want to know from the hon. Minister what are the amounts that the Central Government or the Home Ministry has given to the States to strengthen their police force.

We all know, and again I am telling, that whether it is, a State party or a regional party or a national party, at the State level, it is worried about winning elections only. (*Time-bell*) They are going on announcing concessions. A lot of concessions are announced to get votes. No State Government is bothering about security aspect and combating terrorism. The State Governments should concentrate more on this aspect. We all know that many of the State Governments are placing deficit budgets and they have financial crisis. They are not able to allot more money for this purpose. I request the Central Government that it should give more money to the States to strengthen their police forces and intelligence agencies in the States.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude. You had asked for two minutes. I have given you five minutes. We have other legislative business.

SHRI SU. THIRUNAVUKKARASAR: Sir, I am concluding. When Britishers left us they left so many legacies, so many customs and behaviours. With that, they left some guns also, old guns which the British people were using. During the British regime it was enough to threaten the innocent, common people at the village level, in the rural areas. You can see even now also in the rural areas of our country, the old guns, single barrel guns in the police stations in so many places. With that single barrel gun, which were left out by the Britishers, can be

used to threaten innocent people in the villages. It cannot be used to threaten or control the terrorist groups. So, the State forces should be equipped with modern equipments, with proper communication network and proper strength in manpower also. Then only we can try to do something in this aspect. Thank you very much, Sir.

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Sir, we have discussed this matter for four days in this House.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Two-and-half hours matter we have discussed for four days.

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Yes, one of the advantages of discussing a matter like this for more than one day is that the Minister gets the opportunity to write down his speech and read it to the House which I am seeking your permission to do. I want to make one more request to the hon. Members in the House. The request is that I may not be interrupted in between when I am reading out my written speech. If they have any explanation to get from me they can write it down on a piece of paper and can ask for the explanation when I conclude my speech and I will endeavour to reply to their queries. My reply is going to be a little longish, Sir, and I seek the indulgence of the Presiding Officer and this House to allow me to make a reply which may be little longish and, may be covering many points which have been raised by the hon. Members. It may not be possible to reply to all the points that have been made, but I will try to reply to most of the points, and if there are any doubts that remain uncovered today or afterwards I can try to reply to those doubts. I would like to thank the House and the hon. Presiding Officers for allowing this discussion and giving sufficient time to all the Members to make their points. I would also like to thank the hon. Members who have made very useful points which participating in this debate. All the good points made could be remembered while dealing with the matters relating to violence and terrorism with which we are trying to deal with, and while making decisions and policies to deal with these issues. The incidents that occurred in Mumbai on 11th of July, 2006 were very tragic and can be called dastardly and can be condemned. Those who are responsible for it would be dealt with in a proper manner and punished as per the laws for the crimes they have committed. The people in Mumbai and other places behaved in a most

responsible and wise manner. They helped the victims. They did not allow the harmony in the society to be disturbed. They did not allow the diabolical designs of the terrorists to succeed. They protected the secular ethos of our country and the unity in the society. They deserve our thanks and congratulations. The men and officers in the Railways, in the State Government, in the media discharged their duties in an exemplary manner. Taxi drivers, bus and truck owners helped the commuters to reach their destinations. Doctors and nurses took care of the injured persons. They deserve our compliments and thanks. In times of difficulties and calamities the people are united and rise to the occasion and help themselves in every respect and in every manner. This is our strength and is something which should be protected and preserved. The Railways and the State Government have helped the victims and the injured. The details of the help given are known to us which need not be recounted here. If some more help of any kind were required, there would be no difficulty in making it available to the victims and their family members. The State Government would not be found wanting in this respect. The Railways and the Union Government will cooperate with the State Government fully to provide necessary help to the persons who have suffered in these incidents. We have a wide network of railways in our country. The terrorists are targeting them. The Railway Police and the State police help them to protect their properties and passengers. However, it is found that the system which is used to provide the necessary security need changes. The Railways and other Ministries and departments are engaged in preparing the plans to provide better security. If necessary, laws can be changed and new laws can be made also. The strength of the police with the Railways needs to be augmented. The system of creating cooperation between the Railway Police and the State Police needs to be refined. The Railway Board, the Railway Ministry and other Ministries are looking into these aspects and soon necessary steps could be taken, necessary new technologies would be used. The hon. Railway Minister is seized of this matter and he is taking necessary steps to strengthen the railway security. He has already taken some steps and some more steps, according to the plan made, would also be taken.

In New Delhi and Kolkata we have Metros. In Mumbai, Bangalore and other cities Metros may be started in a few years to come. These

metros are going to need a better security arrangement than they have today. A plan to provide full security to Delhi Metro is nearly completed. It may be used to provide security to Metro Railways in Calcutta and Metro Railways in other places also. A lot of manpower would be required new kinds of gadgets and equipments would be required new kinds of training, to be given to the persons who are manning these Metro Railways, would be required. All those things would be done and the experience shared by the people in other countries, who suffered from attacks on railways, is also examined by us in order to make our plans foolproof and to use them properly. The hon. Chief Minister of West Bengal was very careful and he did telephone to me asking, "Can something be done to provide better security to the Metro Railways also?" And, it was possible for me to tell him that we had prepared a plan for Delhi Metro Railways and that plan could be examined by the Government of West Bengal; and, if it were found suitable, it could be used by them also. The Government of India will extend all necessary and appropriate help in this matter.

Sir, the terrorists hide in forests and mega cities and attack innocent people at their will. It is very easy to hide in the forests, and it is equally easy to hide in the cities also. Those who are involved in violent activities make use of this reality. We have taken steps to stop and prevent them from doing mischief in forest areas, which have succeeded to some extent. We have paid some attention to improving the security apparatus in cities, which also help to some extent. We have asked the State Governments to prepare plans to protect their big cities and implement them fully and meticulously. The Government of India wants them to provide surveillance facilities on the ground, on the borders, and also from the air. It wants them that the manpower, provided to the cities to protect themselves, should be augmented. The States need to look at these issues in a systematic and meticulous manner. The efforts would be encouraged to support it with funds and other inputs. The task of building a better mega city security arrangement should be done in cooperation between the Governments and the people. If the Government of Maharashtra comes up with these kinds of plans and other States come up with plans for mega city policing, they can be looked into for necessary and favourable action and support by the Union Government.

Some hon. Members have made very relevant points with respect to attacks on the city of Mumbai. And, they are very right when they say that Mumbai enjoys a special position in our country. It is treated as economic and industrial capital of India. It is a city which is attracting the people from outside the country also. It is a city where the people from all parts of the country go and live. It is a city which has been helped by the entire country as such to have one of the most important seaports, airports, the Reserve Bank, industrial units, educational facilities, medical facilities and many, many things. The country has helped Mumbai to develop, and Mumbai is helping country to develop. Because of this Mumbai becomes a target. People want to attack the ethos, the people and the structure in Mumbai. And, that is why, we need to take special care of Mumbai. We leave it to the State Government and our friends over there who are in the police and other administrative wings of the Government to look at these aspects carefully; prepare plans and forward those plans to the Government of India. The Government of India would, definitely, look into these plans, and if they are found to be suitable to provide security to the mega cities, the same plans can be used in the cities of Delhi, Kolkata, Bangalore, Chennai and other places also with liberty given to the State Governments to modify them in a manner which suits their requirements and needs. This is the attitude, this is the kind of policy we would like to adopt with respect to the city of Mumbai and the mega cities in our country.

We have been asking the police to utilise helicopters to survey the cities. Surveying the cities from the air with the help of helicopters is easier than surveying them by walking on the roads through narrow lanes and streets of these cities.

Having cameras at different places, which was suggested by one of the hon. Members here, is going to be very useful. In the city of Delhi, we do have cameras installed at certain places. But even in Delhi, the number of cameras is not sufficient. We need more cameras. We need cameras at market places, railway stations, hospitals, schools and at places where people generally gather. The cameras placed in the premises of this building, we know, helped in protecting this building when it was attacked. The cameras really helped. When the terrorists were trying to enter this building through different gates, persons sitting

in the control Room watched their movements; gave the alarm bell and all the doors were closed. As the doors were closed, the terrorists remained outside, and, then, they were controlled by the police outside and from the top, and this building could be protected. The same thing has to be done with respect to the buildings, lanes, roads, *gullies* and public places in cities like this. A city like Singapore has many, many cameras placed in different parts of the city. In every nook and corner there are many cameras at different levels. Looking in different directions, and moving in all the directions. This is something which is to be done in order to provide security to the people living in big cities. And big cities are the cities where modern industries are coming up. Electronic industry, genetic industry and all other kinds of modern industries are flocking to these cities. That is why, they have become the targets and we shall have to take special care to provide special kind of security to all the installations, industries, market places and important places in the city. Sir, for this purpose lot of funds, manpower, new kind of training and technologies are required which would be provided by the Union and the State Government. It may not be necessary for me to go into greater details in this respect today in this debate. Just a few minutes before I said that it has become necessary to provide full security to many other important installations in the country. The State Government are sensitised to be more vigilant and take necessary steps. Airports, bus stands, markets, religious places, laboratories, modern industries need to be protected. The persons heading these institutions and activities are sensitised to be more vigilant and careful. The Union Government is helping them with manpower, men and officers from CISF, and other forces, with information intelligence and necessary advice. The State Governments are also sensitised to take special care to provide security to these installations. One of the difficult problems which is faced at the national level is that we have the information, we sensitise the State Governments, and the institutions, and organisations which are likely to be attacked, but the information which is available to us is not actionable information, accurate information about the exact place and exact time when this may happen; that is the difficulty. Many hon. Members, while speaking in this House, referred to this aspect. The Government of India did inform the Government of Maharashtra, and has been informing the State Governments also about the trends which

are becoming visible. What is likely to be attacked? Are the religious places likely to be attacked? Are market places likely to be attacked? Are political institutions likely to be the targets? They are going to be the soft targets or hard targets. In which direction are these kind of terrorist activities going to proceed and move? That kind of information is provided to the State Governments, but that does not mean that the State Governments were informed that a railway, or, a bus station or a market place, or, a laboratory would be attacked. And, why it was not possible for them to prevent that kind of attack on those institutions. It would not be very correct to hold them responsible for this. I think this should be understood in correct perspective. If we do not understand it in correct perspective, the result would be creating a division in the efforts mode by the Union Government, State Governments, and other organisations in combating violence and terrorism in our country, which needs to be avoided. Sometimes, the information given is misread, misunderstood, misprinted and published in a manner which can create, not the confidence but the fear psychosis in the minds of the people involved in it . And, that is why; we shall have to be very particular about these things. Here also, while speaking, one or two Members spoke about the statement made by the responsible officers in the Government of India. They , on their own, are not making statements. Sometimes questions are put to them, and in reply to those questions, they make statements. The question before them and the question before the Ministers also, who talk to the media persons, is whether they should disclose that information or not. Some of us do not disclose; some of us carefully disclose; and, some of us think that let it be known to the people also so that it can sensitise the people around that area and can help also. That is a matter of perception; we should not find any fault with them. Nobody is doing it in order to create unnecessary scare in the minds of the people. If something is said, it has to be correctly represented; it has to be correctly used; otherwise, misconceptions can develop and it can cause harm to the cause of providing security to the installations which are over the ...(*Interruptions*)...

SHRI MANOHAR JOSHI: Sir, I would like to say one thing. ...(*Interruptions*)...

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: I will reply ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He has requested not to interrupt him. ...(*Interruptions*)... Manohar Joshiji, please don't interrupt. ...(*Interruptions*)...

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: I will reply ...(*Interruptions*)...You kindly note it down and I will reply ...(*Interruptions*)...

SHRI MANOHAR JOSHI: Sir, the hon. Minister is not reading. ...(*Interruptions*)... He had said, 'If I am reading the speech, don't disturb me.' ...(*Interruptions*)... He is not reading ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Even otherwise, he doesn't want interruptions in between his reply ...(*Interruptions*)...

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Even if I say that 'I will read', that doesn't mean that I would not speak ...(*Interruptions*)...

SHRI MANOHAR JOSHI: Sir, I am asking him about the Prime Minister's statement ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You can ask for that ...(*Interruptions*)... You can definitely ask about that ...(*Interruptions*)....

SHRI MANOHAR JOSHI: Sir, he is not speaking about the Prime Minister's statement ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: First let him say whatever he wants to say ...(*Interruptions*)... Later on, you can seek clarifications. I will give an opportunity to you ...(*Interruptions*)...

SHRI MANOHAR JOSHI: Sir, it was said that the Government of Maharashtra was informed ...(*Interruptions*)... What happened to it? ...(*Interruptions*)...

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: You ask that question and I will reply to that ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I will give you an opportunity. ...(*Interruptions*)... Joshiji, I will give you an opportunity ...(*Interruptions*)...

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: In the beginning itself I said that ...(*Interruptions*)...

SHRI MANOHAR JOSHI: ... Both the statements ...(*Interruptions*)...We are sorry, but he is not ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No; See, you have been there as a Chief Minister. The Minister is making a statement, and he is to be allowed to make a statement. ...(*Interruptions*)... Reading doesn't mean that he will not speak anything else, just read. ...(*Interruptions*)... In the beginning itself, he said that.

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Sir, I will reuest my colleagues not to obstruct me because, you know, if my flow is broken, my thought-process is also broken. If that is your intention, then you have succeeded.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The reply may not be in your chronological order...(*Interruptions*)...

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: It cannot be ...(*Interruptions*)...You please write it down, I will reply. I will definitely reply ...(*Interruptions*)... I will reply. I said it at the beginning itself. I said it at the beginning, and I am not finding fault with any of the Members, and it is not necessary for me to find fault and make a point. I would rather neglect that which is not acceptable to me and then speak on those points which, I think, can really help all of us to come to certain conclusions which can be helpful to the entire country and the matter of the security of all of us and the country. Sir, I am taking that attitude. I am not finding fault with anybody.

Sir, the population of our country has increased by leaps and bounds. The police population ratio in India is very, very unsatisfactory. In Russia, for every eighty-two citizens, there is one policemen; whereas in India, for every 740-750 citizens, there is one police person. But is you take into account, the policemen used for other duties like serving notices and summons and all those things, this ratio becomes still more unsatisfactory. It goes up; for every 900, nearly 900 members, we have a policeman in our country. We have asked the State Governments to have more police personnel in their forces. The Union Governments is going to raise nearly three hundred battalions to augment its forces. The forces need to be modernised and given better firepower, transport and communication facilities, for which funds are given to the State Governments and to the Union Government. They are asked to give

modern and suitable training to their forces also. Sir, what is the amount which is going to be spent for this purpose, for modernising the Central paramilitary forces? For modernising the Central paramilitary forces, we are going to spend nearly Rs.4184 crores. For helping the State Governments to raise new battalions and augment their force level, we are giving Rs. 1025 crores. We are not only saying, 'you do it' and just sit doing nothing. We are providing this kind of money for this purpose. And this is over and above what we are giving to the State Governments to meet Security Related Expenditure. Nearly Rs. 314 crores are given to meet Security Related Expenditure. Not only that,we have given funds to the State Governments to renew and construct police stations and also jails.

The funds that are given for constructing police stations are part of the modernisation scheme. But, as far as constructing new jails is concerned, we are giving Rs. 192 crores. Sometimes we find that the funds that are allotted to them are not really utilised; they remain unutilised.

As far as the Government of Maharashtra is concerned—somebody may get up at the end and may ask, what is the amount of money that is given to the Government of Maharashtra? Sir, to the Government of Maharashtra, in the last three years, for SRE, that is Security Related Expenditure, we have given Rs. 200 lakhs; I can give you the figures for amount of money allotted for 2005-06. For police modernisation, for 2005-06, we have allotted Rs. 88.78 crores. Five armoured vehicles have been given to them and we have allowed them to raise two IR battalions. Two IR battalions amount to nearly 2000 personnel, and the funds which are required for raising IR battalions are also given by the Government of India to the State Governments, which are equivalent to nearly Rs. 50 crores for each of the battalions.

Then, for the Backward District Initiative, last year, we had given Rs. 30 crores; the total amount of money that has been allotted for the Backward District Initiative is Rs. 75 crores. But, sometimes, generally the big States do not worry about such small amounts of money and the money remains unutilised. My experience has ben that the big States don't spend the money that is allotted to them; the smaller States spend the money. They have spent the money allotted for modernisation, but as far as the backward District Initiative is concerned, they have not

spent the money; not even 50 per cent of the amount has been spent over that. But I am not finding fault with them. If they want to do it, they may do so any time. I am not finding fault with them. They have their own schemes that are strong enough. They are spending a lot of money of Employment Guarantee Scheme of the State Government itself, irrigation projects,power projects and construction roads. I know it personally because I was involved in it in the 1980s; but then, the point is, sometimes the money remains unutilised. The performance by the Government of Maharashtra, as far as utilisation of funds goes, has not been bad. It has been good; about 90, 92 or 98 per cent funds have been utilised. Under one or two heads, the funds used are not proportionate to the funds that are allotted to them. That is what I am trying to say.

Dr. Alexander spoke in the House about the Mega City Plan. As a matter of fact, they did prepare a Maga City Plan and they did send it to the Government of India. I tried to find out the facts from there, but they had come through the State Government. The City Police are not allowed to approach the Union Government for funds without going through the State Governments. City Police is not different from the entire police force in the State as such and it is not possible for them to go to the Union Government and say that for ensuring security to be given to the people living in the cities this is the kind of money we require; give us the money directly. This is not done. All the same, I would like to say that Mumbai is an important city and I have said before also and here in the House also I have said, if they prepare a good plan, a plan with the help of all the experts having seen what is being done in mega cities in all parts of the world, and they give those plans to the Government of India, the Government of India would not only look into those plans to help them with funds, but would like to use those plans for providing security in other States also. We are in the process of developing a plan for providing security to mega cities in our country which covers many other cities and which overs many areas. Unfortunately, all these things are being done but they are not discussed. What we discuss is the negative side of the policing. The positive side of policing is not, unfortunately, always highlighted and it remains in the background. It does not appear in the media also and when the occasion like this arised everybody thinks that nothing is being done and so this is happening. On the contrary, many things are

being done and that is why many things are avoided. When many things did not happen because of that, this aspect also has to be borne in mind to come to the correct conclusion and to develop a correct perspective as to the policing in the mega cities, in the States, at the national level and at all other levels also. Sir, one of the most important points was made by respected Member, Nirmala Deshpande*ji*. I liked her speech very much. It was very brief, to the point, philosophical and very relevant and it projected one aspect of the security which has to be provided. We have heard some hon. Members saying that 'don't be a soft State; it is not beneficial to be soft on terror; you should have to be a strong State,' There was a time in 80s when people were saying that India was a soft State. At that time, they had said India was a soft State and they were arguing that India should be a strong State. Well, Dr. Murli Manohar Joshi*ji*, of course, quoted Kautilya and he-- I know him very well-- did not want to say all that which can come out of what he said, and yet I would like to say that if one thorn hurts you, would cut down all the thorny trees? Would we try to cut down all the thorns and thorny trees? That cannot be our position. We would like to *...(interruptions)...*

DR. MURLI MANOHAR JOSHI: That was not my position also. *...(interruptions)...*

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: That was Kautilya's position. *...(interruptions)...*

DR. MURLI MANOHAR JOSHI: What I said was, if there is a place which is hurting the country, then all such places have to be dealt with strongly *...(interruptions)...*

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: What is the implication of what you said? The implication of what you said and the implication of what Nirmalaji was saying are two different things. You were saying that if somebody has committed an offence or violence has been committed by him, you destroy him and destroy all the thorns around him. It means a very dangerous thing.

DR. MURLI MANOHAR JOSHI: I did't say this. What I said was, the capability of a thorn to hit you, to strike you and to hurt you is to be kept in mind and that is the thing that Americans have done. One incident took place, but they said no more attack is possible. Therefore, *..(interruptions)..*

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Many times we have been referring to America and what is happening in America. America is a great country; America is a ...*(Interruptions)*...

DR. MURLI MANOHAR JOSHI: So are we ...*(Interruptions)*... So are we. ...*(Interruptions)*... I don't agree that we are not a great country. ...*(Interruptions)*...

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: America is a great country; America is a modern country; America is a country which is using technology, but, at the same time, America is a country which accepts the liberal principles. ...*(Interruptions)*... And India is an ancient country ...*(Interruptions)*...

SHRIMATI SUSHMA SWARAJ: You are also the Home Minister of a great country ...*(Interruptions)*...

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: I have not completed, Madam. Let me finish and then you can comment. India is an ancient country. It has its spiritual philosophy of life and it is also a liberal country and that is exactly why, in America the President was killed and, unfortunately, we lost our Prime Ministers. This should not be forgotten.

DR. MURLI MANOHAR JOSHI: We have never said it. What we are saying is that terrorism must be met with all strength. That is the point.

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Let me complete. I am willing to sit here for any number of hours to participate in the debate and reply to the questions. The point I was making was that there are two views expressed on the floor of the House. One view is: take a strong stand; you attack the attackers, the violent people, the terrorists. And, nobody would say that when terrorists are attacking, you preach spiritualism and don't act. Nobody is saying that. But, should that be the attitude? Now, if one person has done it, should we hold all the persons responsible? In this debate, one of the things which has ...*(Interruptions)*...

DR. MURLI MANOHAR JOSHI: Who has said it? ...*(Interruptions)*... But, nobody has said it. To the best of my ...*(Interruptions)*..., nobody has said it.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Let him complete. उसके बाद आप बोल लीजिएगा। He has said in the beginning itself ...*(interruptions)*...

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Sir, two-three things are very prominently projected in this debate. One thing is that look, you be a little more strict. Some said that, no, you have to be quite strict. And, some said that look, only with barrel of the gun and the bullet, you won't be able to solve this problem. There is something else which will be required. And, when this 'something else' was discussed, not now but some time back, nearly two years back, that let us talk, let us understand, let us try to persuade them to give up their violent activities and violent attitude, it was welcomed by some; it was attacked by others; it was ridiculed by some others also. Now, that was the position taken then. Today also ...*(Interruptions)*...

श्री उपसभापति: ठाकुर साहब, आप बैठिए। उनको बोलने दीजिए। आप बाद में पूछ लीजिएगा। इस तरह से तो रिप्लाई पूरा नहीं होगा।

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Today also, Sir, the same position is being projected in this House. Some friends are saying "look, when this is happening, you can't just preach peace and understanding and do nothing. That would not be helping the innocent people who are suffering." And, Nirmalaji said that look, only with bullet and the barrel of gun you won't be able to solve this problem. You shall have to take them into confidence, talk to them and solve this problem. And, some people said that you use both the methods. If it is possible, talk to them; if it is not possible, don't talk to them. For instance, I would like to give information to this House. We were talking to the NAGA leaders, and there was bloodshed going on some time back. With the peace agreement with the NAGAs, that kind of bloodshed was stopped. It was achieved through argument, discussion and dialogue. In Mizoram also, this was achieved through argument, discussion and dialogue. In Punjab also, this was achieved with political steps which were taken, dialogues and discussions which were held by our colleagues who are sitting with us in the Ministry today with those people who were there, and force was also used and the problem was solved. Now, this is the position here. What we are trying to say is that look, whatever you are saying, these are your sincere opinions, views and we would not like to brush them aside and say that they are irrelevant and we are not going to look into them. To the extent they are relevant, to the extent they can be used, we would definitely like to use them. One of the

positions taken by many of the Members in the House, especially those who think that the economic aspect of the life is very important, they have been saying that if people are unemployed, if they are suffering and if they are finding disparity in the society, they are likely to be angry and take to the arms and create some kind of violence also. Would you not provide a solution to this problem by bringing about some kind of development? And, they are right, and that is the policy of the Government of India. The Government of India's policy is-- I would like to make it very clear-- that it does not hold any community, as such, responsible for violence in the country. There are people in all communities who may be responsible for violence, but because a person belonging to a community has done some violent activity, the Government of India is not going to hold the entire community, as such, responsible for violence. This is our policy. Let there be no doubt. The second policy which I would like to put before you is that we want to use multi-pronged approach to control violence and terrorism in the country. We would do our duty, by using the forces at our disposal, to control the violent activities of the misguided souls and misguided fellow citizens in our country whom I call brothers and sisters. Many people ridiculed me and, even today, they criticized me for having said that as if it was not factually correct.

We would like to use the force where using forces in necessary; and as Nirmalaji has rightly said, wherever it is possible and necessary, we would not shun the dialogue with those who would abjure violence. We did talk to Nagas, we are trying to talk to other modules of the terrorist organisations and with many of them, we have entered into talks.

The third position is that we would like to bring about economic development which has been the cause of violence in some cases. What is the amount of money we are using for bringing about the economic development in these areas, Sir? You will be surprised to know it. As far as Jammu and Kashmir is concerned, the package given by the hon. Prime Minister for the development of this area is of Rs. 24,000 crores. Sir, the amount is Rs. 24,000 crores; and, power will be generated, roads will be constructed, schools will be built, health facilities will be provided, employment will be given, agriculture will be developed, forests will be developed, housing facilities will be provided, and, their complaint that it is not economically developed, will be met.

They would be told, look, we would be doing our best to bring you not only at par with us but in several aspects, you can be better than what others are.

I would like to bring these facts to the notice of the House, because all the time they would be asking, what have you done. I have told what has been done to strengthen the police force. I have explained what is being done to bring about understanding between the groups of persons who have taken to the arms, to enter into peace agreement.

As far as North Eastern States is concerned, Sir, for the information of this hon. House, I would like to say that a package of Rs. 20,000 crores is given to them. Sir, a package of Rs. 20,000 crores is given to the North Eastern States to bring about economic development, and, it is provided that the money which is given to them will be non-lapsable. Again, some people will ask, what is the amount of money given to the naxalite-affected States for this purpose. I would like to inform the House that an amount of Rs. 2,475 crores is given to the naxalite-affected States. Every now and then, a point is raised over here about the number of Districts, which are affected. I don't know why we take pleasure in saying that we are suffering too much because of the spread of this terrorism or naxalism everywhere. I have taken pains to explain that this figure of 177 Districts is not correct. They said that your officers gave it, we have picked it up from that, why are you complaining. Supposing, in a District, a village is affected, would you call the entire District as affected. They are saying that 13 States are affected. That means, one-third of the States are affected by naxalite activities, which is wrong. It is not correct. It one person has died and has called himself a naxalite, you call that State affected by naxalite movements. A State where four or five persons are dying, and, are calling themselves as naxalites, is treated as naxal-affected State, which is not factually correct. I have explained to them that instead of giving this statistics in terms of Districts, please for God's sake, give the statistics in terms of the Police Stations which are affected. Even statistics in terms of the police stations will not give the correct picture. Villages affected will really give the correct picture. And, do you know how many police stations are affected? Nearly 500 police stations are affected. If out of nearly 15,000 police stations, 500 police stations are affected, it comes to nearly 5 per cent. If you take district-wise, it comes to nearly 30 per

cent. We have 550 districts. If you say 177 districts are affected, it means nearly one-third of the number of districts are affected. And, if you consider these police stations, it is very small. Editorials have been written, and they are saying that the Home Minister is trying to quibble out of this difficult position and trying to say that it is different. I am not trying to protect myself or my friends in the police forces or anybody. If the truth is that, I must face it boldly and try to do my best to overcome that difficulty. I can't save myself or my fellow citizens of my country or cannot do my duty trying to hide the things which should not be done. But, it is not my duty also to create the scare and the terror in the community. What is creating terror and the fear? One person is taking the gun, going and attacking a temple, mosque, a city, a railway station. why? They are not their personal enemies. They want to create the scare, the terror in the minds of the people. and if that is projected-- I am sorry to say, some of the leaders in the media are sitting here-- in a fashion which gives the wrong picture and if it reaches all the people who are reading it, will it not create a scare? If you project it 24 hours, will it not create a scare? I tell you, we went to Mumbai. Mrs. Gandhi was there and Mr. Lalu Prasad Yadav was there. I tell you what the man who was lying on the bed injured, said. When he saw Mrs. Gandhi, he got up and said, "Madam, don't worry." He was the injured, lying on the bed. Within two hours he said, "Madam, don't worry. We will remain united. We will fight this. We will remain united. They want to divide our society and we will not allow this to happen. Don't worry." I mean, this is a common man who is injured and within two hours says. Should we not take a clue from him? I must say and I would like to thank the media profusely this time they projected the issue in such a fashion that it helped to maintain peace and amity and tranquillity in Mumbai. If they had not helped, probably things could not have been that easy. I am grateful to them. But, one of the aspects which has to be borne in mind is, are we ourselves responsible for generating the terror and fear psychosis in the society giving a disproportionate exposure to some of the things which are happening in some parts of the country and taking them to all parts of the country and saying that this is happening in your neighbourhood? Something happening in Assam, the man in Kerala, sitting there, feels it is happening in his neighbourhood. I am not blaming. Please don't think that I am blaming. I can't blame anybody and especially the media people cannot be blamed. We can blame

6.00 P.M.

anybody but not the media people because they have the final word and we don't have the facility to counter what they say. So, we just keep quiet. I am not blaming. I am just expressing the concern I feel. If it is disproportionately projected, everybody sitting in his house feels that this terrorist activity is happening just in his neighbourhood, next door to him and a scare is generated. Who is going to extinguish that fire of fear in his mind if this happens because of the wrong publicity or excess publicity or the publicity disproportionately given? That has to be looked into. And we are just appealing that in this we are all parties to a cause and I have no doubt that the patriotic fervour in media is also bound to help. If not in ordinary times, in times of need, they have risen to the height and they are bound to help us. But this is an aspect which has to be borne in mind.

Sir, having said this much about augmenting the forces and all those things, I come to another important issue which is very rightly pointed out by hon. Members. The Union Government has its intelligence agencies at the national level which collect and share the information with the States. However, the machinery at the State level for this purpose is not very strong and effective. It has, therefore, become necessary to strengthen it at the local district and at the State levels. The people can help a great deal in this. The State Governments are asked to pay more attention to this aspect and obtain 'actionable intelligence' on a larger scale. Without strengthening the capability of the State in this respect, taking effective action against the terrorists is not going to be easy. This realisation is conveyed very emphatically to the Governments which are asked to use modern technologies and more manpower for this purpose. I am not complaining even against the State Governments, because their areas of duties have increased. The number of laws we are passing in Parliament and in the States is increasing, providing penal actions to be taken against the culprits. The law and order maintaining machinery is not equal to the demand which is made on them, and the manpower with them, as I have already said, is also not sufficient. In the past, the intelligence used to be collected by the Kotwal in the village. He was not a Police Officer; but the Kotwal had the duty to collect the information and give it to the Police at the Police Station. The Police was also asked to do that duty,

but the Police also is not finding it possible to do it. The special agencies with the State Governments are also not in a position to collect the necessary information. So, when the broad outline of things which are going to happen are known to them, the 'actionable information' is not available. And this 'actionable information' cannot be given by the agencies like the Director of the Intelligence of the Defence Ministry or the RAW or the IB. It has to be collected by the State Governments through their agencies. We are requesting them to use more manpower, to use modem technologies, to use modern gadgets in order to collect the information. Collecting the information is not going to be sufficient. That has to be collated, analysed, and acted upon in time. In my opinion, the most sophisticated weapons that the States have, even the most advanced States have, will not be an answer to the activities of the terrorists. Only useful reply to this menace is collecting 'actionable intelligence' in time and acting on it. I think one of the hon. Members made this point very emphatically and correctly, and I am hundred per cent with him on this point.

The third thing, which has been pointed out by the Members, is that our system should change. The hon. Member was saying that, "Look, you are looking at the incidents and you are looking at some small things which come before us. But have you paid attention in a holistic manner to the system that is being followed by the Government of India and the State Governments?" I do think that this is a very, very relevant point. I don't remember who made this point. But one of the Members made this point. Maybe the lady Member made this point. And this is a very, very relevant point. It is necessary for us to look at this problem in a holistic manner. Only then it will be possible for us to deal with this problem—and we are at it. We are looking at strengthening the Police machinery. We are looking at strengthening the intelligence collecting apparatus of the Government of India and the State Governments at the district level, and at the local levels also. We are looking at the problems faced by the forces in communicating with each other, in transport facilities which are given to them, and in the area of morale-building. We are thinking of insuring all the policemen in the country so that if something happens to them, they should be given the help and the compensation. We are also thinking in terms of bringing about the cooperation among the States. Many times now, it is discussed, it is

said that where is the machinery for cooperation and coordination between the States and the Government. I would like to say that the Constitution itself provides for that kind of machinery—the three Lists given in Constitution give a framework within which the cooperation between the Union Government and the State Governments becomes possible. The second is, we have created NIC where the State Chief Ministers and other leaders sit together and bring about the coordination. Then, there is a system of regional councils—Eastern Council, Western Council, Southern Council and all council. There, they sit and decide the things. Then, there is a Committee headed by the Home Minister of India and attended by the Chief Ministers of the States who occasionally meet. There is a Committee which is headed by the Home Secretary and attended by the Chief Secretaries of the States. Then, there is another Committee which is headed by the Special Secretary (Internal Security) which is attended by the DIGs and other officers, and through these organisations, we bring about the coordination. Wherever the military, the paramilitary forces and the State police are functioning, we have created a system which is called the Unified Command System which is chaired by the Chief Minister of that State and that system is also bringing about the coordination between the Army, the paramilitary forces and the State police.

Sir, I would like to say that as far as the Government of India and the State Governments are concerned, one of the most important things which can influence the entire system in the country is being done, is this. In Government of India, we have been discussing that economic development is important, the defence of the country is important; in the same manner internal security is also important. We are spending enough funds on economic development and on the defence in the country, but, probably, in the last so many years, it has not been possible for us to pay enough attention to matters relating to the internal security and it has become necessary to pay more attention to these aspects and provide more funds in the Budgets. I have been talking to the Chief Ministers and asking them to provide more funds in the State budgets. Fortunately, for us, the mover of this discussion, Mr. Manohar Joshi, knows it personally that as a Government, we have not been paying probably as much attention as we should have paid to the matters relating to internal security. Defence, yes; economic development, yes; but, internal security

needs more attention and this attitude is developing and it is going to help us.

It is also suggested that there should be a federal crime and the federal force. Well, this is a very, very tricky issue and I would not like to say anything more than this that this issue has been discussed by many Governments and it has not been possible for them to evolve a consensus as to what should be done in this matter. But, if it is done, it can help; but if it is not done, we will be able to manage, maybe not as efficiently as we could have done with this kind of system. And yet, the consensus on this point is more important than just having this system provided by amending the Constitution and things like that. Without the consensus developed between the States and the Union Government, doing something in this respect is going to be very difficult and we may not be able to achieve much. Sir, one of the things which is asked—and Murli Manohar Joshiji made a reference to it—is what is likely to happen in the future. This is really something which is bothering the people who are paying attention to this aspect. There was a time when the terrorist activities were carried on with the knives, axes, swords and spears. Then, they started using guns and pistols, and later on, they started using AK-47 and sophisticated small weapons. They are using the grenades, the land mines, the missiles and things like that. We have instances, in some parts of the world, which have come to our notice in which the chemical agents and the biological agents were used. And they were talking of the dirty bomb and the radiological weapons! And if this is escalated to that level, managing terrorism not only in India but throughout the world is going to be very, very challenging, and if we do not prepare ourselves to meet these kinds of challenges, to cope up with these kinds of problems before the time arises, it would be very difficult to do anything on that point. Unfortunately, when we pay attention to small things, we do miss these kinds of very important issues which are likely to come before us not immediately but after some time, and when that time arises, and if we are not ready, then it will be very, very difficult to cope up with them. We are looking at these problems also, and we hope that we would be able to manage this thing.

Sometimes, we are asked what is being done to bring about cooperation between the countries in the world. For the information of

this hon. House, I would like to say that we have created 24 Joint Working Groups with 24 countries in the world. These Joint Working Groups are talking to each other as to how the terrorist activities can be controlled. We have entered into agreements for mutual, legal assistance. We have entered into treaties with 19 countries in the world, and those 19 countries are helping us. We have entered into agreements for extradition with 28 countries in the world. With Pakistan, Nepal, Myanmar and Bangladesh, we have the Home Secretaries-level Committees talking to each other once in a year. These are the things which we are doing. We are talking with the international organisation, the United Nations and other countries also to being about coordination, and in the international conferences what we are projecting is this. We are appealing to the people in the world to agree on certain things. On of the things on which we have made an appeal is, not to provide safe haven facilities to the terrorists. If any terrorist is going from one country to another, the other country should not provide safe haven facilities to him. The second thing which we are saying is, "Don't allow the free flow of funds from one country to another where the terrorists are likely to use or are going to use that kind of funds. And the third thing which we are saying is that if you have the intelligence, share this intelligence with all concerned countries so that the terrorist activities can be controlled.

And the fourth thing on which there is no agreement between the countries of the world is this. We have been saying that the terrorism has become very terrific today because of the availability of small sophisticated weapons to the terrorists, which are easily available to non-licenceholders also in bulk and at the prices which are affordable to them in many countries. If this is stopped, the terrorism will be controlled to a great extent. But on this, the countries of the world are saying, 'this is an economic issue; we can't help in it; this principle is not applied in our country, and all those things. And yet, we are trying to make this point.

SHRI MANOHAR JOSHI: Sir, the hon. Minister has given his speech for such a long time. But the reply is not on the points that we have raised. The debate was raised by me in order to get solace to the Mumbaikars particularly. After the incidents, the people are really in fear, and they were expecting that there would be an assurance from the

hon. Minister on safety and security of the people of Mumbai. Unfortunately, he is not coming forth on that issue. Another issue which is being discussed and raised is the Prime Minister's statement that about four months ago the Government of Maharashtra was informed about it. The anxiety in our mind is: How was it informed by the Prime Minister and what was the action taken by the State Government? Sir, it is very unfortunate that these important issues are not being replied to and some theoretical reply is going on in the House for a long time. (*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He has not concluded. He may come to that. (*Interruptions*)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: सर, सवा घंटा तो हो गया।

श्री मनोहर जोशी: सवा घंटा हो गया और जो मेन मुद्दा है, उसका उत्तर ही नहीं आता है। ...(व्यवधान)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He is talking about strengthening of the security system. (*Interruptions*)...

SHRI MANOHAR JOSHI: I requested him. (*Interruptions*)... If the hon. Minister remembers, I told him, "don't worry; go honestly to the points". (*Interruptions*)... He is raising a question that...(*Interruptions*)...

SHRI V. NARAYANASAMY: They don't want to listen to the hon. Home Minister... (*Interruptions*)...

SHRI MANOHAR JOSHI: I told him about the appeasement also. (*Interruptions*)...

SHRI ARUN JAITLEY (Gujarat): Sir, if you ask us, we will sit down. But for the last one-and-a-half hours we have been told every thing except on what happened in Mumbai. (*Interruptions*)...

SHRI MANOHAR JOSHI: He is not talking about Mumbai City at all. (*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: He wants to talk about the security system. (*Interruptions*)...

SHRI MANOHAR JOSHI: I am not interested in listening to theoretical speeches. (*Interruptions*)...

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: I though that my colleague and friend is not only thinking of Mumbai—certainly Mumbai is at the core of his heart—but also the terrorist activities in the country. ...(*Interruptions*)...

SHRI MANOHAR JOSHI: But the city is Mumbai. (*Interruptions*)... I expected that he would say it. (*Interruptions*)...

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: I will try to satisfy him also. (*Interruptions*)... Having said this much, I will come to the Mumbai problems which I thought I had explained in the written statement given to the House and, probably, he had read it and it was unnecessary for me to recount them. I would like to inform this House that the Government of Maharashtra has given a compensation of Rs.1 lakh to the family members of the persons who had died. (*Interruptions*)... They have also said that medical treatment shall be given free of cost to all those people who are injured. (*Interruptions*)...

श्री मनोहर जोशी: सर, प्रश्न क्या था और उत्तर क्या आता है? ...(व्यवधान)... He should have read the discussion in the House. (*Interruptions*)...

श्री उपसभापति: मंत्री जी को कनक्ल्यूड करने दो, I will alow you clarifications.

DR. MURLI MANOHAR JOSHI: Sir, he has asked a simple question. The simple question is that the Government of Maharashtra was informed. ...(*Interruptions*)... about the possibility of ..(*Interruptions*)... terrorist activities. ..(*Interruptions*)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: मरने के बाद एक लाख दे दिया, लेकिन जानकारी मिलने के बाद क्या किया? मुंबई बम ब्लास्ट रोकने के लिए क्या किया? मरने के बाद तो एक लाख दे दिया, वह तो सुन लिया हमने। ...(व्यवधान)...

SHRI MANOHAR JOSHI: He is not giving the list of the accused persons. ..(*Interruptions*)... He is avoiding to reply to the questions because he is not able to reply. ..(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The hon. Minister has not yet concluded. After that I will allow you clarifications. ..(*Interruptions*)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: सर, जानकारी नहीं आ रही है। हम वाक आउट करते हैं।

[At this stage some hon. Members left the Chamber.]

SHRI MANOHAR JOSHI: We don't want to listen to the Minister. We are walking out in protest. ...(*Interruptions*)...

[At this stage some hon. Members left the Chamber.]

SHRI V. NARAYANASAMY: If you want to walk out, you walk out. ..(*Interruptions*)...

मौलाना ओबैदुल्ला खान आज़मी: यह पहले ही बता दिया होता कि भागना है, सुनना नहीं है। ...(**व्यवधान**)... आपको मुम्बई बम ब्लास्ट के बारे में कोई परवाह नहीं है। आप अपनी सियासत करते रहिए। हमारी गवर्नमेंट मुंबई बम ब्लास्ट के बारे में जानकारी कर इंतजाम करेगी। आप तो बम के नाम पर सियासत करके भाग रहे हैं।

†[**مولانا عبیداللہ خان اعظمی** : یہ پہلے ہی بتا دیا ہوتا کہ بھاگنا ہے۔ سننا نہیں ہے ۔۔۔مداخلت۔۔۔ آپ کو ممبئی بم بلاسٹ کے بارے میں کوئی پرواہ نہیں ہے۔ آپ اپنی سیاست کرتے رہئے، ہماری گورنمنٹ بم بلاسٹ کے بارے میں جانکاری کر انتظام کرے گی۔ آپ تو بم کے نام پر سیاست کرکے بھاگ رہے ہیں۔]

श्री शिवराज वी॰ पाटिल: श्रीमन्, मैं बोलना चाह रहा था। ...(**व्यवधान**)... सर, मैं यह कहना चाह रहा था कि मुंबई के लोगों के लिए महाराष्ट्र सरकार ने इतना किया है । रेलवे मिनिस्टर साहब मेरे साथ थे। जब हम वहां पर पहुंचे, तो रेलवे मिनिस्टर सहब से यह कहा गया कि पांच लाख रुपए हर फैमिली को दिए जाएंगे, जिस फैमिली के एक आदमी की मौत हुई है। एक आदमी के लिए पांच लाख रुपए और मैं यह भी यहां पर कहना चाहता हूं कि दूसरे सदन में पूर्व रेलवे मंत्री जी ने एक सवाल उठाया था कि यह पांच लाख रुपया एक्सग्रेशिया है या जो नियम के मुताबिक देते हैं उसके अनुसार है? तो रेलवे मिनिस्टर साहब ने उसका भी उत्तर दिया और जहां तक मेरी अंडरस्टैंडिंग है, वे जो लोग हैं उन्हें पांच लाख रुपए से बहुत ज्यादा मिलने वाले हैं, क्योंकि एक एक्स-ग्रेशिया है और दूसरा भी उनको मिलने वाला है। इस तरह काफी रकम उनको मिलने वाली है। एग्लेक्ट जो है, वह ज्यादा अच्छे तरीके से बता सकते हैं। मेरा इम्प्रेशन यह था कि जब उन्होंने बताया, तो करीब-करीब दस लाख रुपए एक-एक आदमी के लिए वह रकम जा रही थी। यहां से हमारे साथी अब उठ कर चले गए हैं, क्यों गुस्से में आए, पता नहीं है, जबकि शायद उनके लिए यह डिबेट आज तक एडजोर्न किया गया।

†[ ] Transliteration in Urdu Script.

उन्होंने सब कुछ सुना और मैं यह समझता हूं कि मेरे कहने का असर उनके मन पर अच्छा हुआ है। उनको कोई प्रश्न पूछने नहीं थे, इसलिए चले गए हैं। मगर उन्होंने एक बात कही थी, एक बात पूछी थी, उनकी गैर-हाजरी में भी मैं यह बात बताना चाहता हूं कि उन्होंने एक बात पूछी थी कि एक घर के आदमी की इस हादसे में मौत हो गई और यदि वह सरकारी नौकर है तो उसको कानून के मुताबिक, रूल्स के मुताबिक, उस घर से निकाल दिया जाएगा। ऐसे में वे बेचारे कहां जाएंगे? रूल्स तो हैं कि अगर वह आदमी, सरकारी नौकर नहीं है तो उसको घर से निकालना पड़ेगा, मगर मैं सदन में यह बताना चाहता हूं कि हम स्टेट गवर्नमेंट को इसके लिए रिक्वेस्ट करेंगे और उन लोगों की फैमिलीज को, जिनको घर में इस प्रकार का हादसा हुआ है, जितनी भी सुविधा इसके लिए दी जा सकती है, वह उन्हें देने का प्रयास करे। इस दुखद घटना में उनको घर से निकालने का कोई सवाल पैदा नहीं होगा, ऐसा मुझे लगता है और इसके लिए जो करना जरूरी है, वह हम जरूर करेंगे।

श्री उदय प्रताप सिंह (उत्तर प्रदेश): अगर उस परिवार के किसी एक आदमी को नौकरी दे दी जाए तो दोनों समस्याएं हल हो जाएंगी।

श्री शिवराज वी॰ पाटिल: यह भी ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: यह अनाउंस किया है उन्होंने।

श्री शिवराज वी॰ पाटिल: यह भी रेल मंत्री साहब ने कह दिया था कि उसी दिन कहा था कि जिस घर का कोई आदमी नौकरी पर लगाया जा सकता है, उसे हम नौकरी देंगे। अगर उसे स्टॉल दिया जा सकता है तो स्टॉल देंगे-बुक स्टॉल या टी स्टाल या और कोई मदद देनी होगी तो वह भी देंगे। उसके बाद जो नौकरी है, वह भी देंगे और जो भी, जिस प्रकार की भी मदद दे सकते हैं, वह देंगे। मैं यहां पर कह रहा हूं, केन्द्र सरकार की ओर से कि स्टेट गवर्नमेंट को हम रिक्वेस्ट कर सकते हैं, रेलवे मंत्री को भी हम रिक्वेस्ट कर सकते हैं, रेल मंत्री और हम सब मिलकर उसमें मदद करेंगे। मदद करने का उनका नजरिया बहुत अच्छा रहा है। जो भी उनको मदद की जरूरत है, इस हादसे में जिन लोगों का नुकसान हुआ है, उन लोगों को जरूर हम मदद करेंगे।

मुम्बई के लिए, मुम्बई की सुरक्षा बढ़ाने के लिए क्या करने की जरूरत है, इस बारे में चर्चा मुम्बई के साथियों ने यहां पर की। मैंने पहले भी कहा और अब हिंदी में भी कहना चाहता हूं कि जो भी प्लान वे बनाकर हमको देंगे, उसको हम बहुत ही बारिकी से देखेंगे और उसके ऊपर अमल करने की कोशिश करेंगे, पैसा भी देने की कोशिश करेंगे, जितना हो सकेगा, उतना और वह प्लान दूसरी जगह पर भी इस्तेमाल करने के लिए प्रयत्न करेंगे।

मैं समझता हूं कि हम जब ऐसी घटनाओं पर चर्चा करते हैं तो एक मुश्किल यह होती है कि जो घटना हुई है या जिन्होंने की है, उनके खिलाफ बोलने की बजाय, हम एक दूसरे के खिलाफ बोलना शुरू कर देते हैं। हम अगर यहां बैठे हैं तो उनको कहेंगे कि तुम्हारे जमाने में क्या हुआ और वे कहेंगे तो तुम वहां पर बैठे हुए हो, तो तुम क्या कह रहे हो और जिन्होंने यह किया है, वे बिल्कुल प्रोटेक्ट रह जाते हैं। यह ऐसे है जैसे कि दर्द हो रहा हो हाथ को, लेकिन दवा लगाई रही है पैर को और माना यह जा रहा हो कि दुख खत्म हो जाएगा। दुख ऐसे खत्म नहीं होगा। हमारे उधर के साथ उठकर चले गए, वे बाद में आए तो उनके लिए बात करूंगा, मगर आपका बहुत-बहुत शुक्रिया कि आपने करीब-करीब सवा घंटे तक इस चर्चा का जवाब सुना।

श्री अबू आसिम आजमी: मैं बड़ी विनम्रता के साथ आपसे कहना चाहता हूं कि जो लोग मर गए हैं, सरकार उनको कम्पन्सेशन दे रही है या उनकी सिक्यूरिटी का इंतजाम कर रही है, परन्तु उसके बाद जो मुम्बई में हो रहा है कि रात के 2:00 बजे लोगों को उठाकर ले जाना और दिन भर रखना, मेरा सुझाव आपसे यह है कि क्या आप ऐसा नहीं कर सकते कि आप उन्हें निर्देश दें कि सुबह-सवेरे आप इन्हें ले जाइए, दिनभर इंक्वायरी कीजिए और यदि लगता है कि उनका इन्वॉल्वमेंट है तो जो चाहे कीजिए, परन्तु यह जो रात को उठाना है, यह बंद होना चाहिए।

दूसरा मेरा कहना है कि पुलिस लोगों को बुलाकर जबर्दस्ती इसके नाम पर पैसे वसूल रही है कि तुम्हारा नाम डाल देंगे, तुमको उठा लेंगे और इस तरह एक बड़ी रकम लोगों को डरा-धमकाकर मुम्बई में वसूली जा रही है। वकीलों को धमकी दे दी गई है। अब यदि कोई इनोसैंट आदमी पकड़ लिया जाए और वकील उसकी पैरवी न करे तो वह व्यक्ति क्या करेगा? यह कैसे चलेगा? मैं जानना चाहता हूं कि इसके लिए सरकार क्या करेगी?

एक और बहुत जरूरी चीज के बारे में मैं बोलना चाहता हूं कि एक गरीब आदमी, जिसके पास खाने के लिए दो वक्त की रोटी नहीं है, उसको यदि इतने सीरियस केस में जबर्दस्ती पकड़ लिया जाता है और वह तीन-तीन साल तक जेल मे रहकर किसी तरह से मुकदमा करके छूट जाता है, तो क्या उन पुलिसवालों के खिलाफ सरकार कुछ नहीं करेगी, जो जान-बूझकर ऐसे इनोसैंट लोगों को फंसा रहे हैं? अगर यह सरकार कहे कि आप उनके ऊपर मुकदमा करो, तो उसमें पैसे बहुत लगते हैं, वह गरीब आदमी कहां से लायेगा? इसलिए सरकार कोई ऐसी आटोमैटिक व्यवस्था करे कि अगर ऐसे किसी मुकदमे में कोई गरीब आदमी पकड़ा जाता है और तीन-तीन साल तक जेल में रहता है, उसके खिलाफ कुछ भी नहीं मिलता है और वह छूट जाता है, तो फिर उन पुलिसवालों के खिलाफ सरकार को कुछ न कुछ कार्रवाई करनी चाहिए। सर, आखिर में मुझे एक चीज और कहनी है कि राठौर नाम का एक लड़का, जो लोगों को बचाते हुए मरा, रेल मंत्री जी से कह कर उसके लिए भी आप कोई मुआवजा दिलवाइए, क्योंकि वह सिर्फ उन्हीं लोगों को

बचाने में, गैस एवं अन्य चीजों का असर होने से उसकी मृत्यु हुई है। गृह मंत्री जी से यही चंद चीजों में जानना चाहता हूं।

† [شری ابوعاصم اعظمی : میں بڑی ونمرتا کے ساتھ آپ سے کہنا چاہتا ہوں کہ جو لوگ مر گئے ہیں، سرکار ان کو کمپنسیشن دے رہی ہے یا ان کی سکیورٹی کا انتظام کر رہی ہے، لیکن اس کے بعد جو ممبئی میں ہو رہا ہے کہ رات کے دو بجے لوگوں کو اٹھا کر لے جانا اور دن بھر رکھنا، میرا سجھاؤ آپ سے یہ ہے کہ کیا آپ ایسا نہیں کر سکتے کہ آپ انہیں نردیش دیں کہ صبح سویرے آپ انہیں لے جائیے، دن بھر انکوائری کیجئے اور اگر لگتا ہے کہ ان کا انوالمنٹ ہے تو جو چاہے کیجئے، لیکن یہ جو رات کو اٹھانا ہے، یہ بند ہونا چاہئے۔

دوسرا میرا کہنا ہے کہ پولیس لوگوں کو بلا کر زبردستی اس کے نام پر پیسے وصول کر رہی ہے کہ تمہارا نام ڈال دیں گے، تم کو اٹھا لیں گے اور اس طرح ایک بڑی رقم لوگوں کو ڈرا دھمکا کر ممبئی میں وصولی جا رہی ہے۔ وکیلوں کو دھمکی دے دی گئی ہے۔ اب اگر کوئی انوسینٹ آدمی پکڑ لیا جائے اور وکیل اس کی پیروی نہ کرے تو وہ شخص کیا کریگا؟ یہ کیسے چلے گا؟ میں جاننا چاہتا ہوں کہ اس کے لئے سرکار کیا کریگی۔

ایک اور بہت ضروری چیز کے بارے میں میں بولنا چاہتا ہوں کہ ایک غریب آدمی، جس کے پاس کھانے کے لئے دو وقت کی روٹی نہیں ہے، اس کو اگر اتنے سنجیدہ کیس میں زبردست پکڑ لیا جاتا ہے اور وہ تین تین سال تک جیل میں رہ کر کسی طرح سے مقدمہ کر کے چھوٹ جاتا ہے، تو کیا ان پولیس والوں کے خلاف سرکار کچھ نہیں کریگی جو جان بوجھکر ایسے انوسینٹ لوگوں کو پھنسا رہے ہیں؟ اگر یہ سرکار کہے کہ آپ ان کے اوپر مقدمہ کرو، تو اس میں پیسے بہت لگتے ہیں، وہ غریب آدمی کہاں سے لائے گا؟ اسلئے سرکار کوئی ایسی آٹومیٹک ویوستھا کرے کہ اگر ایسے کسی مقدمے میں کوئی غریب آدمی پکڑا جاتا ہے اور تین تین سال تک جیل میں رہتا ہے، اس کے خلاف کچھ بھی نہیں ملتا ہے اور وہ چھوٹ جاتا ہے تو پھر ان پولیس والوں کے خلاف سرکار کو کچھ نہ کچھ کارروائی کرنی چاہئے۔

سر، آخر میں مجھے ایک چیز اور کہنی ہے کہ راٹھور نام کا ایک لڑکا، جو لوگوں کو بچاتے ہوئے مرا، ریل منتری جی سے کہہ کر اس کے لئے بھی آپ کوئی معاوضہ دلوائیے، کیوں کہ وہ صرف انہیں لوگوں کو بچانے میں، گیس اور دوسری چیزوں کا اثر ہونے سے اس کی موت واقع ہوئی ہے۔ گرہ منتری جی سے یہی چند چیزیں میں جاننا چاہتا ہوں۔]

† [ ] Transliteration in Urdu Script.

SHRI DINESH TRIVEDI: Sir, he mentioned about America being a great country. Great countries and great leaders are not made. Sir, today I am reminded of Shrimati Indira Gandhi; she was one of the great leaders of the country, not only of India but also of the world. Please don't take it personally. If she had been here today, she would have sent a strong message to the world at large. I saw the National Security Adviser on television yesterday. He looked concerned; he looked serious; and he looked sincere. He said, "This is a tip of the iceberg." We are talking about the statements of the hon. Prime Minister of India. He is not a *Mamuli Aadmi.* He says that it is from across the border.

Then, you mentioned about Nirmalaji's speech many times; I also liked her speech. But the Prime Minister of India goes and says, "America is asking for proof". When America's 9/11 happened, the world never asked for any proof. The National Security Adviser, yesterday, on television says that we have more proofs of these incidents from across the border than America ever had for Osama Bin Laden. Sir, please give a strong message. Dialogue is very good. We are with the dialogue. If that was not true, then, why have you stopped the dialogue? Lastly, Sir, I talked about the criminalisation issue as well.

मौलाना ओबैदुल्लाह खान आज़मी: सर, मुझे सिर्फ एक ही बात पूछनी है और मैंने अपनी बात में पहले भी वजीरे दाखिला का ध्यान इस तरफ दिलवाया था कि जब ऐसे मौके पर गिरफ्तारियां होती हैं, तो बेशुमार होती हैं। जहां-जहां भी शक की सुई जाती है, वहां-वहां से लोगों को गिरफ्तार कर लिया जाता है और गिरफ्तार करना भी चाहिए ताकि पता चल सके कि अस्ल मुजरिम कौन है। मगर जरूरी नहीं है कि जितने लोग गिरफ्तार किए जाते हैं, वे सारे के सारे लोग मुजरिम हों। अगर बेपनाह लोगों को मुल्जिम की हैसियत से गिरफ्तार किया जाता है, जब तक उनका जुर्म अदालत में साबित नहीं हो जाता, तब तक उनके ऊपर मुजरिम होने का लांछन नहीं लगाया जा सकता।

सर, यह बड़ी गंभीर बात है, जो खबर सुनने को आई है, जैसा कि अबू आसिम आजमी साहब भी कह रहे थे कि वकीलों ने अपनी एसोसिएशन में इस बात को तय कर दिया है कि किसी भी आदमी का मुकदमा नहीं लिया जाएगा। सर, इस जम्हूरी मुल्क में दस्तूरे हिंद लोगों को अपनी सफाई देने के लिए पूरा-पूरा हक देता है और इसके खिलाफ जो लोग इस तरह के फैसले ले रहे हैं, क्या यह मुल्क के दस्तूर की रूह को तोड़-मरोड़ नहीं रहे हैं? क्या इस सिलसिले में हुकूमत अपना कोई साफ दृष्टिकोण देगी कि जिनके ऊपर कसूरवार होने के

अल्जामात लग रहे हैं और वे कसूरवार नहीं हैं, ऐसे लोग अदालतों में जाकर अपना बेकसूर होना भी साबित करें।

†[مولانا عبیداللہ خان اعظمی : سر، مجھے صرف ایک ہی بات پوچھنی ہے اور میں نے اپنی بات میں پہلے بھی وزیر داخلہ کا دھیان اس طرف دلوایا تھا کہ جب ایسے موقع پر گرفتاریاں ہوتی ہیں، تو بے شمار ہوتی ہیں۔ جہاں جہاں بھی شک کی سوئی جاتی ہے، وہاں وہاں سے لوگوں کو گرفتار کرلیا جاتا ہے اور گرفتار کرنا بھی چاہیئے تاکہ پتہ چل سکے کہ اصل مجرم کون ہے۔ مگر ضروری نہیں ہے کہ جتنے لوگ گرفتار کئے جاتے ہیں، وہ سارے کے سارے لوگ مجرم ہوں۔ اگر بے پناہ لوگوں کو ملزم کی حیثیت سے گرفتار کیا جاتا ہے، جب تک ان کا جرم عدالت میں ثابت نہیں ہوجاتا، تب تک ان کے اوپر مجرم ہونے کا لانچھن نہیں لگایا جاسکتا۔

سر، یہ بڑی گمبھیر بات ہے، جو خبر سننے کو آئی ہے، جیسا کہ ابوعاصم اعظمی صاحب بھی کہہ رہے تھے کہ وکلاء نے اپنی ایسوسی ایشن میں اس بات کو طے کردیا ہے کہ کسی بھی آدمی کا مقدمہ نہیں لیا جائے گا۔ سر، اس جمہوری ملک میں دستور ہند میں لوگوں کو اپنی صفائی دینے کے لئے پورا پورا حق دیتا ہے اور اس کے خلاف جو لوگ اس طرح کے فیصلے لے رہے ہیں، کیا اس ملک کے دستور کی روح کو توڑ مروڑ نہیں رہے ہیں؟ کیا اس سلسلے میں حکومت اپنا کوئی صاف درشٹی کون دیگی کہ جن کے اوپر قصوروار ہونے کے الزامات لگ رہے ہیں اور وہ قصوروار نہیں ہیں، ایسے لوگ عدالتوں میں جاکر اپنا بے قصور ہونا بھی ثابت کریں۔]†

श्री अमर सिंह (उत्तर प्रदेश): मैं आदरणीय गृह मंत्री जी से एक बहुत ही छोटा-सा प्रश्न करना चाहता हूं। आजकल हमारे देश में एक बड़ा महत्वपूर्ण प्रकरण चल रहा है, माननीय सदस्य ने एक बड़ा महत्वपूर्ण प्रश्न उठाया है कि इस दहशतगर्दी के विरूद्ध हमसे विश्व में प्रमाण मांगा जा रहा है। इसके पहले भी जब जम्मू-कश्मीर मे विधान-सभा पर हमला हुआ था,

†[ ] Transliteration in Urdu Script.

तब अमरीका से एक आवाज आई थी। लोकशाही के मंदिर पर हमला हुआ था, जम्मू-कश्मीर कर असैम्बली पर हमला हुआ था और इसे केवल "Attack on Government facilities" कहा गया था। वहां कोई असैम्ब्ली का नाम लेने के लिए तैयार नहीं हुआ था। कब तक हम अमरीकी सर्टिफिकेट की चिंता करेंगे कि अमरीका बताएगा? कब तक हम उनके कहने से सबूत की तलाश करेंगे और उसके बाद ही हम तय करेंगे कि हमें प्रोएक्टिव होना है और कड़ी कार्यवाही करनी है? कब तक हम अमरीका के पीछे और उसके सर्टिफिकेट की पीछे घूमते रहेंगे? हर मामले में, चाहे वह न्यूक्लियर का मामला हो, चाहे वह हमारी आंतरिक सुरक्षा का मामला हो, मैं जानना चाहता हूं कि जब वहां पर बिल्डिंगें गिरती हैं, तो अमरीका कार्यवाही करता है, लेबनान के ऊपर हमला होता है, ईराक, ईरान और अफगानिस्तान के ऊपर अमरीका जब चाहता है, हमला कर देता है और अमरीकी आपका यहां पर इस धरती पर आते हैं और हमसे कहते हैं कि पहले आप सबूत लाइए, उसके बाद हम कुछ करेंगे। हम इस स्थिति से निपटने के लिए कब तक सक्षम होंगे?

श्री उदय प्रताप सिंह: धन्यवाद सर, मैं बहुत छोटा सा सवाल करूंगा जिसकी तरफ इशारा आदरणीय निर्मला जी ने किया था कि पाकिस्तान से जो बातचीत हो रही थी वह इससे कुप्रभावित हुई है। यह जो टेरोरिस्ट थे इनका मकसद ही यही था कि किसी तरह हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के संबंध खराब हों, यह भी एक मकसद हो सकता था। तो उस बात पर भी गहराई से विचार किया जाना चाहिए। अगर वाकई उनका मकसद यह था तो वह बातचीत बंद नहीं होनी चाहिए तथा उसे शुरू करना चाहिए। क्योंकि दुनिया के प्रगति के रास्ते पर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों आगे बढ़े इस बात को कई लोग पसंद नहीं करते हैं। सर, हिन्दुस्तान को कोई ऐसा मुस्लिम परिवार नहीं कि जिसका एक भाई या उसका एक रिश्तेदार पाकिस्तान में न हो। इसलिए दोनों तरफ के लोग यह चाहते हैं कि बातचीत जारी रहे। लेकिन टेरोरिस्ट इस बात को दबाने के लिए भी यह घटना कर सकते थे, इसको नजर में रखा जाए। यही मैं निवेदन करना चाहता हूं।

श्री शिवराज पी॰ पाटिल: श्रीमन्, मैं सबसे आखिर सवाल से शुरूआत करूंगा। माननीय सदस्य ने जो कहा है बिल्कुल सही बात है और यही नजरिया सरकार का भी है। मगर जब कोई ऐसा बड़ा हादसा होता है तो लोगों के मन में दुख होता है, दर्द होता है, गुस्सा भी होता है। इसका मतलब जिस काम के लिए यह कर रहे हैं इसको कोई भूला है ऐसा नहीं है। यह जो दहशतवादी हैं वे यही चाहते हैं कि बातचीत न हो, माहौल अच्छा न हो और हर अलग-अलग जमात के लोगों के बीच झगड़ा हो जाए और यहां की बात बिगड़ती जाए। इसको हम जरूर ध्यान में रखेंगे और आपकी राय इस बारे में सौ प्रतिशत सही है, दुरूस्त है इसको ध्यान में रखेंगे।

इससे पहले का जो सवाल था, वह यह था कि कुछ लोगों को पकड़ा जा रहा है, उनको क्या करेंगे। मैं यह कहना चाहूंगा, बड़ी नम्रता से कहना चाहूंगा कि हमारी सरकार यह नहीं समझती कि कोई हादसा हुआ है और कोई उसमें पकड़ा गया है तो उसके धर्म के उसकी जाति के लोग सारे के सारे जिम्मेंदार हैं। नहीं मानते हैं, मैं बार-बार कह रहा हूं इस बात को, मगर कोई हादसा हुआ

तों पूछताछ भी नहीं करनी चाहिए, तो यह भी बात गलत हो जाएगी, क्योंकि यहां पर ऐसे भी लोग हैं कि इतना बड़ा हादसा होने के बाद आप पूछताछ भी नहीं कर रहे हैं, ऐसा भी तो कह सकते हैं। आज के जो आंकड़े हैं, हमारे पास हैं कि इसमें कितने लोगों को गिरफ्तार किया, जिसमें 5-7 लोगों को गिरफ्तार किया है और वह भी मुम्बई में रहने वाले लोगों को ही गिरफ्तार नहीं किया है, दूसरी जगह के लोगों को भी गिरफ्तार किया है तथा उनके टेलीफोन कंवर्सेशन को पकड़ कर गिरफ्तार किया है। ऐसा होने के बाद अगर आप पूछेंगे कि हादसा मुम्बई में हुआ तो बिहार में क्यों पकड़ रहे हैं, बिहार में इसलिए पकड़ रहे हैं कि टेलीफोन पर जो मालूमात आए उसे उनकी तार वहां तक पहुंच रही है। इसका भी ...(व्यवधान)...

मौलाना ओबैदुल्लाह खान आजमी: मैं यह कह रहा हूं कि जहां-जहां से चाहिए वहां-वहां से पकड़िए, उनसे पूरी-पूरी तफ्तीश कीजिए और अगर तफ्तीश के बाद कोई बेकसूर साबित होता है तो उनको भी समाज में एक इज्जत मिलनी चाहिए, इसलिए कि हमारा बड़ा अनोखा समाज है। हमें यह महसूस नहीं होना चाहिए कि हमें इस तरह से परेशान किया जा रहा है कि यहां हमारे हक छीने जा रहे हैं।

†[**مولانا عبیداللہ خان اعظمی :** میں یہ کہہ رہا ہوں کہ جہاں جہاں سے چاہیے وہاں وہاں سے پکڑیئے، ان سے پوری پوری تفتیش کیجئے اور اگر تفتیش کے بعد کوئی بےقصور ثابت ہوتا ہے تو ان کو بھی سماج میں ایک عزت ملنی چاہیئے، اس لئے کہ ہمارا بڑا انوکھا سماج ہے۔ ہمیں یہ محسوس نہیں ہونا چاہیئے کہ ہمیں اس طرح سے پریشان کیا جا رہا ہے کہ یہاں ہمارے حق چھینے جا رہے ہیں۔]

शिवराज वी॰ पाटिल: इतना बड़ा हादसा होने के बाद 5-7 लोगों को सिर्फ अरेस्ट करने के बाद भी अगर शिकायत हो रही है और अगर हम उसको कहने लगें कि आप कुछ भी नहीं करो, तो भी अच्छा नहीं रहेगा। और इसलिए जो लोग इसको इस प्रकार से प्रजेंट करते हैं उनको भी देखना पड़ेगा कि हम एक किनारे से दूसरे किनारे ...(व्यवधान)... आप मुझे बोलने भी नहीं दे रहे हैं, मैं बैठ जाता हूं आप पूरी तरह से बोल लीजिए।

श्री उपसभापति: उनको बोलने दीजिए, बोलिए।

शिवराज वी॰ पाटिल: मैं यह कहने जा रहा था कि ऐसा भी नहीं होना चाहिए कि इतना बड़ा हादसा होने के बाद 5-7 लोगों को पकड़ने के बाद यह बहुत हो रहा है, ऐसा बताने से बड़ी मुश्किल हो जाती है। उसमें पुलिस डिमॉरलाइज हो जाएगी, सरकार डिमॉरलाइज हो जाएगी और लोगों को लगेगा कि ऐसा कैसे, कुछ भी नहीं हो रहा है। तो यह भी नहीं होना चाहिए। अगर आप और हम बैठे हैं, अगर मैं बैठा हूं तथा मैं यह कहता हूं तो वे समझेंगे कि हम किसी की तो एक बाजू लेकर कर रहे हैं, यह भी नहीं होना चाहिए। मगर आपकी बात

†[ ] Transliteration in Urdu Script.

बिल्कुल सही है कि अगर इसमें कहीं भी ज्यादती हो रही है तो हम जरूर महाराष्ट्र सरकार को इंस्ट्रक्शन देंगे कि इसके अंदर ज्यादती नहीं होनी चाहिए और अगर कहीं ज्यादती हो गई और लिखित रूप में आपने हमारे सामने रखा, तो कानूनन जो किया जा सकता है, वह किया जाएगा। मगर किसी भी बात को अगर आप इस तरह लेकर उठेंगे तो दोष आप पर भी लगाएंगे, मुझ पर भी लगाएंगे, सरकार पर भी लगाएंगे। इस दूसरे पहलू को भी आपको ध्यान में रखना पड़ेगा। वे कहेंगे कि इतना होने के बाद भी कुछ नहीं होने दिया जा रहा है। वह अच्छा नहीं है, अमन के लिए अच्छा नहीं है, सलूखे के लिए अच्छा नहीं है। उसको आपको ध्यान में रखना बहुत जरूरी है। मैं हमारे सारे भाइयों को, सारे प्रकार के भाइयों को, सारे जमात के भाइयों को यह कहूंगा कि आप हम पर भरोसा कीजिए और यह हम पर छोड़ दीजिए। हम उसमें अपनी संसक्त विवेक बुद्धि जागृत रखेंगे। किसी को तकलीफ न देते हुए, जो भी दोषी है, उसको पकड़ने की पूरी-पूरी कोशिश करेंगे और किसी को भी तकलीफ नहीं होने देंगे। मगर आप एक तरफ से बोलेंगे, दूसरे दूसरी तरफ से बोलेंगे, तीसरे तीसरी तरफ से बोलेंगे तो फोर्स डीमॉरलाइज़ हो जाएगी, सरकार डीमॉरलाइज़ हो जाएगी, लोगों को भी अच्छा नहीं लगेगा। इसलिए आप चुप बैठ जाइए, हम पर भरोसा कीजिए। अगर कोई बात है तो हमें बोलिए। अगर कोई बात है तो जरूर आपकी बात के ऊपर ध्यान दिया जाएगा। मगर मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि यह कहना कि इसमें ज्यादती हुई है–मुझे जो मालूमात हैं, उनके आधार पर तो ऐसा नहीं लगता है। लेकिन आपको अगर ज्यादा मालूमात हैं, ज्यादती के बारे में तो...(व्यवधान)...

श्री अबू आसिम आज़मी: सर...(व्यवधान)...

†[شری ابو عاصم اعظمی : سر، ...مداخلت...]

श्री उपसभापति: आप उन्हें बता दीजिएगा। आप लिखकर दे दीजिएगा।

श्री शिवराज वी॰ पाटिल: मैं जरूर उसको देखूंगा। जो भी है, लिखित रूप में आप दे दीजिए, जो भी उस पर करना है, उसको आपको substantiate करना पड़ेगा...(व्यवधान)...

श्री अबू आसिम आज़मी: मैं यहां बता देता हूं।...(व्यवधान)...

†[شری ابو عاصم اعظمی : میں یہ بتا ہوں ...مداخلت...]

श्री उपसभापति: लिखित रूप से दे दीजिए...(व्यवधान)... बस, बस। अबू आज़मी साहब, यह ठीक नहीं है। ...(व्यवधान)...

श्री अबू आसिम आज़मी: सर, मैं एक मिनट लूंगा...(व्यवधान)...

†[شری ابو عاصم اعظمی : سر، میں ایک منٹ لوں گا ...مداخلت...]

†Transliteration in Urdu Script.

श्री उपसभापतिः उन्होंने एश्योरेंस दिया है कि आप लिखित में दे दो, वे एक्शन लेंगे। ... (**व्यवधान**)...

श्री अबू आसिम आज़मीः सर, मैं हाउस में कह रहा हूं तो अगर का क्या मतलब है? मैं हाउस में बता रहा हूं, ऐसा हुआ है तो सुनना चाहिए ...(**व्यवधान**)... हम आपसे कह रहे हैं कि रात को आदमी उठाकर ले जा रहे हैं। ...(**व्यवधान**)... चार आदमी पकड़े गए लेकिन पांच हजार आदमियों को आप टेरराइज़ कर रहे हैं। ...(**व्यवधान**)...

†[**شری ابو عاصم اعظمی** : سر، میں ہاؤس میں کہہ رہا ہوں تو اگر کا کیا مطلب ہے؟ میں ہاؤس میں بتا رہا ہوں، ایسا ہوا ہے تو سننا چاہئے ---مداخلت--- ہم آپ سے کہہ رہے ہیں کہ رات کو آدمی اٹھا کر لے جا رہے ہیں ---مداخلت--- چار آدمی پکڑے گئے لیکن پانچ ہزار آدمیوں کو آپ ٹیرارائز کر رہے ہیں ---مداخلت---]

श्री शिवराज वी॰ पाटिलः कौन पकड़े गए हैं, किसने पकड़ा है, किस पुलिस थाने से पकड़ा है, उसके मालूमात दे दीजिए ...(**व्यवधान**)...

श्री अबू आसिम आज़मीः सर, मैं आपको लिखकर दे दूंगा।

†[**شری ابو عاصم اعظمی** : سر، میں آپ کو لکھ کر دے دوں گا۔]

श्री अमर सिंहः अगर आप लिख कर दे रहे हैं...(**व्यवधान**)... कौन अधिकारी ले जा रहा है, किस इलाके से ले जा रहा है, आप यह सब लिखकर दीजिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री शिवराज वी॰ पाटिलः आप जो बोल रहे हैं, आप सम्मानीय सदस्य हैं, आपकी बात को हम हल्के ढंग से नहीं ले सकते, नहीं लेंगे लेकिन जो भी कहना है, आप लिखित रूप से कहिए कि किस पुलिस थाने के लोगों ने किया है, किसको किया है, उसको substantiate भी करना पड़ेगा, जो लिख रहा है। आपको मालूमात दे रहा है, उसको substantiate करना पड़ेगा और हम उस पर अमल करेंगे। हम यह होने नहीं देंगे। अगर होने देंगे, तब भी अन्याय करेंगे और तब भी आतंकवाद बढ़ाने का ही काम हो जाएगा। इसको भी हम ध्यान में रखेंगे। लेकिन प्लीज, किसी भी एक किनारे पर उसको मत ले जाइए। जहां तक दूसरे सम्माननीय सदस्य का कहना है, मैं बड़ी नम्रता से आपके ध्यान में लाना चाहता हूं कि प्राइम मिनिस्टर साहब ने यह कहा, प्राइम मिनिस्टर साहब ने वह कहा, अब उन्होंने क्या कहा, कब कहा, किस भाषा में कहा, इसके मालूमात नहीं होते हुए, उनके कैबिनेट का एक मिनिस्टर, उनके किए हुए भाषण को परिभाषित करे, यह बात गलत है।

†[ ] Transliteration in Urdu Script.

SHRI DINESH TRIVEDI: The whole world watched it. (*Interruptions*)

श्री शिवराज वी॰ पाटिल: मैं नहीं करूंगा। ...(व्यवधान)... मैं यह नहीं करूंगा। आपको जो पूछना है, प्राइम मिनिस्टर साहब को पूछिए, वे जवाब देंगे। ...(*Interruptions*)...

SHRI DINESH TRIVEDI: I am sorry, Sir, if you tell me that this is not in the interest of the country, I promise you, I will sit down. I appreciate that. (*Interruptions*) The whole world has heard this what the Prime Minister has said in Mumbai. If you tell me that I do not know what the Prime Minister has said, then, it is a very sad affair that we do not know; the left hand does not know what the right hand is doing, the right hand does not know what the left hand is doing. (*Interruptions*) I am so sorry, Sir, please do not take me otherwise. The message which is going from this august House is that we are not very serious about it. If you are serious, then please, you cannot say that the Prime Minister has not said this. If you do not know about this, kindly find out what the Prime Minister has said. (*Interruptions*)

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: I have understood you. Why do you ask me to comment on the Prime Minister's statement? What is your intention?

SHRI DINESH TRIVEDI: I will tell you why. Because...

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: You want to show that there is a difference between... (*Interruptions*)... By this kind of trap, we are not going to solve this problem.

SHRI DINESH TRIVEDI: No, because, the Prime Minister said... Sir, there are no traps. If it were a political issue, I would have walked out. ...(*Interruptions*)... No, Sir, I must have my say. The hon. Prime Minister said, "It is across the border", and Shri Deshpandeji said, "where is the proof? (*Interruptions*) I would rather believe my Prime Minister than George Bush.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: This is a Short Duration Discussion and you have said what you want to. That is enough. ...(*Interruptions*)...

SHRI DINESH TRIVEDI: This is not fair. Sir, let me complete, (*Interruptions*) Am I to understand that the Prime Minister did not say this? ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, the office of the Prime Minister is not there. You are asking about what he said. ...(*Interruptions*)... If you want to put that question, you put that question to the Prime Minister. ...(*Interruptions*)... I cannot start a new debate on that. ...(*Interruptions*)...

SHRI DINESH TRIVEDI: The hon. Home Minister said, "I am not going to tell about what the Prime Minister said. ...(*Interruptions*)... He is the Prime Minister and not an ordinary person. ...(*Interruptions*)...

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Sir, I have not yet completed. Allow me to reply. ...(*Interruptions*)... My hon. friend, the hon. Member, wants to know what the Prime Minister has said. The Prime Minister is a Member of this House. He is in a position to reply to his question. He is asking a Prime Minister's Minister in the Cabinet that he should comment on what the Prime Minister has said. I do not think that this is a method we can follow. Why should I speak for the Prime Minister? The Prime Minister can speak for himself. But I can tell you that the same question was asked in the other House also that the Home Minister has not said anythihg against the evidence available with the Government with respect to the activities from across the border and I did get up and said that what is being said is not correct; we do have the information about the activities across the border and what the Prime Minister said is correct. But I am not going to say anything more than that. Why did you ask me to comment on his statement? You can get it from him. ...(*Interruptions*)... I cannot reply on what the Prime Minister said. ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The Short Duration Discussion is over. Now we take up the Protection of Human Rights Bill. But before that, after the legislative business is over. ...(*Interruptions*)...

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: I request you to take it up tomorrow.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: We have decided and, in fact, we wanted the MoS. ...(*Interruptions*)...

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Sir, I am not ready. ...(*Interruptions*)... He is in the other House. He is required to vote there on the Office of Profit Bill. ...(*Interruptions*)... I am not ready with this. ...(*Interruptions*)...I am just concentrating on this. ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: We can start the discussion and you can reply later. ...(*Interruptions*)...

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: I have not seen it. ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. Now we take up the Special Mentions.

SPECIAL MENTIONS

Need to provide succour to blind persons

DR. GYAN PRAKASH PILANIA (Rajasthan): Sir, despite the fact that a National Programme for Control of Blindness is under implementation in the country, the visually handicapped persons face all sorts of odds in their day to day life and more so that visually handicapped females. Governments are running Blind Schools and Training Centres to give them vocational training but the number of such schools and training centres is awfully inadequate.

In Government jobs one per cent. vacancies are reserved for visually handicappedpersons but even this small percentage is not fully filled up and there remains backlog of vacancies for one reason or the other, whereas qualified visually handicapped persons are available. Renowned Helen Kellerwas also a handicapped person. As per the National Survey of Blindness, 2001-03, there are estimated to be 1.2 crore visually handicappedor blind persons in the country and the estimated prevalence of blindnessis 0.91 per cent in males and 1.29 per cent in females. For these unfortunately visually handicapped persons darkness has become part of their lives. Most of them lead a life of dependence on others charity or they live as beggars.

In a Welfare State like India, adequate employment opportunities should be provided to these unfortunate brothers and sisters of our society to that theytoo can lead a worthwhile life.

The conscience of the nation should rise to the succour of these hapless people and the Government should ensure that every visually handicapped person who remains unemployed be entitled for unemployment allowance till such time he or she is given employment.

Than you.